का नाम तक नहीं जानते यह बातें मुहम्मद के अनुयायियों की बनावट है। ऐसी अयुक्त बातों को कोई बुद्धिमान् स्वीकार न करेगा। अभी मुहम्मद उत्पन्न नहीं हुआ था कि अबदुल्ला मर गया, आमीना रांड हुई। मक्के शहर में रबीउलअव्वल महीने की आठवीं या दशवीं या बारहवीं तारीख़ आदित्यवार के दिन प्रातःकाल मुहम्मद उत्पन्न हुआ, उसी समय काबे को सिजदा किया। (राय) वाह वाह मुहम्मद साहिब ने उत्पन्न होते ही जिस मन्दिर में उस समय ३६० मूर्त्तियें थीं उसको सिजदा किया। इनसे अधिक बुतपरस्त कौन होगा। जब मुहम्मद ७ दिन का हुआ तब आमिना भी मरगई और किसी तारीख में लिखा है कि मुहम्मद ६ या ७ वर्ष का था तब आमिना मरी। मुहम्मद ने उत्पन्न होकर ७ दिन अपनी मा का दूध पिया इसके उपरान्त सोबिया अबूलहब की बांदी ने दूध पिलाया—दूसरी दाई मुहम्मद की हलीमा है। जब मुहम्मद हलीमा के पास पल कर होशियार हुआ और चलने फिरने लगा तब दो वर्ष से अधिक का था कि एक दिन हलीमा के लड़कों के साथ बकरी चराने के लिये गया। हदीस में लिखा है कि वहां दो फरिश्ते आये। एक के हाथ में चांदी के लोटे में ठण्डा पानी था, दूसरे के हाथ में जमुर्रुद की तश्त अर्थात् थाली थी। उन्होंने मुहम्मद का पेट चीरा और आँतें बाहर निकाल कर धोईं और फिर पेट में रख कर वैसा ही करदिया। फिर दूसरे दिन दिल अर्थात् अन्तःकरण बाहर निकाला और उसको धोया। उसमें से कुछ काला २ सा धब्बा निकाल कर फेंक दिया। मदारिज्जुन्नुबुवत आदि में लिखा है कि मुहम्मद का पेट चार बार चीरागया प्रथम बाल्यावस्था में, दूसरे ६ या १० वर्ष की अवस्था में, तीसरे ४० वर्ष की अवस्था में, चौथे ५० वर्ष की अवस्था में। (राय) यह बात बुद्धि के

विरुद्ध है। क्योंकि पेट का चीरा जाना मौतका कारण है और पेट के चीरने वा धोने से अन्तःकरण की शुद्धि भी नहीं हो सकती। अन्तःकरण की शुद्धि तो ईश्वराराधन से होती है और जब एक बार मुहम्मद का पेट चीर कर साफ़ किया गया तो फिर दूसरी, तीसरी और चौथी वार चीरना वृथा हुआ। यदि मुसलमान कहें कि दूसरी वार ९ या १० वर्ष के उपरांत मुहम्मद के हृदय में फिर स्याही होगई थी तव भी पेट चीर कर धोई गई इसी लिये तीसरी और चौथी वार भी मुहम्मद का पेट चीरा गया तो इससे यह सिद्ध हुआ कि ५० वर्षके उपरांत जो फिर मुहम्मदका पेट न चिरा तो मरणकाल तक उसके हृदय पर जितनी स्याही जमी थी जमी ही रही—तदनन्तर मुहम्मद उमयेमन नाम अपने वाप की वांदी के पास रहा, फिर अवदुल मुतल्लिब इसका दादा इसको पालने लगा। वह इसको अति प्यार करता था। जब ८२ या १२० वर्ष की अवस्था में अवदुल मुतल्लिब अन्धा होकर मरगया तो उसके उपरांत आवू तालिब नाम का इसका चचा इसको पालने लगा। वह भी इस पर प्यार करता था-और खाने पीने की ख़वर लेता था। कहते हैं कि जब मुहम्मद २५ वर्ष का होगया तब इस पर फ़रिश्ते प्रकट होने लगे और जब सामने आते तो आपस में कहते कि यह वही पुरुष है। एक दिन मुहम्मद ने आबूतालिब से कहा कि कई दिन की वात है जो कि तीन आदमी मेरे पास आये और बोले कि यह वही पुरुष है। फिर एक दिन कहा कि उन तीन पुरुषों में से फिर एक पुरुष मुझ पर प्रकट हुआ और अपना हाथ उसने मेरे पेट पर रक्खा मुझे बड़ा सुख हुआ। इसके चचा ने जाना कि लड़के को कोई रोग है। वह मुहम्मद को एक वैद्य के पास लेगया और उससे कहा कि इस लड़केका इलाज कीजिये

उसने उत्तर दिया कि यह बीमार नहीं है और न इस पर कोई जिन्न है बल्कि फरिश्ते इस पर प्रकट होते हैं। (राय) विचार का स्थान है कि वैद्यक के ग्रन्थों में रोगोंका निदान तो है परंतु फ़रिश्ते उतारने का निदान किसी वैद्य की पोथी या हकीम की किताब में नहीं। यह बात भी मुसलमानोंने झूठी बनाई है। कोई बुद्धिमान् ऐसी बातों का विश्वास नहीं करसकता। इसी वर्ष में अबूतालिब् ने मुहम्मद से कहा कि मेरे पास द्रव्य नहीं रहा खाने पीने का सन्देह है—देख बहुत लोग व्यापार के लिये शामदेश को जाते हैं और खदीजा लोगों को माल कर्ज देती है यदि तू उसके पास जाय और कुछ धन मांगे तो वह तुझे भी कुछ रुपया उधार देदेगी। चाहिए यह कि उससे व्यापार करके तू भी धनी हो। निदान मुहम्मद ने खदीजा से द्रव्य उधार लिया और शामदेश की ओर व्यापार को गया। मयसरा खदीजा का गुलाम और खज़ीमा खदीजा का रिश्तेदार भी मुहम्मद के साथ होलिया—खुलासतुल अंबिया में आया है कि मुहम्मद खदीजा का नौकर होकर शाम और मिसर देश को व्यापार करने गया—और खदीजा को बहुत रुपया कमा कर दिया—वह इसकी बुद्धि पर प्रसन्न होगई और मुहम्मदके साथ अपना निकाह कर लिया—उस समय खदीजा की आयु ४० वर्ष की थी और मुहम्मद की २५ वर्ष की—इसके मुहम्मद से चार बेटी हुईं। निदान व्यापार करने में मुहम्मद की अवस्था ४० वर्ष को व्यतीत हुई और ४१ वें वर्षका प्रारम्भ हुआ तब कहने लगा कि मेरे पास एक पुरुष आया और एक खत लाया उसके पढ़नेको मुझे आज्ञा की। मैंने उससे कहा कि मैं बे पढ़ा हूं तब उसने मुझको ऐसे ज़ोर से दबाया कि मैं बेहोश होगया और मुझे पसीना आगया। इसी प्रकार उसने तीन बार मुझसे खत पढ़नेको कहा; मैंने उसको यही उत्तर दिया कि मैं

लिखा पढ़ा नहीं हूं ।

रौज़ातुलअहवाब में एक रवायत है कि जबरील मुहम्मद को गारहिरा से पहाड़ में लेगया । वहां जाकर जबरील ऐसा बड़ा बनगया कि पांव पृथ्वी पर और सर आसमान पर और भुजा उस की पूर्व से पश्चिम तक फैल गईं । फिर जबरील ने रेशमी कपड़े पर लिखा हुआ एक ख़त निकाला जो ख़ुदा के पास से लाया था मुहम्मद को दिया । फिर जबरील ने वज़ू किया और इमाम बनकर मुहम्मद को नमाज़ पढ़नी सिखलाई फिर चला गया ।

(राय) हम पूंछते हैं कि जबरील मुहम्मद को बे पढ़ा जानता था या नहीं ? यदि उसका बे पढ़ा जानता था तो फिर क्यों तीन बार उससे ख़त पढ़ने को कहा और जो उसके अविद्वान् होने से ख़बरदार नहीं था तो जबरील ने मुहम्मदको झूंठा जाना कि उसने दो बार कहा कि मैं पढ़ा नहीं परन्तु इसने न सुना बल्कि इन रवायतों से यह भी जाना जाता है कि मुहम्मद के अविद्वान् होने को खुदा भी नहीं जानता था नहीं तो उसके पास वह ख़त क्यों भेजता । सच तो यह है कि अरब के मूर्खों में मुहम्मद ऐसी २ झूंठी बातें बनाकर खुदाका रसूल अर्थात् दून बन बैठा । इस रवायत से यह भी निश्चय हो गया कि ४० वर्ष तक मुहम्मद ने कोई धर्म कर्म न किया क्यों कि ४१ वें वर्ष तो उसको जबरील ने नमाज़ ही सिखाई । इस समय तक मुहम्मद अपने बाप दादे के मतमें रहा । बुतपरस्ती की और जब मुहम्मद ने आपको खुदाका पैग़म्बर ठहरा लिया तो लोगों को ईमान लाने के लिये कहने लगा पहले ख़दीजा मुसलमान हुई उसी दिन अली ईमान लाया इसके उपरांत ज़ैद जो ख़दीजा का छोड़ा हुआ गुलाम था मुसलमान हुआ फिर

अबूबक्र। (राय) ख़दीजा तो मुहम्मदकी स्त्री ही थी, अली १० वर्ष का चचाका बेटा था, जैद स्त्री का गुलाम, अबूबक्र मुहम्मद का यार, इनका ईमान लाना क्या था। मदारिजुन्नुबुवत में लिखा है कि तीन वर्ष बीते थे कि कुछ मत मुसलमानी प्रकट हुआ— तब खुदा ने यह आयत सूरह हज़र की भेजी कि प्रगटकर जो तुझको आज्ञा हुई और शिर्क वालों का ध्यान न कर हम सामर्थ्य हैं तेरी तरफ से हंसी करने वालों को इस आयत में खुदा ने मुहम्मदःको दिलासा दी कि तू पुकारकर कुरान सुना और शिर्क वालों से भय न कर हम तेरे सहायक हैं। परन्तु खुदा की यह प्रतिज्ञा मिथ्या हुई ;क्योंकि जब मुहम्मद अपने मत का प्रत्यक्ष उपदेश करने लगा—कुरैश ने मुहम्मद और उसके साथियोंको बड़ा दुःख दिया और बेइज़्ज़त किया। यह सब बातें मदारिजुन्नुबुवत और रोज़ातुलअहबाब आदि में विस्तार पूर्वक लिखे हैं, संक्षेप से हम भी सुनाते हैं। रोज़ातुलअहबाबमें लिखा है कि जब तक मुहम्मद केवल ईमान लाने को कहता रहा और कुरैश के बुतों को बुरा न कहा तब तक उन्होंने मुहम्मद को दुःख न दिया पर जब उनके बुतों की निन्दा करने लगा तो वह भी दुःख देने लगे—मुहम्मद ने कहा कि तुम्हारे बुत झूंठे हैं और तुम्हारे बाप दादे नरक में हैं इस लिये उनसे शत्रुता हो गई। हज्ज के दिनों में जब सब बुतपरस्त इकट्ठे होकर हज्ज करने को आते थे तब मुहम्मद उस मेले में जाकर लोगोंसे कहता था कि मुझपर ईमान लाओ। अबूलहब पीछेसे। मुहम्मद के पत्थर मारता था और कहता था कि इसकी बात मत मानियो, यह बड़ा झूंठा आदमी है और कुरैश हज्जवालों से कहते थे कि मुहम्मद के फ़रेब से बचियो। कोई मुहम्मद को जादूगर बतलाते थे और कोई दीवाना कहते थे। काबे

के मंदिरमें जब मुहम्मद जाता था वह लोग इसे गालियाँ देते थे और कभी मारपीट भी करतेथे। एकदिन मुहम्मद नमाज़ पढ़ता था एक पुरुष ने गंदगी की भरी टोकरी उसके ऊपर डाल दी। मदारिज्जुन्नुबुवत में लिखा है कि कोई कुरैश मुहम्मद के सर पर ख़ाक बरसाता था और मुँह पर थूक डालता था कोई उसके मार्ग में कांटे बखेरता था और कोई बदन पर पत्थर मारता था-सीरत पैग़म्बर में लिखा है कि एक दिन कुरैशी पुरुषों ने मुहम्मद से कहा कि तूही है जो हमारे मतकी निन्दा करता है और बुतों को गाली देता है। इसने कहा कि हाँ मैं ही हूँ तब उनमेंसे एक पुरुषउठा और उसने मुहम्मदकी चादर उसकी गरदनमें लपेट कर खैंची और उसका गला घोटा। अबूबक्र यह देखकर रोया और कुरैशों को कुछ कहा। कुरैश मुहम्मद को छोडकर इस पर आये और उसकी डाढ़ी खसोटी-और बहुत मारदी—मदारिजुन्नुबुवत में लिखा है कि जब १६ आदमी मुहम्मद के मत में होगये तब अबूबक्र ने मुहम्मद से कहा कि अब प्रत्यक्ष उपदेश कीजिये और इसलाम को रिवाज दीजिये। मुहम्मद ने इन्कार किया कि अभी हम लोग थोडे हैं कुफ्फ़ार के मुक़ाबले की ताब नहीं रखते। अबूबक्र ने इस प्रकार हट की कि लाचार मुहम्मद काबे में गया और अबूबक्र ने खुतबा पढ़ा कुफ्फ़ार ने अबूबक्र पर हमला किया। एक ने अपनी जूतियों के तले से जिन में जगह २ पैवंद लगे थे अबूबक्र के मुंह पर ऐसी मारदी कि उसके गाल सूज कर नाककी बराबर पहुंचे-रौज़ातुलअहबाब में लिखा है कि अबूजहल जो मुहम्मद का बड़ा शत्रु था एक दिन मुहम्मद को गाली देता था और बड़ा दुःख देरहा था। यद्यपि वह सदैव ऐसा करता था परन्तु उस दिन उसने मुहम्मद को यहां तक बेइज़्ज़त

किया कि अपनायत के कारण अमीरहम्ज़ा को भी अतिक्रोध आया क्योंकि यद्यपि मुहम्मद मत में उसका विरोधी था परन्तु तो भी एक खून था कि वह मुहम्मद का चचा था मुहम्मद की बेइज़्ज़ती से सारे घराने की बेइज़्ज़ती थी। अमीरहम्ज़ा ने क्रोध में आकर अपनी कमान को लाठी की सदृश अबूजहलके शिरमें मारा और उसके विरोध से कहा कि अच्छा मैं भी मुसलमान हूँ कर तू मेरा क्या करना है इस बात पर अमीरहम्ज़ा मुसलमान होगया। इसके मुसलमान होने से मुसलमानों को बड़ी दृढ़ता हुई क्योंकि वह मक्के का रईस था। जब कुरैश ने देखा कि मुसलमान दिन दिन बढ़ते जाते हैं और हमसे अति विरोध करते हैं तो वह लोग अबूतालिब के पास गये और उस से कहा कि तू अब तक हमारे दीनपर है या तो तू मुहम्मद को पकड़ कर हमें सौंप दे कि हम उसे मार डालें--या तू उसे समझा दे कि वह हमारे बुतों को गालियां न दिया करे और ऐब न लगावे। अबूतालिब ने मुहम्मद को बुलाया और कहा कि कुरैश यों कहते हैं अब मैं क्या करूं और कहां तक तेरी हिमायत करूं मुझ में उन से लड़ने की शक्ति नहीं। मुहम्मदने समझा कि अब चचाने भी मुझे छोड़ दिया तो कुछ शोक करके कहा कि मैं बाज़ न आऊंगा खुदा मेरा मालिक है—या तो मेरा मनोरथ सिद्ध होगा या मैं नाचाज़ होजाऊंगा। मुहम्मद यह कह कर चला गया-अबूतालिब ने फिर इसे अपना जानकर बुलाया—और कहा तेरा दिल चाहे सो कर, जब तक मैं जीता हूं तेरी हिमायत करूँगा फिर जब अबूतालिब बीमार हुआ तो कुरैश उसके पास आतेथे। एक दिन कुरैश ने कहा कि ऐ अबूतालिब मुहम्मद के पास किसी आदमी को भेज और कह कि वह बहिश्त जिसकी

तू ख़बर देता है और जिसके तू पदार्थों का वर्णन करता है उस में से कोई खाने की चीज़ अपने प्यारे चचा के लिये भेज जिससे बल आवे। अबूतालिब ने एक आदमी को भेजा उसने मुहम्मद से बहिश्त का खाना उसके चचा के लिये मांगा मुहम्मद सुनकर चुप रहगया, कुछ उत्तर न देसका परन्तु अबूबक्र ने कहा कि बहिश्त के पदार्थ काफ़िरों पर हराम हैं इस लिये काफ़िर चचा को यह पदार्थ नहीं मिलसकते तब वह आदमी यह उत्तर लेकर गया अबूतालिब ने फिर कुरैश की सम्मतिसे उसको दूसरी बार भेजा और बहिश्तका खाना मांगा तब मुहम्मद ने आप उत्तर दिया कि खुदा ने बहिश्त खाना काफ़िरों पर हराम किया है-यह वही उत्तर है कि जो पहिले अबूबक्र ने कहा था-फिर मुहम्मद आप अबूतालिब के पास गया और कहा ऐ चचा तेरा हक़ सारे आदमियों के हक़ से मुझ पर अधिक है, तूने मुझ पर बड़े बड़े अहसान किये हैं खुदाकी क़सम मेरे बापके हक़ से भी तेरा हक़ मुझपर अधिक है परन्तु अब तू मेरी सहायता कर, केवल एक कलमा पढ़नेसे क़यामत में तेरी सहायता करूंगा—अबूतालिब ने कहा कि वह कलमा क्या है। मुहम्मद ने कहा—लाहि लाहि लिल्ला मुहम्मद रसुल्लिल्लाह।

अबूतालिब ने कहा मुझे भय है कि लोग कहेंगे कि अबूतालिब ने मौत के भय से कलमा पढ़ लिया यदि यह भय न होता तो मैं कलमा पढ़कर तेरा चित्त प्रसन्न करदेता-फिर अबूतालिब मरगया तो कुरैश मुहम्मद को बहुत सताने लगे। मुहम्मद लाचार होकर मक्के से बाहर निकला और देहात में जाकर चेले करने का इरादा किया। पहिले क़बीले बनीबक्र में गया और उनको अपने वश में करना चाहा-उन्होंने इसका

कहना न माना और अपने इलाक़े से निकाल दिया—फिर ताइफ़ की तरफ़ क़बीलेबनी सक़ीफ़ में गया वहाँ एक महीना रहा और सबसे मुसलमान होने को कहा किसी ने स्वीकार न किया-बलिक उन्होंने अपने इलाक़े के मनुष्यों से मुहम्मद को बहुत दुःख दिलवाया। मुहम्मद के पीछे वहाँ के लोग पत्थर मारते थे और गालियाँ देते थे-जब मुहम्मद इलाक़ा ताइफ़से उलटा मक्के को फिरा तो मक्के के मुसलमानों ने मुहम्मद से मार्ग में आकर कहा कि ताइफ़ और सक़ीफ़ का हाल क़ुरैश को प्रकट होगया है कि उन्होंने आपका अति निरादर किया है अब मक्के में जाने का मुंह नहीं रहा आपको वह बहुत दुःख देंगे अब वहाँ मत जाओ इसलिये मुहम्मद कोहहिरा पर चढ़ गया और मक्के के रईसों में हरएक के पास कहला भेजा कि कोई मेरा सहायक और हिमायती होके मुझे अपनी शरण में ले तो मैं मक्के में आऊँ सबने उसको सहायता से इनकार किया-परन्तु (मुतइम्) नामके एक पुरुषने मुहम्मद को फिर मक्के में लाबसाया।

इन्हीं दिनों मुहम्मदने मेराज़का क़िस्सा सुनाया। उसका संक्षिप्त रौज़ा तुलअहबाब और मदारिजुन्नुबुवतके अनुसार यह है कि रातको जब्रील और मीकाईल मुहम्मद के पास आये और एक घोड़ा लाये,उसपर मुहम्मद को सवार किया। बहिश्तसे फ़रिश्ते आकर आगे पीछे होलिये और मसजिद अक़सा की तरफ़ चले। जब मसजिदके दरवाज़ेपर पहुंचे तब आसमानसे फ़रिश्ते सलाम को आये घोड़ा दरवाजेपर बांधा। भीतर जाकर सम्पूर्ण पैग़म्बरों की रूहों को देखा और जमायत करके नमाज़ पढ़ी मुहम्मद पेशवा बना सारे पैग़म्बर पीछे हुये। फिर एक सीढ़ी पृथ्वी से आसमान तक रक्खी गई। मुहम्मद घोड़े पर चढ़कर

सीढ़ीके द्वारा आस्मानपर गया। जब्रील ने पहले आस्मान का दरवाज़ा खटखटाया। एक फ़रिश्ते ने जो १२००० फ़रिश्तों की फौज में वहाँ दरवान था कहा कि दरवाजे पर कौन है? जब्रील हूं और मुहम्मद मेरे साथ है इसे आस्मानपर बुलाया है तब उसने दरवाज़ा खोला और सलाम कहा। फिर आदम मिला उसने कहा शाबाश ऐ नेक बेटे और नेक नबी। आदम के दहने बायें दो दरवाजे थे एक दोज़ख का और एक बहिश्त का आदम एक तरफ़ देख कर हँसता, दूसरी तरफ़ देखकर रोता था। इसी प्रकार हर आसमान के दरवाजे पर प्रश्नोत्तर करके उनको खुलवाते चले गये। दूसरे आसमान पर ईसा और यहिया पैग़म्बर मिले। मुहम्मद ने उनको सलाम किया। तीसरे आसमान पर यूसुफ़, चौथे पर इदरीस, पाँचवें पर हारून, छटे पर मूसा मिला। वह मुहम्मद को देखकर रोने लगा। जब पूछा तो कहा कि इस लिये रोता हूँ कि यह लड़का मुहम्मद मेरे पीछे नबी हुआ और मेरी उम्मत से अधिक अपने मुसलमान लेकर बहिश्त में जायगा- सातवें आसमान पर इब्राहीम मिला। जब सदर के आगे पहुंचे तब एक सुनहरी परदा पड़ा हुआ मिला। जब्रील ने परदा को हिलाया भीतर से शब्द आया कि कौन है। जब्रील बोला मैं हूं। जब्रील मुहम्मद मेरे साथ है। फिर जब्रील ने मुहम्मद से कहा मुझे आगे जाने की आज्ञा नहीं है अब तू अकेला चला जा तब ७० परदों तक मुहम्मद अकेला गया। हर परदे की मुटाई ५०० वर्ष की राह थी और हरएक परदे से दूसरा परदा ५०० वर्ष की राह दूर थी। आगे जाकर वह घोड़ा भी रहगया। वहां पर एक (रफ़रफ़) सवारी के लिये मिला, उसपर मुहम्मद सवार होकर खुदा के तख्त के पास पहुंचा और बहुत सी

बातें हुईं। पचास बारकी नमाज़ की आज्ञा हुई। मुहम्मद ने मान लिया परन्तु लौटती बार मूसा ने मुहम्मद से कहा कि ५० बार की नमाज़ कठिन है किसी प्रकार खुदा से कम कराओ। फिर मुहम्मद ने थोड़ी २ कम कराके कई बार में बहुत तकरार के साथ खुदा से पाँच समय की नमाज़ नियत कराई। यह सब बातें एक मुहूर्त मात्र में होगईं। प्रातःकाल लोगों को यह क़िस्सा सुनाया। अबूबक्र ने इस बात को मान लिया कि ऐसा ही हुआ होगा। अबूजहल ने यह बात सुनकर लोगों में बड़ी हँसी की और कुछ मुसलमान यह क़िस्सा सुनकर मुहम्मद के मनसे फिर गये और कहा कि यह बात सर्वथा झूंठ है और कुछ मुसलमानों ने इस बात पर विश्वास कर लिया। इसी वर्ष में बारह आदमी मदीने के जो हज्ज को आये थे जिन्होंने मुक़ाम (मक़्बा) पर मुहम्मद से मुलाक़ात की और उसी जगह मुसलमान होकर मदीने को गये उन्होंने मदीने में आकर बहुत लोगों को मुसलमान करडाला और कुछ पुरुषों को मुहम्मद के मिलने का अभिलाषी करदिया। निदान जब कुरैशों ने मुहम्मद और उसके यारों को बहुत दुःख दिया तो मुहम्मद के कहने से चन्द मुसलमान मदीने को चले गये और उम्र ख़लीफ़ा भी २० आदमी साथ लेकर मदीने में जा पहुंचा और मुहम्मद ने भी मदीने को भागने का इरादा किया। जब कुरैश को ख़बर पहुंची कि मदीने में मुसलमान जा कर इकट्ठे हुए हैं और मुहम्मद भी जाना चाहता है अब यह लोग हमारे ऊपर तलवारबाजी करेंगे तब अबूलहब और। अबूजहल आदि ने मुहम्मद के मार डालने का इरादा किया किसी ने कहा कि मुहम्मद को पकड़ कर क़ैद करो और खाना पीना न दो आप ही मर जायगा। किसी ने

कहा कि शहर से निकाल दो जहाँ चाहे चला जाय। कोई कहता कि मुहम्मद का सर काट लेवें। जब मुहम्मद को यह खबर हुई तब अली को बुलाकर सब असबाब घर का उसको सौंपा और, कहा कि आज तू मेरे बिस्तर पर सो मैं मदीने को भाग जाऊँ तू पीछे से मदीने में आजाना। अली ने ऐसा ही किया और रातको मुहम्मद अबूबक्र के साथ मक्के से भाग गया। एक रवायत यूं है कि उस रात मुहम्मद छुपरहा और दूसरे दिन चादर से सर ढककर अबूबक्र के घर जाकर कहा कि जो कोई तेरे घर होवे बाहर करदे। उसने कहा कि सिवाय आईशा और उसकी बहिन के कोई नहीं। फिर अबूबक्र से सारा हाल कहकर साथ चलने को कहा और कुछ खाने को गाँठ बाँधा और एक पुरुष को कहदिया कि तीसरे दिन दो ऊँट गारसौर पर लाइयो और आमिर गुलाम को कहा कि जंगल में बकरियाँ चराता रहे और रात के समय (गारसौर) में दूध पहुंचाया करे फिर मुहम्मद अबूबक्र की खिड़की के द्वारा गारसौर की तरफ़ चला। पैरों की उङ्गलियों से मार्ग में चलता था कि ऐसा न हो पाँव के चिन्ह पहचान कर शत्रु पीछा करें। जब गारसौर निकट रहा मुहम्मद की जूतियाँ टुकड़े २ होंगई, फिर नंगे पावों दौड़ा यहां तक कि पावों से रुधिर निकलने लगा तब अबूबक्र ने उसको अपनी गरदन पर बिठाकर गारसौर पर पहुंचाया फिर दोनों गारसौर में छुपगये। अबूबक्र ने अपने कपड़े फाड़कर गारके छिद्र बंद किये कि ऐसा न हो कि कुरैश छिद्रों के द्वारा देख ले। रातको अबूबक्र का बेटा अबदुल्ला गार पर आता था और कुरैश की खबरें सुनाता था। आमिर गुलाम उसी जगह बकरियाँ लाता था और दूध पिलाता था। कुरैश

लोग पहले अबूबक्र के घर पर आये परन्तु प्रकट हुआ कि यहाँ नहीं है। पता लगाते हुए भाले और तलवारें लेकर पीछे दौड़ उसी गार तक आये, परन्तु उस अँधेरे गार में पता न लगा तब फिर गये। मुहम्मद और अबूबक्र ने तीन दिन तो उस गार के भीतर काटे चौथे दिन वह आदमी दोनों ऊँट लाया एक पर मुहम्मद, अबूबक्र और दूसरे पर अबदुल्ला और आमिर सवार होकर मदीने की तरफ़ भागे और कई मंजिल काटकर मदीने में आपहुंचे। फिर अली भी मदीने में आगया और मुसलमान स्त्री पुरुष भी मदीने में आये।

सन् १ हिजरी का हाल—जब मुहम्मद मक्के से भागकर मदीनेमें आया ना अक्सर मदीने वालों ने इसकी बड़ी ख़ातिरदारी की। मुहम्मद ने वहाँ कुबा नामी मसजिद बनाई और एक दिन वक्तृत्व किया। अबदुल्ला यहूदी बेटा सलाम का वक्तृत्व सुनकर घर गया फिर अलग मुहम्मद के पास आया और कहा ए मुहम्मद! मेरे तीन प्रश्न हैं उनका उत्तर सिवाय सच्चे नबी के और कोई नहीं जानता। यदि तू उत्तर दे तो मैं जानूँगा कि तू नबी है। पहिला प्रश्न बालक अपने मा या बाप की सूरत पर क्यों उत्पन्न होता है?

दूसरा प्रश्न क़यामत अर्थात् प्रलय का चिन्ह क्या है? तीसरा प्रश्न बहिश्त अर्थात् स्वर्ग में पुरुषों का भोजन क्या होगा? मुहम्मद ने कहा आज तक इन प्रश्नों का उत्तर मुझे प्रकट न था परन्तु अभी जब्रील ने मुझे सिखाया है। पहिले प्रश्न का उत्तर यह है कि यदि पुरुष का वीर्य अधिक हुआ तो बालक पिताकी चेष्टा पर होगा और यदि स्त्री का वीर्य अधिक हुआ तो संतान माताके रूप पर होगी।

दूसरे प्रश्न का उत्तर पहिला चिन्ह क़यामत का यह है कि आग पूर्व से उत्पन्न होगी, मनुष्यों को पश्चिम की ओर ले जायगी जैसे चरवाया बकरियों को ले जाता है। तीसरे प्रश्न का उत्तर पहिले बहिश्त में खाना उस मछली का कलेजा होगा जिसकी पीठ पर पृथ्वी है। यह सुनकर अबदुल्ला मुसलमान हो गया।। (राय) मुहम्मद का यह कथन झूँठ है कि तेरे प्रश्नों का उत्तर मुझे अभी जब्राल ने सिखाया है। पहिले प्रश्न का जो उत्तर मुहम्मद ने कहा है वह वैद्यक के ग्रन्थों में लिखा हुआ है और इस बात को हर एक बुद्धिमान् जानता है। दूसरे प्रश्न के उत्तर का क्या निश्चय है। यदि मुहम्मद और कहदेता अबदुल्ला उसी को सच मानलेता। तीसरा उत्तर बुद्धि के विरुद्ध है। जब यह माना कि पृथ्वी मछली की पीठ पर है तो मछली किस पर है। जो मछली के लिये कोई आधार मानोगे तो फिर उसका आधार भी चाहियेगा। एक बार यह अवश्य कहना पड़ेगा कि वह ईश्वर की शक्ति से है इसलिये पहिले ही ये क्यों न कहिये कि पृथ्वी ईश्वर की शक्ति से थंबी हुई है।

इसी वर्ष में मुहम्मद ने अपनी मसजिद के भीतर ५० महाजर और ५० अंसार इकट्ठे करके आपस में क़समाक़समी और मेल किया कि हम तुह्मारे और तुम हमारे। (राय) यहाँ साफ प्रकट है कि मुहम्मद ने लोगों से इत्तफ़ाक करके अपना मत चलाया। इसी वर्ष आयशा अबूबक्र की बेटी मक्के में जिसका, मुहम्मद से निकाह हुआ था। मुहम्मद ने पहिली बार उससे संभोग किया तब आइशा की अवस्था ९ वर्षकी थी और मुहम्मद की ५४ वर्ष की। इसी वर्षमें अजान मुकर्रर हुई। मदारिजुन्नुबुवत और मिशकात तथा रौज़ातुलअहबावमें इसका इस प्रकार वर्णन है कि, जब मदीने में जमायतकी नमाज़

मुकर्रर हुई तब मुहम्मद ने यारों से कहा कि लोगों के इकट्ठे होने के लिये शङ्ख बजाना चाहिये जैसे कि नसीरा बजाते हैं। बहुतों ने कहा कि किसी पशु का सींग बजाना चाहिये जैसे यहूदियों के यहाँ नियत है। बहुत से कहने लगे कि ऊँची जगह में आग लगाना श्रेष्ठ है परन्तु इनमें से कोई बात न ठहरी। इतने में जैद के बेटे अबदुल्ला ने स्वप्न में देखा कि फ़रिश्ता आसमान से आता है उसके हाथ में बड़ा शङ्ख है। उक्त अबदुल्ला ने कहा कि तू इस शङ्ख को बेचता है। उसने कहा तू इसे क्या करेगा। अबदुल्ला ने कहा कि मैं इसको बजाकर नमाज़ के लिये लोगोंको इकट्ठा करूंगा। उसने कहा कि मैं तुझको इससे श्रेष्ठ बात बतलाता हूं तब उसने अबदुल्ला को स्वप्न ही में (अल्लाहो अकबर हो) इसको आदि से सम्पूर्ण अज़ान सिखलाई। प्रातःकाल अबदुल्ला ने संपूर्ण वृत्तांत मुहम्मद से कह तब मुहम्मद ने कहा तेरा स्वप्न सत्य है, इसी समय अज़ान (बिलाल) को सिखा। तब उसने अज़ान बिलाल को सिखाई और उसने अज़ान दी। जब उमरने अज़ान सुनी तो दौड़ता हुआ आया और कहा कि मैंने भी यही स्वप्न देखा है। निदान इसी प्रकार १४ मुसलमानों ने वर्णन किया कि हमने भी यही स्वप्न देखा है। (राय) विचार का स्थान है कि अज़ान के विषयमें खुदा की कोई आज्ञा नहीं। पहले मुहम्मद ने इस विषय में यारों से सलाह की, फिर अबदुल्ला के स्वप्न के अनुसार अज़ान नियत करली। स्वप्न की बात का कुछ प्रमाण नहीं। इस रवायत से यह भी विदित हुआ कि मुहम्मदने शङ्ख बजाने को अच्छा माना था और जिस फरिश्ते ने अबदुल्ला को स्वप्न अज़ान सिखाई उसके हाथ में भी बड़ा शङ्ख था। मुसलमानों की बड़ी मूर्खता है कि शङ्ख के नाम से चिड़ते हैं। यदि वह

ईर्ष्या छोड़कर विचार करें तो शङ्ख को श्रेष्ठ जानें, क्योंकि मुहम्मद ने शङ्ख को श्रेष्ठ जाना था। तभी नमाज़ के लिये मनुष्यों को इकट्ठा करने को शङ्ख बजाने की सलाह की थी और फरिश्ते भी शङ्ख को उत्तम जान कर अपने हाथ में रखते हैं। एक दिन मदीना के यहूदी रोज़ादार थे। मुहम्मद ने पूछा कि यह कैसा रोज़ा है। उन्होंने कहा कि आज के दिन खुदाने मूसा को फ़रऊन के हाथ से बचाया था। मुहम्मद ने कहा कि यह रोज़ा मुझको अवश्य रखना चाहिये। निदान उस दिनसे मुहम्मद के आज्ञानुसार मुसलमान वह रोज़ा रखने लगे। यह रोज़ा मुहर्रम महीने की १० तारीख़ को होता है और उसे रोज़ा (आशूरा) कहते हैं।

(राय) यह रोज़ा मुहम्मद ने मदीना के यहूदियों की देखा देखी किया है। इसी प्रकार बहुत बातें मुहम्मदने अपना मत फैलाने को यारों की सम्मति से जारी की हैं। मुसलमानों का यह कथन है कि वह जो कुछ करता था खुदाकी आज्ञा ही से करता था, मिथ्या है। इसी वर्ष में मुहम्मद ने मदीने में मसज़िद (अज़ीम) बनाई। मदारिजुन्नुबुवत में लिखा है कि मुहम्मद ने एक अन्सार से कहा कि अपने मकान को ज़मीन बहिश्त के घर के बदले में तू देसके तो हम बड़ी मसज़िद बनावें। उसने कहा कि मुझको सामर्थ्य नहीं कि वृथा दूं। फिर उस्मान ने वह ज़मीन उससे १०००० दिरम को मोल ली और मुहम्मद को वास्ते मसजिद के दी। तब मुहम्मद ने यारों को ईंट बनाने के लिये आज्ञा दी। दीवारें मसजिद की कच्ची ईंटों से बनाईं और छत छुहारे की लकड़ीसे पाटी। छत उस समय उस मसजिद की ऐसी थी कि जब वर्षा होती थी तब पानी टपकता था और मिट्टी छत में से गिरती थी और मसजिद में गारा रहता था, गारे ही में सिजदा करते थे।

सन् २ हिजरी का हाल—दावे पैग़म्बरी के उपरांत जब तक मुहम्मद मक्के में रहा काबे की तरफ़ को नमाज़ पढ़ता रहा, फिर मदीने में आकर १६ या १७ महीने तक यहूदियों के मनोरञ्जन अर्थात् उनका दिल अपनी तरफ़ लगाने के लिये (बैतुलमुकद्दस) की तरफ़ नमाज़ पढ़ी और लोगोंसे कहा कि अब ख़ुदा की आज्ञा बैतुलमुकद्दस की तरफ़ नमाज़ पढ़ने की है। तब यहूदियों ने हंसी की कि अब तक मुहम्मद को नमाज़ का क़िबला ही मालूम न था। यह बात मुहम्मद को बुरी लगी। तब एक दिन ज़ुहर की नमाज़में दूसरी रकअत के मध्य में कहा कि—जब्रील आया है और क़िबला बदलने के लिये सूरह बक़र की यह आयत लाया है-अर्थात् हम देखते हैं तेरा मुँह फेरना। आसमान में बस अवश्य फेरेंगे हम तुझको, जिस क़िबला की तरफ़ तू राज़ी है। अब फेर मुंह अपना तरफ़ काबा की और जिस जगह तुम हुआ करो फेरो मुंह उसी तरफ़। यह कह कर बैतुलमुकद्दस की तरफ़ से काबे की तरफ़ को मुंह फेर लिया और मस्जिद क़ुबा और मस्जिद अज़ीम को जो पहिले बैतुलमुकद्दस की तरफ़ को बनाई गई थी ढाकर काबे की तरफ़ को बनाया। जब यह बात प्रसिद्ध हुई तब यहूदी कहने लगे कि मुहम्मद को अपना घर याद आया। क़ुरैश कहने लगे कि मुहम्मद अपने दीन में हैरान है, अपने किये हुए को आप ही नहीं जानता कि क्या करता हूं। यहूदियों ने मुसलमानों से कहा कि तुमने जितने दिनों बैतुलमुकद्दस की तरफ़ को मुंह करके नमाज़ पढ़ी है उसका क्या फल है—अर्थात् वह फलदायक है या वृथा। मुसलमान यह सुन कर शोकित हुए और मुहम्मद के पास आकर वृत्तांत कहा। मुहम्मद ने कहा कि सूरहबक़र की यह आयत आई है

अर्थात् अल्ला ऐसा नहीं है कि वृथा करे ईमान तुम्हारा अल्ला लोगों पर अवश्य कृपा करने वाला कृपालु है ।

तफ़सीरहुसैनी में लिखा है कि एक रात मुहम्मद के लश्कर ने बादल और अंधेरे के कारण किवला को छोड़ कर और तरफ़ को नमाज़ पढ़ी । जब दिन निकला तो जाना कि नमाज़ किवला से पृथक् दिशा को पढ़ी गई । जब मदीना में गये तो मुहम्मद से वृत्तांत कहकर चाहा कि उसके बदले अब फिर नमाज़ पढ़ें तब मुहम्मद ने कहा कि अब फिर नमाज़ पढ़ना कुछ आवश्यक नहीं है । मेरे पास सूरहवक़र की यह आयत आई है अर्थात् वास्ते अल्ला के है पश्चिम और पूर्व । जिधर को मुंह करो बस वही है मुंह अल्ला का ।

(समीक्षा) विचार करो कि जब यह आज्ञा खुदा की है तो फिर मक्के में काबे की तरफ और मदीने में आकर १६ या १७ महीने तक वैतुलमुक़द्दस की तरफ़ और फिर काबे की तरफ़ को नमाज़ में क़िवला करना और मसजिदकुबा और मसजिद अज़ीम को पहले वैतुलमुकद्दस की तरफ़ को बनाना और फिर ढवा कर काबे की तरफ को बनाना क्या आवश्यक था । खुदा की आज्ञा ऐसी कदापि नहीं होसकती कि पहले कुछ कहे और फिर उसके विरुद्ध दूसरी आज्ञा करे । वास्तव में बात यह है कि जब तक मुहम्मद मक्के में रहा तब वहाँ के लोगोंसे मेल बना रखने को काबे की तरफ़ को नमाज पढ़ना रहा और जब मदीने में आया तो मदीनेके यहूदियों से स्नेह बढ़ाने के लिये वैतुलमुकद्दस की तरफ़ को नमाज़ का पढना स्वीकार किया । जब यहूदियों ने हँसी की कि मुहम्मद को अब तक क़िवला ही मालूम न था तब फिर काबा की तरफ़ को क़िवला किया-और मसजिदकुबा और मसजिद अज़ीम को वैतुलमुक-

दूस की तरफ से ढवाकर काबे की तरफ़ को बनाया । निदान मुहम्मद जो काम करना चाहता था उसको खुदा की आज्ञा बतलाता था। जब उस बात में कोई हानि पाई जाती थी तो फिर उसके विरुद्ध दूसरी आयत बनाकर कहता था कि अब खुदा ने यह आज्ञा की है और जब्रील फ़लानी आयत मेरे पास लाया है । इसी प्रकार मुहम्मद ने अपने प्रयोजन सिद्ध करनेके लिए समय २ में सारा कुरान बनाया है। अब हम प्रसंगवश इसी जगह कुरान की बहुधा आयतों के बनाने का निमित्त लिखते हैं।

तथापि यहूदी और कुरैश कहते थे कि कुरान मुहम्मदका बनाया है, खुदा की आज्ञा नहीं. तब मुहम्मद ने सूरहबकर की यह आयत बनाई-अर्थात् यदि हो तुम संदेह में उस चीज़ के कि भेजा हमने ऊपर दास अपने के बस लेआओ एक सूरह सदृश उसको।

यही मतलब कुरान की सूरह यूनस और सूरह हूद और सूरह तूर और सूरह बनी इसराईल में है।

प्रथम तो इन आयतों से पुनरुक्ति दोष आता है, क्योंकि जो अभिप्राय पहली आयत में है वही शेष में है तो पहली के सिवाय शेषका कहना पिष्टपेषण ठहरा। फिर इन आयतों से मुहम्मद का यह दावा कि कुरान खुदा का भेजा हुआ है कदापि प्रमाणयोग्य नहीं हो सकता। क्योंकि मुसलमानों के ही पुस्तकों में लिखा है कि सज्जाह और मुसैलमाप्रभृति ने कुरान की सदृश बनाया और अनेक मुसलमान मुसलमानी मत को त्याग कर उनके मत में होगये। तज़करहतुल औलिया में उस मान बिन उमरबली के व्याख्यान में लिखा है कि-मंसूर ने कुछ कुरान के मुकाबले में लिखा शरह मवाफ़िक़ में लिखा है कि

मज़दार ने कहा कि अरब वाले कुरान से उत्तम ग्रन्थ बना सकते हैं। यदि कोई पक्ष करके कहने लगे कि उन लोगों की कविता कुरान के समान न थी तो इस प्रकार हर कोई कह सक्ता है कि अमुक की कविता के समान किसीकी कविता नहीं और जो कोई ऐसा कहे कि कुरान खुदा का भेजा नहीं और मुहम्मदने बनाया है तो मुहम्मद का मत क्यों बढ़ गया और मुसैलमा प्रभृति का क्यों न चला। उत्तर यह है कि यह नियम नहीं है कि सच्चे ही पुरुष का मत वृद्धिको प्राप्त हो, झूंठे का न चले। देखो जैसे जैन, बुद्ध आदि जो कि जगत् के कर्त्ता अर्थात् परमेश्वर को ही नहीं मानते उनका मत मुसलमानों सं अति अधिक फैला है और आदम से लेकर मुहम्मद तक जो कि एक लाख से अधिक पैगम्बर हुये हैं उन में से ३० के सिवाय शेष का नाम किसी मुसलमान को भी याद नहीं और उनका मत चलने की तो क्या कथा है। वास्तव में तो यह है कि मुसैलमा यदि अबूबक्र की लड़ाई में न मारा जाता तो अवश्य उसका मत मुहम्मद से अधिक फैलता। अब यदि कोई यह कहे कि मुसैलमा लड़ाई में मारा गया इस कारण मुहम्मद की सदृश नहीं हो सकता तो मुसलमानों के बहुत पैग़म्बर बड़ी २ दुर्दशा से मारे गये हैं। सूरह आलइम्रा तथा सूरह निसा में लिखा है अर्थात् और मार डालते थे नबियोंको फिर जिन लोगों ने कहा कि कुरान मुहम्मद का बनाया है उन से मुहम्मद ने कहा कि तुह्मारे समाधान के लिये खुदा ने सूरह अनकबूत की यह आयत भेजी है अर्थात् और नहीं था तू पढ़ना पहले इससे कुछ लिखा हुआ और न लिखा तूने उस को दाहने हाथ अपने से उस समय अवश्य धोखा करते झूंठे।

इस आयत से भी पूर्व पक्ष का कुछ समाधान नहीं हो सकता, क्योंकि हर कोई बे पढ़ा मनुष्य अपनी देशभाषा में कविता कर सकता है और उसको दूसरे से लिखा सकता है। इसी भांति मुहम्मद कुरान बनाता था और अब्दुल्ला बिन अर्कम आदि लिखते थे। और मुहम्मद पढ़ा लिखा मनुष्य था इसका प्रमाण सन् ६ हिजरी के वृत्तान्त में लिखा जायगा। जो कोई विद्वान् लोग मुहम्मद को न्यून विद्या होने के कारण उस का निरादर करते थे, उनमें अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए मुहम्मद ने सूरह एराफ की यह आयत बनाई और खुदा की आज्ञा बताई—अर्थात् जो लोग तावेदार होते हैं इस रसूल के, जो नबी है बेपढ़ा हुआ वही पहुंचेंगे अपनी मुराद को।

मआलिमुत्तंजील तफ़सीर में लिखा है कि मनुष्य परीक्षा के लिए मुहम्मद से प्रश्न करते थे। एक कहता था कि मेरे पिताका क्या नाम है, दूसरा कहता था कि मेरा ऊँट जाता रहा है वह कहाँ है। तब मुहम्मद ने कहा कि सूरहमायदा की यह आयत आई है अर्थात् ए लोगों जो ईमान लाये हो मत पूछा करो ऐसी बातों को, जो प्रकट कीजावें और तुमको बुरी लगें।

इस आयत के बनाने से मुहम्मद का प्रयोजन यह था कि लोग प्रश्न करते थे, जब उनका उत्तर न देसका तो लोगों को प्रश्न करने से रोका। यदि मुहम्मद खुदा का रसूल होता तो खुदा इसको उन प्रश्नों का यथावत् उत्तर क्यों न बताता। खुदाको इसका क्या भय था कि जो बात लोगों को बुरी लगे, वह न कहे, यथार्थ बात का तो कहना ही श्रेष्ट है। यदि खुदा ऐसी बात कहना नहीं चाहता कि जो किसी को बुरी लगे तो कुरान का भेजना भी वृथा है। क्योंकि कुरैश और यहूदियों

आदि को कुरान की बहुत बातें बुरी लगती थीं। मुहम्मद के कुनबे के लोग सुअर का माँस खाते थे और शराब पीते थे, पत्थर की मूर्ति पूजते थे। इनका निषेध उनको बुरा लगता था तो कुरान में इनका निषेध भी न करना चाहिए था। सिद्धान्त यह है कि कुरान मुहम्मद ने बनाया और खुदा के नाम से चलाया। बल्कि कुरान ही से स्पष्ट जाना जाता है कि कुरान मुहम्मद का बनाया हुआ है तथापि सूरा हाक्का—अर्थात् निश्चय वह कुरान वाक्य है। पैगम्बर श्रेष्ठ का और नहीं वह अर्थात् कुरान कवी (कवि) का सूरह कुव्विरत में यही मतलब है। तथाहि यह कहना पैगम्बर श्रेष्ठ का है— कुरान में अक्सर एक दूसरे के विरुद्ध वाक्य आये हैं जैसा कि सूरा जखरफ़ में लिखा है अर्थात् तहक़ीक़ यह कौम है कि नहीं ईमान लाते बस मुँह फेर ले उनसे।

सूरा काफ़रून में है अर्थात् कह, ए काफ़िरो नहीं इबादत करता मैं उस चीज़ की कि इबादत करते हो तुम और नहीं करने वाले तुम उस चीज़ की कि इबादत करते हैं हम वास्ते तुम्हारे दीन तुम्हारा और वास्ते मेरे दीन मेरा।

सूरा बकर में है अर्थात् नहीं ज़बरदस्ती बीच दीन के। अभिप्राय इन आयतों का यह है कि जो लोग कुरान की आज्ञा नहीं मानते उनसे मुँह फेर ले, कुछ झगड़ा मत कर, दीन के मामले में ज़बरदस्ती नहीं है। इसी अभिप्राय के विरुद्ध सूरा निसा में है—अर्थात् जो लोग कि कुरान से फिर जावें बस पकड़ो उनको और मार डालो जहाँ पाओ।

यही मतलब सूरा अनफ़ाल में लिखा है अर्थात् उनसे लड़ो और काफ़िरों से यहाँ तक कि न रहे जोर कुफ्फार का और होवे दीन सारा खुदा का। ऊपर के वाक्यों से इन वाक्यों को विरुद्ध

जान कर कहने लगे कि मुहम्मद अपने हाल से आप बे खबर है, कभी कुछ कहता है कभी कुछ कहता है। तब मुहम्मद ने यह उत्तर दिया कि वह आयतें इन आयतों से मनसूख होगईं तथाच जब्रील सूरहबकर की यह आयत लाया है।

अर्थात् जो मौकूफ करते हैं हम आयतों से यों भुला देते हैं हम लाते हैं हम अच्छी उससे था सदृश उसकी। इस पर विचार करना चाहिये कि जो पहिली आयतों को मनसूख करके दूसरी आयत उससे अच्छी लाये तो पहिली बुरी क्यों कही थी और यह कहना कि सदृश उसकी तो पहिली को मेट कर फिर उसी की सदृश लाने से क्या लाभ ठहरा। इस कथन से जाना गया कि खुदा अज्ञानी है, क्योंकि पहिले अज्ञान से कुछ करता है फिर समझ कर उससे अच्छी आज्ञा देता है और उसी की समान कहना तो बड़ी मूर्खता का काम है। फिर देखो कि पहिली आज्ञा तो यह थी कि जो ईमान नहीं लाते उनसे मुंह फेर ले दीन के मामले में जबरदस्ती नहीं है। उसको मनसूख करके यह आज्ञा की कि जो लोग कुरान से फिरें उनको मार डालो। अब यह कहना कि लाते हैं समान उसकी, मिथ्या हुआ। क्योंकि इसमें पहिली आज्ञा के समान तो कुछ भी नहीं, परस्पर विरोध है। इससे स्पष्ट जाना गया कि कुरान खुदा का भेजा नहीं, मुहम्मद ही की बनावट है। और आयतों के मनसूख होने का कारण यह है कि जब मुहम्मद मक्के में रहता था और अपने मन का उपदेश करता था तब कुरैश की बात को नहीं मानते थे। तब अपनी निर्बलता के कारण यह आयतें कि मुझको यह आज्ञा है कि जो लोग ईमान नहीं लाते कुरान पर उनसे मुंह फेर ले या कह काफिरों से कि तुम्हारे वास्ते तुम्हारा दीन और मेरे वास्ते मेरा दीन। और जब मदीने में उसके मत के

बहुत लोग होगये तो जोर पाकर यह कहा कि जो कुरानसे फिरें मार डालो उनको। निदान यह सब बातें मुहम्मद की बनाई हुई हैं। जैसा समय देखा वैसा ही कहा। फिर उसी अभिप्राय की कई आयतें कुरान में लिखी हैं । तथाहि सूरा निहल में है अर्थात् और जब बदल डालते हैं हम एक आयतको जगह एक आयत की और अल्ला खूब जानता है उस चीज़को कि उतारा है कहते हैं सिवाय इसके नहीं कि तू बाँध लेने वाला है कहा है कि पहुंचाया है उसको जब्रील ने परवरदिगार तेरे की तरफ इत्यादि। यह पिष्टपेषण दोष है कि एक अभिप्राय को कई बार कहना। सो कुरान में बहुधा एक ही तात्पर्य की कई २ आयतें लिखी हैं। ईश्वर का वाक्य ऐसा नहीं होता। यह मुहम्मद ही की लघुविद्या का कारण है। यहूदी कहते थे कि मुहम्मद बहुत विवाह करता है और स्त्रियों से ही राग रखता है। यदि पैग़म्बर होता तो विषयासक्त क्यों होता। तब मुहम्मद ने कहा कि सूरा रादकी यह आयत आई है—

अर्थात् निश्चय भेजे हमने पैग़म्बर पहिले तुझसे और की हमने वास्ते उनके बीबियाँ और औलाद। प्रत्यक्ष है कि मुहम्मद ने यह आयत यहूदियोंकी आशङ्का दूर करनेको बनाई, परन्तु उन लोगों को पूर्वपक्ष मुहम्मद के बहुविवाह और विषयासक्त होने पर था। इस आयत से उसका कुछ भी उत्तर न हुआ। जब मुहम्मद लड़ाई पर जाता था तो कोई २ मनुष्य शीतोष्ण से व्याकुल होकर उसके साथ से पीछे रहता था। तब मुहम्मद से लोगों ने कहा कि सूरा तोबा की यह आयत आई है।

अर्थात् नहीं था योग्य वास्ते रहने वाले मदीने के और जो कोई पास उनके रहें गँवारों में से, यह कि पीछे रह जावें रसूल खुदा के से- और नहीं उचित कि प्रीति करें बीच आराम जान अपनी के छोड़कर जान उसकी को।

मूर्ख भी यह समझ लेगा कि यह आयत मुहम्मद ने केवल अपने प्रयोजन को बनाई है।

मुहम्मद से यहूदियों ने प्रश्न किया कि रूह क्या पदार्थ है? बहुत दिन तक तो उनको उत्तर देने में टलाया, फिर सूरा बनी इसराईल की यह आयत कही अर्थात् तुझसे पूछते हैं कि (रूह) क्या है? रूह हुक्म परवरदिगार मेरे के से है। इस पर बुद्धिमान् विचार करें कि आज्ञा शब्दस्वरूप है अर्थात् यह कर अथवा यह न कर और शब्द चेतन नहीं है और (रूह) ज्ञान रूप ज्ञानाश्रय है जिसको बुद्धिमान् लोग चेतन कहते हैं इससे जाना गया कि मुहम्मद को जड़ और चेतन का भी ज्ञान न था।

अभिप्राय यह है कि मुहम्मद को कुछ विशेष विद्या तो थी नहीं।

अब फिर कुरानके परस्पर विरुद्ध वाक्य दिखाते हैं तथापि सूरा फुरकाँ—

अर्थात् कहा कि नहीं मांगता मैं तुमसे ऊपर इस कुरानके कुछ बदला। तथाच सूरा इनआम—अर्थात् कह कि नहीं मांगता मैं तुमसे ऊपर इसके बदला तथाच सूरा शोरा अर्थात् कह नहीं मांगता मैं तुमसे ऊपर उसके कुछ बदला। तथाच सूरा स्वाद अर्थात् कह नहीं मांगता मैं तुमसे ऊपर उसके कुछ बदला तथाच सूरा सबा—अर्थात् कह जो कुछ कि मांगा हो मैंने तुमसे कुछ बदला पस वह वास्ते तुम्हारे है। सूर शोरामें यही वाक्य कई जगह लिखा है। इस अभिप्राय के विरुद्ध सूरा अनफाल में है तथाहि—अर्थात् कह लूटें वास्ते अल्ला के हैं और रसूल के तथाच अर्थात् और जानो यह कि जो कुछ लूटो किसी चीज से पस निश्चय वास्ते अल्ला के है। पाँचवाँ

हिस्सा उसका और वास्ते रसूल के और वास्ते सम्बन्धियों रसूल के।

(राय) इन आयतों में प्रत्यक्ष परस्पर विरोध है। देखिये पहिले तो कहा कि मैं तुमसे कुछ चाहता नहीं और फिर यह कि लूटें वास्ते अल्ला के हैं और रसूल के। या तुम जो लूट का माल लाओ उसी खुदा और रसूल का है। पाँचवां हिस्सा और पहिली आयतों में पुनरुक्ति दोष भी आता है, क्योंकि एक ही अभिप्राय को कई जगह कहा है। ऐसा वाक्य खुदा का कभी नहीं हो सकता। कुरान में बदर की लड़ाई के विषय में एक जगह तो यह लिखा है कि खुदा १००० फरिश्तों से सहाय करेगा और दूसरी जगह तीन हज़ार और ५००० से लिखा है। तथाहि सूर अनफाल-अर्थात् मैं मदद दूंगा तुमको हज़ार फ़रिश्तों से तथाच सूर आलइम्राँ-अर्थात् मदद करे तुमको रब तुम्हारा साथ तीन हज़ार फ़रिश्तों के, बल्कि जो संतोष करो तुम और परहेज़गारी करो तुम और आवें तुमपर अपनी खुशी से वहीं मदद करेगा तुमको परवरदिगार तुम्हारे साथ ५००० फ़रिश्तों से।

(राय) देखिये इन दोनों आयतों में परस्पर कैसा विरोध है कि पहिले १००० फ़रिश्तों से मदद करना कहा और दूसरी आयत में प्रथम ३००० से फिर ५००० से मदद करना कहा। अब मुसलमानों से प्रश्न करना चाहिये कि इन तीनों वाक्यों में कौन सा सच है। वाह वाह खुदा की भी एक जबान नहीं कि पहिले १००० फरिश्तों से मदद देना कहा फिर एक ही आयत में ३००० और ५००० से कहा।

अपरंच सूर इनआम-अर्थात नहीं देख सकतीं उसको आँखें। इसके विरुद्ध सूरह्कममें लिखा है अर्थात् जो लोग कि

काफ़िर हुये और झूठ लाया निशानियों हमारी को और कयामतके दिन दर्शन हमारे को उन लोगों को बड़ा दंड होगा। यह ही अभिप्राय सूरह हम्मुस्सिजदह आदि में भी कई जगह आया है। देखो एक जगह तो यह कहा कि खुदा को आंखें नहीं देख सकतीं, दूसरी जगह उसके विरुद्ध यह वाक्य कि जो लोग खुदा का दर्शन मिथ्या जानते हैं वह पापी हैं। सम्पूर्ण जानते हैं कि बुद्धिमान् पुरुष की कविता में भी ऐसे परस्पर विरुद्ध वाक्य नहीं होते तो खुदा के भेजे हुए ग्रंथ में क्यों होंगे। इस लिये निसंदेह निश्चित है कि कुरान मुहम्मद ही का बनाया हुआ है। कुरान में मिथ्या वाक्य भी हैं। तथाहि सूरः मायदा अर्थात् निश्चय अल्लः जलदी लेने वाला है हिसाब का और सूरः मोमिन—अर्थात् निश्चय अल्लः शीघ्र लेने वाला है हिसाब। का यही आशय सूरः आलइम्रां तथा सूरः इब्राहीम में भी है।

विदित हो कि मुसलमानों का यह मत है कि खुदा क़यामत के दिन सब का हिसाब करेगा—और उसी दिन सम्पूर्ण को अपने २ कर्मों का फल मिलेगा। इस कारण ऊपरकी यह आयतें कि (अल्लः जलदी लेने वाला है हिसाब का) केवल मिथ्या कथन है। सूरः हज्ज में लिखा है—

अर्थात् निश्चय जो लोग ईमान लाये और वह लोग कि यहूदी हुए और बेदीन और नसारा और मजूस और वह लोग शरीक करते हैं निश्चय अल्लः फैसिल करेगा दरम्यान उनके दिन क़यामत के। इस आयत का आशय भी यही है कि सब का हिसाब क़यामत के दिन होगा। यह आयत भी पहिली आयतों को बतलाती है—तथाच पहिली आयतों से इस आयत में परस्पर स्पष्ट विरोध है और पुनरुक्ति दोष तो कुरान में बहुत ही है सूरह कमर में है अर्थात् नज़दीक आई क़यामत।

(राय) यह सर्वथा भूंठ है। क्योंकि मुहम्मद को १३०० वर्ष से अधिक व्यतीत हो गये, परन्तु कुरान का यह वाक्य आज तक भी सत्य न हुआ अर्थात् कयामत आज तक भी न आई। सूरहनिहल में लिखा है अर्थात् निश्चय भेजे हमने बीच हर उम्मत के पैग़म्बर यह कि इबादत करो अल्ला की। कुरान में यह आशय कई जगह आया है। विचार करना चाहिये कि हर उम्मत में रसूलों का आना असंभव है। क्योंकि उम्मत का अर्थ गिरोह है तो दुनियां में करोड़ों गिरोह होगये और हैं और पैग़म्बर एक लाख चौबीस हजार हो हुए इससे हर उम्मत में पैग़म्बरों का आना सर्वथा मिथ्या है।

सूरह मरयम में लिखा है-अर्थात् नज़दीक हैं आसमान कि फटजावे उससे और फट जावे ज़मीन और गिरपड़े पहाड़ कांपकर इससे कि दावा किया उन्होंने वास्ते अल्ला के औलाद का और नहीं लायक वास्ते खुदा के। यह कि पकड़े औलाद ने बड़े बड़े आश्चर्य की बात है कि यह वाक्य खुदा ने क्रोध से कहा, परन्तु आज तक भी खुदा का कथन पूर्ण न हुआ। अर्थात् इस कारण से आज तक भी आसमान और ज़मीन न फटा और न कोई पहाड़ गिरा इससे यह वाक्य मिथ्या ही है।

सूरा मुहम्मद में है-अर्थात् जो ईमान लाये हो यदि मदद करो खुदा की मदद देगा तुमको खुदा। तथाच सूरा हदीद में है अर्थात् और उतारा हम ने लोहा बीच उसके लड़ाई सख्त और फायदा है वास्ते लोगों के। ताकि प्रकट कर अल्ला उस पुरुष को मदद देता है खुदा को और रसूल उसके को। यह दोनों आयतें प्रत्यक्ष भूंठी हैं, क्योंकि खुदा सर्व शक्तिमान और अभ्यास है वह किसी से मदद नहीं चाहता।

सूरा आलेइम्रॉं में लिखा है-अर्थात् निश्चय पहिला घर बनाया वास्ते लोगों के मक़ाम इब्राहीम का और जो कोई दाखिल हुआ उसमें होता है अमन में। यह वचन सर्वथा मिथ्या है, क्योंकि जब इब्राहीम ही सब से पहिला नहीं है तो उसका मक़ाम सबसे पहिला कैसे हो सकता है। मुसलमानों के मत में सब से पहिला मनुष्य आदम हुआ है और आदम से इब्राहीम तक बहुत सृष्टि हुई। मक़ाम इब्राहीम से पहिले बहुत घर बन चुके होंगे, इस कारण मक़ामे इब्राहीम को पहिला घर कहना मिथ्या है और यह भी झूंठ है कि जो कोई उसमें दाखिल हुआ निर्भय होगया। प्रथम तो मुहम्मद ही कुरैशों के भय से मक्के से उङ्गलियों के बल भागा और ग़ारसौर में छुपा। यदि काबा निर्भय स्थान था तो वहीं क्यों न जा बैठा, और अबदुलउज्ज़ा आदि अपनी जान बचाने को वहाँ छुपे तो उनको मुहम्मद ने उसी जगह मरवाया।

सराहज्ज में है अर्थात् क्या नहीं देखा तूने यह कि अल्ला सिजदा करते हैं वास्ते उसके जो कोई बीच ज़मीन के हैं और सूर्य और चाँद और तारे और पहाड़ और दरख्त और जानवर। यही आशय कुरान में और भी कई जगह लिखा है। बुद्धिमान् जानते हैं कि वृक्ष और पहाड़ आदि जड़ हैं, वह सिजदा करने की योग्यता नहीं रखते। सिजदा ज्ञान, इच्छा प्रयत्न पूर्वक होता है। पर्वतादि में यह बातें असंभव हैं। ज्ञान आदि चेतन के धर्म हैं। इस से यह मिथ्या भाषण है।

सूरा जासिया में है अर्थात् और वशी किया तुम्हारे जो कुछ बीच आसमानों के और जो कुछ बीच ज़मीन के है सारा। यह प्रत्यक्ष ही झूंठ है, क्योंकि जो कुछ बीच आसमानों के और बीच ज़मीन के है वह सिवाय परमात्मा के और किसी के वश

में नहीं है। सूरा कहफ़ में लिखा है-अर्थात् जब पहुंचा जगह डूबने सूर्य की पाया उसको डूबता था बीच चश्मह कीचड़ के। यह आयत कुरान में इस अभिप्राय पर है कि सिकन्दर पश्चिम दिक् को यहाँ तक गया कि सूर्य को दल २ में डूबते पाया।

इस झूंठ पर नादान लड़के भी हँसेंगे, क्योंकि सब जानते हैं कि सूर्य पृथ्वी से बहुत बड़ा है और वह किसी जगह नहीं डूबता। कुरान के कर्त्ता को पृथ्वी और सूर्य का कुछ भी हाल मालूम न था।

हिजरत के दूसरे ही वर्ष में मुहम्मद की फ़ातमह नाम बेटी का अली के साथ निकाह हुआ। इसका वृत्तान्त मदारिजुन्नुबुव्वत में इस प्रकार लिखा है कि पहिले अबूबक्र ने कि जो मुहम्मद का सुसरा था मुहम्मद से इस लड़की की दरख्वास्त की। मुहम्मदने बहाना किया कि मैं वहीं का मार्ग देखता हूं। फिर उमर ने दरख्वास्त की उसको भी वही उत्तर दिया। तदनन्तर अली से उसके सम्बन्धियों ने कहा कि तू मुहम्मद के पास जा और उससे फ़ातमा को माँग। अली ने कहा कि मैं रसूलसे लज्जा करता हूं और उसने उमर और अबूबक्र की दरख्वास्त स्वीकार नहीं की है मुझे कैसे देगा। फिर इन्होंने कहा कि तू उसका समीपी है और बेटा चचा उसके का। जा लज्जा मत कर। तब अली मुहम्मद के पास गया। उसने कहा कि तू किस लिये आया है। अलीने कहा कि मैं फ़ातमा को चाहता हूं। तब मुहम्मद ने कहा अच्छा। फिर मुहम्मद ने उम्मे सलीम से कहा कि तू इस लड़की को अली के डेरे में लेजा और उसे सौंप दे और कह कि जल्दी न करे जब तक कि मैं न आऊं। फिर रात्रि को मुहम्मद एक पानी का घड़ा लेकर अली के घर आया और उस पानी में थूका और कुछ आशिष

वचन पढ़े और वह पानी अली और फ़ातमा को पिलाया और फ़ातमाके सर और छातियों पर छिड़का और अली के सर और कंधे पर डाला और संग करने की आज्ञा दी।

राय—इस वृत्तान्त से प्रकट है कि मुहम्मद ने अबूबक्र और उमर से मिथ्या ही वही का वहाना किया। सत्पुरुष ऐसा झूठ कदापि नहीं बोलते। यदि मुहम्मद अपनी वेटी अबूवक्र और उमर को देना नहीं चाहता था तो उनसे यह ही कहना योग्य था कि मैं अपनी वेटी तुमको न दूंगा।

लड़ाइयों का वर्णन।

इस वर्ष से मुहम्मद के ग़ज़वे और सरिये प्रारम्भ हुए। (ग़ज़वा उस लड़ाईको कहते हैं कि जिस में मुहम्मद भी गया हो और सरिया उस लड़ाई का नाम है कि जिसमें और किसी पुरुष को प्रधान बनाकर उसके साथ सेना भेजी हो) मुहम्मद ने १८ या २१ या २७ ग़ज़वे अपने जीवन पर्यन्त किये हैं और सरिये लिखने वालोंको ठीक २ प्रकट नहीं हुये। अब हम रौज़ातुलअहबाव और मदारिज्जुन्नुवुवत के अनुसार संक्षेप: से उन लड़ाइयों का वर्णन करते हैं।

सरिया हमज़ह।

मुहम्मद को ख़बर मिली कि क़ुरैश लोग जो शामदेश की तरफ़ व्यापार को गये थे अब वह लौट कर मक्के को जाते हैं, इस लिये मुहम्मद ने (अमीर हमज़ह) को ३० मनुष्य महाज़र देकर उस क़ाफ़ले के लूटनेको भेजा ताकि उन मुसाफ़िरों को मारें और उनका माल लूटें। परन्तु उस क़ाफ़ले से लड़ाई न हुई, क्योंकि वह ३०० मनुष्य थे और अबूजहल भी उनके साथ था। निदान हमज़ह मदीने को फिर आया।

सरियः सादः बवकास ।

इसी तरह एक और सौदागरों का क़ाफ़ला जाता था, उस के लूटने को मुहम्मद ने यह सरिया भेजा और आज्ञा दी कि मुक़ाम ज़रार से आगे न जावें। परन्तु जब यह फ़ौज मुक़ाम ज़रार पहुंची तो प्रकट हुआ कि एक दिन पहिले वह क़ाफ़ला वहाँ से आगे को निकल गया, इस कारण यह भी मदीने को फिर आये।

गजवा बवात ।

मुहम्मद को ख़बर मिली कि एक क़ाफ़ला सौदागरों का जिसमें एक सौ मनुष्य और २५०० ऊंट हैं जाता है, इस लिये मुहम्मद ४० मनुष्योंको साथ लेकर उनके लूटने को गया। जब मुक़ाम बवान में पहुंचा तो वह मुसाफिर न मिले। तब मुहम्मद अपने मनुष्यों सहित मदीने को फिर आया।

गजवा अशीरा ।

मुहम्मद को ख़बर मिली कि अबूसफ़यॉं मक्के का रईस बहुत से कुरैश साथ लिये शामदेश की तरफ़ व्यापार को जाता है। उनके लूटने को मुहम्मद १५० मनुष्य साथ लेकर मदीने से चला जब अशीरा ग्राम में पहुंचा तब कई दिन के उपरांत प्रकट हुआ कि बहुत दिन हुये कि वह क़ाफ़ला चला गया। वहाँ से भी मुहम्मद मदीने को फिर आया।

गजवा ।

मदीने के आस पास मुहम्मद के ऊँट चरते थे, उनको एक पुरुष चुरा लेगया तब मुहम्मद बहुत मनुष्य साथ लेकर उसके पीछे गया। जब एक ग्राम में पहुंचा तो प्रकट हुआ कि वह चोर दूर निकल गया है तब मुहम्मद वहाँ से फिर आया।

सरियः अबदुल्ला ।

फिर मुहम्मद को किसी ने खबर दी कि एक क़ाफला अमुक स्थान से मक्के को जाने वाला है इसलिये मुहम्मद ने उसके लूटने के लिये अपने चचा के बेटे अबदुल्ला को दश बारह मनुष्य देकर भेजा और एक चिट्ठी किसी से लिखवा कर उस को दी और कहा कि इस चिट्ठी को दो दिन पीछे दूर जाकर पढियो, दूसरी मंजिल से पहिले कदापि न खोलियो। निदान उसने दूसरी मंजिल में उसको खोला। उसमें लिखा था कि बतने नखला में जाकर बैठ, एक क़ाफ़ला क़ुरैश का वहाँ को जाने वाला है शायद वहाँ से कुछ लूट हाथ आवे। जब अबदुल्ला उस जगह पहुंचा और मुसाफिरों की घात में बैठा तो एक क़ाफ़ला ताइफ़ की तरफ से उस जगह आनिकला। क़ाफ़ले वालों ने जब वहाँ मुहम्मद के यारों को बैठा देखा तो डर गये और आपस में कहने लगे कि यहाँ ठहरना अच्छा नहीं यहां से शीघ्र ही चलो। ऐसा न हो कि यह मुसलमान लोग हमारे साथ कुछ बदी करें और मुसलमान भी समझ गये कि वह हमारे विषय में बात करते हैं। तब उन को धोखा देने के लिये अबदुल्ला के साथियों में से एक ने अपना शिर मुँडवाया और सब मुसलमानों ने ऐसा प्रकट किया कि मानों हज्ज के जाने वाले हैं। उस दिन रजब के महीने की पहिली तारीख थी। मुसलमान आपस में उनके सुनाने को कहने लगे कि आज रजबकी पहिली तारीख है या जमादिउ-लअव्वलकी पिछली तारीख है। ऐसी बात सुन कर उन मुसाफ़िरों ने जाना कि यह हाजी लोग हैं तब वह निःसन्देह होगये और अपने काम में लगे। तब अबदुल्ला आदि मुसलमानोंनेउन मुसाफिरों पर अचानक डाका डाला। उनमेंसे १ पुरुषको मार

डाला और २ को क़ैद किया और संपूर्ण माल लूटा। फिर संपूर्ण माल का कैदियों सहित लेकर मुहम्मद की तरफ़ चले। कहते हैं कि जब मदीने के समीप आये तो अबदुल्ला ने मार्ग ही में लूटके माल में से पाँचवां भाग मुहम्मद के लिये पृथक् कर दिया। जब कुरैश को इस बात की खबर हुई कि मुसलमानों ने हमारे मुसाफ़िरों के साथ ऐसा किया, तो कहा कि मुहम्मद ने हराम महीने को हलाल कर दिया। क्योंकि रजब के महीने में लड़ाई और लूट करना अरब के लोग बड़ा अधर्म जानते थे और मुसलमान भी इसी प्रकार मानते थे। इसलिये कुरैश ने मुसलमानों पर यह आक्षेप किया कि रजब के महीने में भी तुम लूट मार करते हो। जब मुहम्मद ने यह सुना तो अबदुल्ला से कहा मैंने तुमसे न कहा था कि हराम महीने अर्थात् रजब में लड़ाई न कीजो। फिर मुहम्मद ने कहा कि इस मालमें से कोई कुछ न लेवे। इस बात से अबदुल्ला आदि बड़े लज्जित हुए। इसके उपरांत मुहम्मद ने एक आयत बनाई जिसका तात्पर्य यह है कि यह काम अनुचित नहीं हुआ तब अबदुल्ला और उसके यार प्रसन्न हुए और लूटके माल में से अबदुल्ला का निकाला हुआ पाँचवां भाग मुहम्मद ने लिया, शेष सब ने बांट लिया।

(राय) इस से स्पष्ट जाना गया कि मुहम्मद अपने यारों सहित लूट खसोट करता था और अपने कार्य साधन के लिये आयतें बनाकर उसको खुदा की आज्ञा बतलाता था। देखिये मुहम्मद ने उन मुसाफिरों के लूटने के लिये अबदुल्ला आदि को भेजा और अबदुल्ला आदि ने इन मुसाफिरों को धोखा देने के लिये हाजियों की सूरत बनाई। जमादिउलअव्वल की पिछली और रजब की पहिली तारीख़ का सन्देह भी उन मुसा-

फिरों को धोखे में डालने को केवल मिथ्या भाषण किया। जब यह लोग इनको हाजी जानकर निःसन्देह होगये तब उन पर डाका डाला और एक को जान से मारा और उनका संपूर्ण माल लूटा और अबदुल्ला ही ने अपनी बुद्धि से मुहम्मद के लिये लूट के माल में से पाँचवाँ भाग नियत किया, क्योंकि उस समय तक कुरान में मुहम्मद के लिये पाँचवें भाग की आज्ञा नहीं हुई थी। बस इसके उपरांत मुहम्मद ने अपने लिये पाँचवाँ भाग लेने को आयत बनाई जो इसी ग्रन्थमें पीछे लिखी गई है। जब कुरैशोंने मुहम्मद और मुसलमानों पर यह आक्षेप किया कि तुम हराम महीने में भी लूट मार करने लगे तो मुहम्मद ने अबदुल्ला को वृथा ही धमकाया कि मैंने तुमसे न कह दिया था कि हराम महीने में लूट न कीजो। मुहम्मद का यह कहना सर्वथा झूंठ है। क्योंकि जब मुहम्मद ने जब अबदुल्ला को उन मुसाफिरों के लूटने को भेजा था तो उससे कुछ भी न कहा था। हाँ, एक चिट्ठी उसको दी थी और कहा था कि इस चिट्ठी को दो दिन के उपरांत पढ़ियो। उसमें यही लिखा था कि बतने नखले में जाकर बैठ, एक क़ाफ़ला वहाँ को आने वाला है, मुमकिन है कि वहाँ से कुछ लूट हाथ लगे। न तो मुहम्मद ने अबदुल्ला से जबानी कहा था, न चिट्ठी में लिखा था कि रजब के महीने में लूट न कीजियो। फिर जब अबदुल्ला आदि को अप्रसन्न देखा और दिल में धन का लालच समाया तो वह आयत बनाई कि यह काम अनुचित नहीं हुआ। मुहम्मद का मत बढ़ने की वास्तव में यही बात है कि लूट खसोट करते थे और जो कोई लड़ाई में जाता था हिस्सा पाता था। लूट के लालच से बहुत मनुष्य इसके साथ होगये।

गज़वा बद्र ।

गज़वा अशीरा में वर्णन होचुका है कि मक्के से क़ाफ़ला शामदेश को सौदागरी के लिये जाता था, उसके लूटने के लिये १५० मनुष्य लेकर मुहम्मद मदीने से चला। जब अशीरा में पहुंचा तो प्रकट हुआ कि वह क़ाफ़ला शामदेश को चला गया तब मुहम्मद मदीने को फिर आया और इस विचार में रहा कि जब वह शामदेश से फिरे तब हम फिर उनको लूटें। इस लिये मुहम्मद ने अपने आदमी छोड़ रक्खे थे कि उनके आने की ख़बर रक्खें, परन्तु उस क़ाफ़ले वालों ने शामदेश ही से एक आदमी को मक्के में भेजदिया और उससे कह दिया कि तू जाकर मक्के वालों से कहदे कि हमारे लूटने के लिये मुहम्मद ने घात लगा रक्खी है तुम लोग मार्ग में हमारी सहायता करो और हमें और हमारे माल को उसके हाथसे बचाओ। जब उस मनुष्य ने मक्के में आकर यह बात सुनाई तो मक्के वाले उनके बचाने को निकले। औरतें भी उनके आगे गीत गाती बजाती चलीं। इधर मुहम्मद को ख़बर मिली कि वह क़ाफ़ला शाम से मक्के को आता है और तल्लहा और सईद भी जो मुहम्मद के क़ाफ़ले की ख़बर लगाने को छोड़ रक्खे थे मदीने में आये, परन्तु उनके आने से पहिले ही मुहम्मद महाजर और अनसारों को साथ लेकर उस क़ाफ़ले के लूटने को चल दिया था। जब मदीने से एक कोस पर आकर अपनी फ़ौज को वे सरोसामाँ भूखे नंगे देखा तो कहा कि ए ख़ुदा यह लोग प्यादे हैं इन्हें सवार बना। भूखे हैं इन्हें खाने को दे। नंगे हैं इन्हें कपड़े पिन्हा, निर्धन हैं धनवान् कर।

(राय) इस वृत्तांत से प्रकट है कि जो लोग मुहम्मद के साथी थे वह नंगे और भूखे अतिनिर्धन थे। मुसलमानी मत बढ़ाने का वास्तविक कारण यही है कि बहुत लोग लूट खसोट

के लालच से मुहम्मद के साथी होकर मुसलमान होगये और कुछ लोग अपनी जान और माल बचाने को मुसलमान हुए, क्योंकि जब मुहम्मद का जोर बढ़गया तो यारों को यह आज्ञा दी कि जो लोग मुसलमान न हों उन्हें जान से मार डालो। और उनका माल लूट लो और जो कोई मुसलमान होजावे उससे कुछ तकरार न करो।

निदान जब बद्र के समीप पहुंचे और किसी स्थान पर डेरा डाला तो मुहम्मद एक मित्र को साथ लेकर कुरैश का पता लगाने को लश्कर से बाहर निकला। कुछ दूर जाकर एक वृद्ध पुरुष मिला। उससे मुहम्मद ने कहा—तुझे कुछ कुरैश और मुहम्मद की ख़बर है कि वह लोग कहाँ होंगे। वृद्ध बोला मैं नहीं बतलाता जब तक कि तू न बतादे कि तू कौन है। मुहम्मद ने कहा जब तक तू मेरे प्रश्न का उत्तर न देगा तब तक मैं तुझे न बताऊंगा कि मैं कौन हूँ। तब वृद्ध ने कहा कि मुझे ख़बर मिली है कि अमुक तारीख़ को मुहम्मद और उसके यार मदीने से निकले हैं यदि यह बात ठीक है तो आज मुहम्मदका मुक़ाम अमुक स्थान पर होगा और उसी स्थान पर मुसलमान उस दिन थे। फिर वृद्ध बोला कि ख़बर मिली है कि अमुक तारीख़ को कुरैश मक्के से चले हैं। यदि यह सत्य है तो आज अमुक स्थान पर होंगे और कुरैश उस दिन उसी स्थान पर स्थित थे। फिर उस वृद्ध ने कहा कि अब तू बता कि तू कौन है। मुहम्मद ने कहा कि हम पानी से हैं--

(राय) यहाँ मुहम्मद ने वृद्ध पुरुष को धोखा दिया। झूठ बोला कि हम पानी से हैं। यह कहने से मुहम्मद का आशय यह था कि वह वृद्ध इसको इराक़ देशका समझे, क्योंकि अरब वाले इराक़ देश को पानी का देश कहा करते थे। अब

मुसलमान पानी से यह तात्पर्य लेते हैं कि मुहम्मद ने कहा कि हम पानी अर्थात् मनुष्य के वीर्य से उत्पन्न हुए हैं। यह मुसलमानों की बनावट है, क्योंकि सम्पूर्ण पुरुष वीर्य ही से उत्पन्न होते हैं, मुहम्मद की कुछ विशेषता नहीं।

इसके उपरांत मुहम्मद ने डेरे में आकर अली और जुबैर और साद को कुछ मनुष्यों सहित कुरैश की खबर को भेजा। वह चले ही जाते थे कि कुरैश के ऊंट उन्हें मिले। मुसलमानों को देख कर ऊंट वाले भाग गये, परन्तु उनमें से दो आदमी मुसलमानों के हाथ आगये। डेरे में लाकर उनको मार पीटकर छोड़ दिया। फिर जब खास मुकाम बदर पर पहुंचे तब मुहम्मद ने कहा कि उरले कुए पर डेरा डालो। एक मुसलमान बोला कि अपने चित्त से कहते हो या खुदाने यहीं डेरा डालने को आज्ञा दी है। मुहम्मद ने कहा कि अपने ही चित्तसे कहता हूं। उसने कहा कि यह उचित स्थान नहीं है, दूसरे कुए पर डेरा डालो। उसी समय जब्रील आया--और कहा कि यह बात ठीक है। फिर वैसा ही किया अर्थात् दूसरे ही कुए पर डेरा डाला। कहते हैं कि साद ने मुहम्मद से कहा कि हम तेरे वास्ते एक छप्पर बनावें तू वहाँ बैठ-और तेरे लिये वहां सवारी तैयार रहेगी और हम लड़ेंगे यदि जय हुई तो श्रेष्ठ है नहीं तो तू सवार होकर मदीने को भाग जाइयो। तब मुहम्मद ने साद को आशीर्वाद दिया और छप्पर तैयार हुआ।

(राय) इससे जाना गया कि मुहम्मद और उसके यारों को अपनी हार का निश्चय था इसी लिये मुहम्मद अलग छप्पर में बैठा और भागने के लिये सवारी तैयार रक्खी।

इसके उपरांत कुरैश के लोग मुसलमानों के हौज़ में पानी पीने को आये। मुसलमानों ने उन को पानी पीने से रोका।

कुरैशों में से एक पुरुष बोला कि इस हौज़ से पानी पिऊँगा। जब वह पानी पीने को आया तब अमीर हमज़ह ने उस को टाँग पर तलवार मारी, वह गिरता पड़ता हौज़ तक पहुंचा और पानी पिया, परन्तु हमज़ह ने दूसरी तलवार मार कर उसे जान से मार डाला। फिर कुरैश में से तीन पुरुष निकल कर बाहर आये और मुसलमानों से कहा कि हमसे लड़ने को तीन पुरुष आओ। मुहम्मद ने (अली) आदि तीन पुरुष भेजे इनमें से एक२ पुरुष दोनों तरफ़ का मारा गया। फिर कुरैश में से (अबूजहल) जो कि मुहम्मद का चचा था-अकेला निकला। मआज़ और मऊज़ दो मुसलमानों ने उस एक पर हमला किया और बड़े पराक्रम से उसे मारलिया। मुहम्मद ने कहा कि यद्यपि तुम दोनों ने उसे मारा है, परन्तु उस के कपड़े आदि (मआज़) को मिलेंगे मऊज़ को न मिलेंगे। इस के उपरान्त मुहम्मद अपने छप्पर में जाकर अतिशब्द से रोने लगा। अबूबक्र ने उसे अपनी बगल में दबालिया और कहा कि मत घबरा, खुदा हमारी जय करेगा। फिर मुहम्मद ने अपनी फौज में आकर मुसलमानों को उभारा और कहा कि जो मुसलमान जिस काफिर को मारेगा, उस के कपड़े आदि उसी मुसलमान को मिलेंगे, परन्तु यह नियम है कि मुँह न मोड़े। जो मरजावेगा तो बहिश्त में जावेगा। यह सुनकर मुसलमानों का उत्साह बढ़ा। एक मुसलमान खजूरें खाता हुआ तलवार लेकर कूद पड़ा-और कुरैश की तरफ़ दौड़ा और मारा गया। इस के अनन्तर आँधी आई, मुसलमानों ने कोलाहल किया कि हमारी सहायता को फ़रिश्ते आये हैं। फिर कुरैश और मुसलमानों में खूब तलवार चली, १४ मुसलमान और बहुत से कुरैशी मारे गये और ७० कुरैशी मुसलमानों ने

कैद करलिये। मुहम्मद के छप्पर के पास (साद) खड़ा हुआ देखता था कि मुसलमान लोग कुरैश को कैद करते थे। उस को यह बात बुरी प्रतीत हुई। उसका चित्त चाहता था कि सब मारे जावें, कैद करने से क्या लाभ है। मुहम्मद ने चाहा कि मेरा चित्त भी यही चाहता है कि सब मारे जावें, परन्तु खुदा की इच्छा है कि मारे न जावें, बल्कि बेइज्जत हों। फिर मुसलमानों ने २४ मनुष्य रईस कुरैश जो मारे गये थे एक कुए में डाल दिये और कैदियों को दृढ़ बन्धन कर पहरे में रक्खा और सो रहे। तीन दिन वहाँ डेरा रहा, फिर कूच की तैयारी की और मुहम्मद सवार होकर अपने यारों सहित उस कुए पर गया जिसमें मृत कुरैश पड़े थे और एक २ का नाम लेकर पुकारा और कहा कि मेरी आज्ञा क्यों न मानी उसका फल देखा। उमर खलीफा बोला कि मुर्दों से बोलते हो जिनमें जीव नहीं है। मुहम्मद ने कहा कि खुदा की कसम तुम्हारी सदृश सुनते हैं।

(राय) बुद्धिमान् विचार करें कि मुहम्मद का यह कथन (कि खुदा की कसम तुम्हारी सदृश सुनते हैं) कदापि सत्य नहीं होसकता। क्योंकि सुनना चेतन का धर्म है, मृत शरीर के लिये यह असम्भव है।

बदर में मुहम्मदी फौज के तीन भाग थे। एक भाग लड़ता था और एक माल असबाब लूटता था और लोगों को पकड़ कर कैद करता था और एक मुहम्मद के आस पास उसकी जान बचाने को पहरा देता था। फिर मुहम्मद ने वहां से कूच किया। मार्ग में बैठ कर लूट का माल बाँटा। एक तलवार और एक ऊँट मुहम्मद ने अपने भाग के सिवाय पसन्द करके लिया कैदियों में दो मनुष्य जो कि मुहम्मद के सनातन शत्रु थे, उन्हें

मुहम्मद ने जान से मार डाला। उमर इब्नख़िताब की इच्छा थी कि सारे क़ैदी मारे जावें, परन्तु अबूबक ने कहा कि यह क़ैदी अपनी जाति और नाते वाले हैं इनसे रुपया लेकर छोड़ देना चाहिये शायद कभी मुसलमान होजावें। यह बात मुहम्मद को पसन्द आई और कहा कि ए मेरे यारों, तुम निर्धन हो चाहिये कि यह क़ैदी विना रुपया लिये न छोड़े जावें। फिर जो लोग निर्धन क़ैद हुए थे वह इस इक़रार पर छोड़े गये कि आगे को मुसलमानों से न लड़ें—और जो लोग लिखना पढ़ना जानते थे उनको यह आज्ञा हुई कि अन्सार के लड़कों को लिखना पढ़ना सिखलावें और जो धनवान् थे उनसे कहा कि धन लाओ तब छूटोगे। निदान १ हज़ार दिरम से कम किसी से न लिया और किसी २ को ४ हजार दिरम तक लेकर छोड़ा।

(अब्बास) मुहम्मद का चचा गिरफ़्तार हो कर जब मुहम्मद के सामने आया और उसका (फ़िदयः) नियत होने लगा तब वह बोला कि मैं तो मुसलमान हूं, क़ुरैश मुझे मक्के से ज़बरदस्ती लाये थे। मुहम्मद ने कहा कि तू हमारे साथ लड़ा इसलिये तू शत्रु है। अब मुझे फ़िदया देना चाहिये। अब्बास बोला कि मेरे पास धन नहीं है कहाँ से दूं। ए मुहम्मद क्या तू चाहता है कि मैं तेरा चचा लोगों से भीख माँगकर तेरे लिये फ़िदया लाऊँ। मुहम्मद ने कहा कि वह सोना कहाँ है जो आते समय अपनी बीबी को सौंप आया है। निदान (अब्बास) मुसलमान होगया।

इसी वर्ष में मुहम्मद ने उमर नामक एक मुसलमान को आज्ञा दी कि तू रात को जाकर (इसमाय) नामक स्त्री अमुक यहूदी की बेटी को मार आ। वह स्त्री मुहम्मदियों के दोष निरूपण और मुहम्मद की निंदा किया करती थी, इस कारण

मुहम्मद ने चाहा कि यह स्त्री किसी प्रकार अप्रकट मारी जावे। उक्त मुसलमान मुहम्मद की आज्ञानुसार रात्रि को गया। वह स्त्री अपने बच्चों को लेकर सोरही थी, उसका एक बच्चा दूध पीता था, उमर उसके घर में चोर के समान गया और उस स्त्री की छाती पर तलवार मारी, वह मरगई। यह रात ही रात मदीने की ओर भागा और प्रातः काल की नमाज मदीने में आकर मुहम्मद के साथ पढ़ी। मुहम्मद ने नमाज़ के उपरान्त कहा कि तू उस स्त्री को मार आया। उसने कहा कि हाँ मार आया। मुहम्मद प्रसन्न हुआ और उस स्त्री के विषय में कुछ कुवचन मुख से निकले।

(राय) इस वृत्तान्त से जाना गया कि मुहम्मद बड़ा निर्दयी था ओ कि तुच्छ दोष पर स्त्री का वध कराया और मुहम्मद के यार अर्थात् उमर की निर्दयता तो अकथनीय है कि सोती हुई स्त्री को जिसका बालक दूध पीता था कठोर चित्त करके तलवार से मारा।

कहते हैं कि एक दिन बाज़ार में किसी सुनार की दुकान पर कोई मुसलमानी बैठी थी, किसी यहूदी ने चुपके से आकर उसके तहबंद और ऊपर के कपड़े में गाँठ लगादी-जब वह उठी तो उस की बेपर्दगी हो गई—लोग हँसे। (उस समय में मुसलमानी औरतें फ़क़ीरों की सदृश तहबंद अर्थात् धोती थी जिनके नीचे और कोई कपड़ा न होता था।) वहाँ कोई मुसलमान भी खड़ाथा, वह तलवार खेंचकर आया और उस यहूदी को मार डाला, यहूदी भी इकट्ठे होगये और उस मुसलमान को मार लिया—मुहम्मद यह सुन कर क्रोध में भरगया और उनकी बस्ती जा घेरी निदान उनको जलायवतन करदिया, वह लोग वहाँ से निकल कर शामदेश को सरहद में पहुँचे

परन्तु वहाँ भी थोड़े दिनों के उपरान्त मुसलमानों ने जाकर उन्हें मारा और उन का माल असबाब लूट लाये। मुहम्मद ने उस लूट में से अपने पाँचवें हिस्से के सिवाय दो तीन जिरह तलवार और तीन नेज़े पसंद करके अधिक लिये।

फिर एक बार मुहम्मद को खबर मिली कि अमुक स्थान पर कुछ लोग इकट्ठे हैं तब ४० आदमी लेकर उस तरफ को गया पर वहाँ कोई न मिला। जङ्गल में कुछ लोग ऊँट चरारहे थे मुहम्मद ने उन सब ऊँटों को लूट कर पाँचवाँ हिस्सा ले लिया शेष और आदमियों ने बाँट लिये।

सन् ३ हिजरी का हाल—मुहम्मदको ख़बर मिली कि कुरैश के मुसाफिरों का एक क़ाफला एराक की राह से शामदेश की तरफ़ व्यापार को जाता है—इस लिये मुहम्मद ने जैद के बेटे हारिस को ५०० सवार देकर उस क़ाफ़ले के लूटने को भेजा जब जैद उस काफले पर जापड़ा तब बड़े२ लोग उस काफ़ले के भाग गये-जैद ने सब माल और असबाब अपने कब्जे में करलिया, और मदीने की राह ली-मुहम्मद ने उस माल का पाँचवाँ हिस्सा जो २० हजार दिरम का माल था ले लिया शेष माल यारों को बाँट दिया।

इसी साल में मुहम्मद ने काब के बेटे अशरफ़ का खून कराया। यह मनुष्य एक कवि था—मुहम्मद और मुसलमानों की निंदा करता था-मुहम्मद ने अपने यारों से कहा कि तुममें ऐसा कौन है जो उसका सर काटलावे-क्योंकि वह हमारा शत्रु है। एक मुसलमान बोला कि मैं उस का सर काटूँगा परन्तु मुझे आज्ञा दो कि मैं जो चाहे सो छल करूँ। मुहम्मद ने कहा चाहे सो कर, परन्तु पहिले (सादसे) सम्मति कर ले। जब इस ने साद से सम्मति की तो उस ने कहा कि पहिले उसके

पास चलना चाहिए और अपनी गरीबी वर्णन कर के उससे कुछ कर्ज़ माँगें जब वह लोगोंसे अगल होकर बातें करे तो उस का सर काट लें यह सम्मति करके मुसलमान इकट्ठे हुये और उसके पास गये।

पहिले (अबूनायला) को उस के घर भेजा। कवि ने उस को बिठाया दोनों बातें करने लगे। अबूनायला बोला कि यह मुहम्मद हमको बड़ा दुःख देता है उसकी लूट मार से व्यापार के मार्ग बन्द होगये। कवि ने कहा कि अभी क्या है आगे देखना। निदान अबूनायला ने और बहुत सी बातें बना कर उसे प्रसन्न करके कहा, कि हमें कुछ द्रव्य चाहिये है तुझ से कर्ज़ लेना चाहते हैं जो चीज़ तू कह रहन कर दें। वह बोला अच्छा अपनी स्त्रियें मेरे पास रहन करदो। अबूनायला ने कहा कि यह तो हम नहीं करसक्ते क्यों कि तू खूबसूरत है वह तेरी ही हो रहेंगी। कवि बोला कि अपने लड़कों को रहन रख दो, उस ने कहा कि इसमें भी निन्दा है हम अपने शस्त्र रहन कर सकते हैं। कवि ने कहा कि अच्छा जब चाहो अपने शस्त्र ले आओ और रुपया ले जाओ। तब अबूनायला यारों के पास आया और सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया। फिर सब मुहम्मद के पास आये और सारा हाल उस से कहा, जब रात हुई सब इकट्ठे हुये और शस्त्र लेकर उस के घर को चले। मुहम्मद भी इस विषय की सम्मति करता हुआ उन के साथ हुआ कुछ दूर जाकर आप ठहर गया और यारों से कहा कि तुम जाओ, फिर मुहम्मद आप तो घर को लौट आया और वह पाँच यार कवि के घर पर जा पहुंचे। कवि ने उसी दिन अपनी शादी की थी नई बीबी के साथ पलंग पर था कि उन्होंने दरवाज़े पर खड़े होकर उसे पुकारा जब वह उठा उस

की स्त्री ने बहुत कहा कि बाहर मत जाओ कवि ने कहा कि अबूनायला मेरा भाई है कुछ संशय नहीं निदान जब कवि बाहर आया उस के वस्त्रों में से सुगंध आती थी। थोड़ी देर मुसलमानों ने उस से बातें कीं, फिर अबूनायला ने कहा कि आप हमारे साथ थोड़ी दूर चलिये उस ने स्वीकार किया और उस के साथ चल दिया, मार्ग में अबूनायला ने कहा कि आप में से सुगंध आती है मैं आप के सर के बाल सूंघूं उस ने कहा अच्छा, तब अबूनायला ने उस के बाल सूंघे और सब यारों को सुंघाये उस बार तो छोड़ दिया, फिर दूसरी बार सूंघना चाहा, उस ने सर झुकाया, अबूनायला ने उसके बाल पकड़ लिये और यारों से कहा कि मारो, सब ने तलवार चलाई कवि ने हाय २ की उस के घर के लोग शब्द सुन कर दौड़े मुसलमान उसका सर काट कर दूसरे मार्ग को चल दिये मार्ग में पुकार २ कर (अल्ला हो अकबर) कहने लगे। उस समय मुहम्मद इशा की नमाज़ में था समझ लिया कि कार्य सिद्ध होगया। तदनन्तर कवि का सर मुहम्मद के सामने मसजिद में आया, मुहम्मद अतिप्रसन्न हुआ और कहा कि अब से जो यहूदी दाँव पर चढे उस का सर काट लिया करो प्रातःकाल कवि के रिश्तेदार मुहम्मद के पास फर्यादी आये और कहा तुम्हारे यारों ने कवि को विना अपराध मार डाला मुहम्मद ने कहा कि वह हमारा शत्रु था अच्छा किया कि उसे मारा।

(राय) इस वृत्तान्त से ज्ञात गया कि मुहम्मद ने द्वेष बुद्धि से कवि के मरवाने में प्रयत्न किया और उस का खून करनेके लिये मुसलमानों को सब प्रकारसे छल करनेको आज्ञा दी। जब मुहम्मद के यारों ने छल और विश्वासघात करके

कवि का सर काटा और मुहम्मद के सामने ला रक्खा, तब मुहम्मद को महान् हर्ष हुआ बुद्धिमानोंको समझना चाहिये कि किसी को विना अपराध मरवाना और अपने शिष्यों को क़त्ल करने की आज्ञा देना सत्पुरुषों का धर्म नहीं है। इसी वर्ष में मुहम्मद के शिष्यवर्ग में से (अबदुल्ला अतीक) आदि ने मुहम्मद से प्रार्थना की कि हम भी किसी तेरे शत्रु को मारें जिस से हमें भी बड़ाई मिले मुहम्मद ने उन्हें आज्ञा दी खैबर की तरफ एक गढ़ी में (अबराफ़अ) नाम एक सौदागर बड़ा धनवान् रहता था वह लोग उसकी गढ़ी के पास पहुंचे सायंकाल होगया था। अबदुल्ला ने यारों से कहा कि तुम यहां ठहरो मैं दरवान के पास जाकर विनय करूँ कि वह मुझे क़िले के भीतर जाने दे तब अबदुल्ला उन्हें वहां छोड़कर क़िले के दरवाजे तक पहुंचा और कपड़ा सर पर डाल कर ऐसा बैठगया मानो कोई मल मूत्र त्याग कर रहा है। दरवान ने इसे बैठा देखकर जाना कि यह कोई मनुष्य क़िले ही का है इसलिये कहा कि किले में आता है तो शीघ्र आ मैं दरवाजा बन्द करता हूं यह सुनकर अब्दुल्ला किले में चला गया, और कहीं घात में बैठ रहा दरवान दरवाजा बन्द करके और ताला लगा कर तालीको किसी खूंटी पर लटकाकर सोरहा। अबदुल्लाने घात से निकल कर दरवाजे का ताला खोला ताकि भागने के लिये मार्ग खुला रहे उस समय अबूराफ़अ बालाखाने पर था। जब वह अपने घर जाकर सोया अबदुल्ला भी उसी घरमें जाघुसा। परन्तु अंधेरेमें इसको यह निश्चय न हुआ कि (अबूराफ़अ) किस पलँगपर है तब अब्दुल्लाने (अबूराफ़अ)को आवाज़ दी वह बोला कौन। यह सुन कर अबदुल्ला ने उसके तलवार मारी परन्तु वह नमरा। अबदुल्ला बाहर निकल आया फिर भीतर जाकर और

आवाज़ बदल कर बोला कि ए (अबूराफ़अ) तुझे किसने पुकारा था वह बोला कि कोई मनुष्य इस घर में छुपा हुआ है उसने मेरे तलवार मारी है यह सुनकर अबदुल्ला ने फिर उसके एक तलवार मारी तब भी वह न मरा, तब अबदुल्लाने उसके पेट पर तलवार रख कर उसे ऐसा दबाया कि उसके दो टुकड़े होगये और अबदुल्ला भाग निकला।

(राय) इस वृत्तान्त से भी मुहम्मद का द्वेष और अबदुल्ला आदि का कपट प्रत्यक्ष है सज्जन पुरुष ऐसा कदापि नहीं करते।

इसी वर्ष में (उहद) की लड़ाई हुई, उसका वृत्तान्त यह है कि बद्र की लड़ाई में कुरैश लोगों ने प्रतिज्ञा की थी कि हम मुहम्मद से बदला लेंगे, इसलिये उन्होंने चारों ओर को खत भेजे और मुहम्मद से लड़ने को बहुत मनुष्य इकट्ठे हुए, अब्बास नाम एक मुसलमान उस समय मक्के में था, उसने मुहम्मद को खबर दी कि कुरैश का यह इरादा है। जिस समय कुरैश की फौज एक मुकाम पर आपड़ी, मुहम्मद ने दो मनुष्य उसकी खबर लेने को भेजे, उन्होंने कुरैश का संपूर्ण हाल मुहम्मदसे आकर कहा, मुहम्मद डरगया और यह कहा कि हम मदीने से बाहर न निकलेंगे। परन्तु फिर मुसलमानों के समझाने से उनके साथ निकलना स्वीकार किया और अपने शरीर की रक्षा के लिये उस दिन दो बक्तर नीचे ऊपर पहरे और शस्त्र बाँधे बड़ी देर में घर से बाहर निकला जब लोगों ने मुहम्मद को बहुत शस्त्र बांधे देखा तो कहा कि यदि तुम्हारा चित्त लड़ाई में जाने को न करे तो मत चलो। मुहम्मद ने कहा कि मैंने तो पहिले ही कहा था कि मदीनेसे बाहर न निकलो पर तुमने न माना। हम शस्त्र बांध कर लड़े बिना

नहीं उतारते, अब चलना अवश्य है। निदान मुहम्मद बहुत मनुष्यों सहित शहर से बाहर आया और लश्कर की संभाल की। जिन लोगों को फेरना उचित जाना उन्हें फेर दिया, जिन्हें साथ लेना था साथ लिया। रात को मुहम्मद ने अपने डेरे पर पहरा खड़ा किया, प्रातःकाल मुकाम उहद पर पहुंचे परन्तु इब्न (अबीसलूल) कि जिसके साथ करीब ३०० मनुष्य के थे मुसलमानों से अलग होकर मदीने को चला आया, मुसलमानों ने उसको बहुत समझाया कि फिर कर मत जा, वह सब से बोले कि मुहम्मद को हमने समझाया कि लड़ाई के लिये मत निकल, हमारा कहना न माना, लड़कों की सम्मति से निकल आया इसलिये हम न लड़ेंगे। फिर मुहम्मद ने यारों को आज्ञा दी कि फ़ौज की सफें बाँधें, जब इनकी सफ़ बंदी हो चुकी, तब कुरैश की तरफ़ से अबूआमिर ने मुसलमानों की ओर तीर चलाया और उसके सब साथी भी तीर चलाने लगे। तब मुसलमान भी बड़े ज़ोर शोर से तीर और पत्थर मारने लगे अबूआमिर भाग गया, फिर मुसलमानों ने कुरैश के कुछ मनुष्य मारे और कुछ घायल किये। कुरैश पहाड़ की तरफ भागे, उनकी औरतें रोने लगीं। मुसलमान उन औरतों की तरफ दौड़े और माल लूटने लगे कुरैश ने क्रोध में आकर फिर तलवार पकड़ी और मुसलमानों की सेना में घुस गये। निदान मुसलमान ऐसे घबरा गये कि आपस में कट मरे और शोर मचगया कि मुहम्मद के साथ केवल १४ मुसलमान रह गये। एक कुरैश मुहम्मद के पत्थर मारता था उसने यहां तक पत्थर मारे कि मुहम्मद का मुंह रुधिर से लाल होगया और कई एक घाव भी आये फिर एक कुरैश मुहम्मद को [illegible] मारने लगा। उसके हाथ से मुहम्मद के

दाँत और होंठ पर एक पत्थर ऐसा लगा कि नीचे का होंठ फटगया और एक दाँत जड़ से उखड़ गया, फिर एक पुरुष ने मुहम्मद के सर में एक पत्थर मारा। शरह बुखारी में लिखा है कि ७० घाव तलवार के मुहम्मद के लगे थे फिर एक कुरैश ने मुहम्मद के तलवार मारी मुहम्मद एक गढ़ेमें गिरपड़ा और लोगों की दृष्टि में न आया, कुरैश ने जान लिया कि मुहम्मद मारा गया और मदीने में भी मुहम्मद के मारे जाने की ख़बर प्रसिद्ध हो गई, इसलिये मदीने में मुहम्मद के मित्र और नातेदार घबरा गये। अबूसफ़याँ कुरैशने लड़ाई के स्थान में पुकार कर कहा कि आज बदर का बदला होगया, कभी तुम्हारा वार चल गया, कभी हमारा। उस समय उमर मुसलमान ने चिल्ला कर कहा कि हमारे मुरदे बहिश्त में गये और तुम्हारे दोज़ख़ में। फिर अबूसफ़याँ जय को प्राप्त होकर मक्के को चला गया। मुहम्मद ने अपने यारों से कहा कि निश्चय करो कि यह मक्के को गया या मदीने को लूटने जाता है। निदान निश्चय होगया कि वह मक्के ही को गया। कहते हैं कि उस समय १४ औरतें मुसलमानों की हार की ख़बर सुनकर मदीने से उहद तक दौड़ी आईं इनमें मुहम्मदकी बेटी फ़ातमह भी थी, उसने अपने बापका यह हाल देखा तो चिपट कर रोने लगी, मुहम्मद भी रोया फ़ातमह मुहम्मद के घाव धोती थी और अली पानी लाता था परन्तु रुधिर बंद न होता था, उस समय एक चटाई का टुकड़ा जलाकर उसकी राख घावों में भरी और बहुत दवा बूटी करी जब आराम हुआ। फिर मुहम्मद ने (अमीर हमज़ह) का हाल पूछा तो प्रकट हुआ कि वह कुरैश के हाथ से मारा गया, बल्कि उसके नाक और कान

भी कुरैश काट कर ले गये। निदान जो मुसलमान कि उस जगह मरे थे उन्हें उसी जगह गाड़ दिया और जो घायल थे उन्हें कहा गया कि अपने २ घर जाकर दवा करो।

(राय) मुसलमान कहते हैं कि मुहम्मद खुदा का मित्र था और जो काम करता था खुदा की आज्ञा ही से करता था। अब मैं प्रश्न करता हूँ कि इस लड़ाई में खुदा की आज्ञा से गया था या अपनी बुद्धि से, जो कहो कि आज्ञा ही से गया था तो जाना गया कि वह खुदा का मित्र न था, क्योंकि खुदा अपने मित्र को लड़ाई में भेजकर ऐसा बेइज्जत न कराता और जो अपनी ही बुद्धि से गया तो वह कथन कि जो काम खुदा की आज्ञा ही से करता था; मिथ्या हुआ। मुसलमानोंका यह कहना कि लड़ाई में मुहम्मदकी सहायताको फ़रिश्ते आयेथे, केवल गाल बजाना है। क्योंकि जो फ़रिश्ते आते तो मुहम्मदके तलवार के ७० घाव न आते, न दाँत टूटते, न होठ फटता, जब कि मुहम्मद गढेमें गिरपड़ा और कुरैशने जान लिया कि मुहम्मद मारागया तो मुहम्मदकी जान बची और मुसलमानोंके बहुत प्रधान पुरुष मारे गये। अब मुसलमान यही कह सक्ते हैं कि फरिश्ते आये तो थे परन्तु कुरैश के सामने कुछ पार न बसाई। बुद्धिमान् समझ लें कि मुहम्मद में सत्पुरुषों का कोई भी लक्षण न था; न इस ने धर्ममार्ग को चलाया, न आप ईश्वराराधन किया, विषयासक्त रहा और धनसंग्रह की लूट खसोट करता रहा। अरब के बहुत लोग तो लूट खसोट से धनके लालचसे मुसलमान होगये और कुछ मूर्ख इस के बहकाने में आगये, कुछ लोग अपना जान माल बचाने को मुसलमान बने।

इसी साल में सफयाँ इब्नख़ालिद को मुहम्मद ने क़त्ल कराया और इस कार्य के लिये अबदुल्ला इब्नअनीस मुसल-

मान को भेजा। अबदुल्ला कहता है कि मैंने मुहम्मद से कहा कि उसके मारने में जो छल चाहूँ सो करूँ, मुहम्मदने आज्ञा दी कि तेरे चित्त में आवे सो छल कर परन्तु उस को किसी प्रकार से मार, निदान अबदुल्ला सफ़याँ के पास गया और उस से कहा कि मैंने सुना है कि तू मुहम्मद से लड़ने के लिए मनुष्य इकट्ठे करता है, मैं भी इसीलिये आया हूं कि तेरे साथ होकर उससे लड़ूँ। निदान जब सबलोग सोरहे अबदुल्ला ने तलवारसे सफ़याँ का सर काटलिया, उसी समय मदीने की तरफ़ भागा। यद्यपि सफ़याँ के मनुष्य उस के पीछे दौड़े परन्तु यह उन के हाथ न आया। रात को चलता था, दिन को गढ़ों में छुपा रहता था, इसी प्रकार चलता २ मदीने में आया और सफ़याँ का सर मुहम्मद के आगे रक्खा। मुहम्मद अति प्रसन्न हुआ।

सन् ४ हिजरी का हाल—इस वर्ष के आदि में (वीर मऊना) का रहने वाला एक पुरुष मुहम्मद के पास आया मुहम्मद ने उस से कहा कि मुसलमान होजा, उस ने कहा कि मेरी जाति के बहुत लोग हैं तू मेरे साथ मुसलमानों को भेज वह उन को मुहम्मदी मत का उपदेश करें निश्चय है कि वह लोग मुसलमान होजायेंगे, तब मैं भी हो जाऊँगा। मुहम्मद ने ७० मनुष्य कारी अर्थात् जो लोग स्वर के साथ क़ुरान पढ़ते थे उस के साथ भेजदिये और एक पुरुष को उन का प्रधान बनाया। जब यह लोग मुकाम वीर मऊनः पर पहुंचे, वहां डेरा डाला। वीर मऊना के लोग उन पर चढ़ आये और संपूर्ण मुसलमानों के सर काट डाले।

(राय) अब मुहम्मदी लोगोंसे पूछना चाहिये कि मुहम्मद जो काम करता था वह खुदा की आज्ञा ही से करता था। इन

७० क़ारियों को मुहम्मद ने ख़ुदा की आज्ञानुसार मरवाया या आप धोखा खाया। वास्तव में बात यह है कि मुहम्मद ने अरबके मूर्खों को यह धोखा दे रक्खा था कि मेरे पास जब्रील आता है और ख़ुदा की आज्ञा लाता है। यदि जब्रील आता होता तो मुहम्मद ऐसे धोखे क्यों खाता और अपने प्रधान पुरुषों को क्यों मरवाता।

सन् ५ हिजरी का हाल।

इस साल में हज़रत की बेटी ज़ैनब ज़ैद की स्त्रीको मुहम्मद ने अपनी स्त्री बनाया। रौज़तुल अहबाब वाला लिखता है कि प्रायः तफ़सीर और हदीस वालों ने ज़ैनब के वृत्तान्त को इस प्रकार से वर्णन किया है कि कोई पूरा मुसलमान मुहम्मद के विषय में निश्चय न करेगा कि उसने ऐसा किया है। इस से प्रकट है कि रौज़तुल अहबाब वाले ने इस वृत्तान्त में मुहम्मद के अवगुणों को छुपाया और पहले तफ़सीर हदीस तवारीख़ वालों को झूँठा ठहराया, परन्तु कौवे का पर धोने से श्वेत नहीं होता। अब इस वृत्तान्त को जिस प्रकार से रौज़तुल अहबाब वाले ने वर्णन किया है उसी रीति से यहां लिखा जाता है। ज़ैनब पहिले ज़ैद की जोरू थी, फिर मुहम्मद ने उसे अपनी जोरू बनाया। रिवायत है कि प्रथम मुहम्मद ने ज़ैनब को ज़ैद की जोरू बनानेके लिये माँगा था और यह स्त्री मुहम्मद के चचा की बेटी थी। ज़ैनब न समझी कि मुझे ज़ैद के वास्ते माँगते हैं, बल्कि ऐसा समझा कि मुहम्मद अपने लिये माँगता है, इसलिये राज़ी होगई। पर जब उसे प्रकट हुआ कि ज़ैद के लिये माँगता है तो इन्कार किया, क्योंकि यह ख़ूबसूरत औरत और मुहम्मद की चचेरी बहन थी और ज़ैद पहले मुहम्मद का ग़ुलाम था और फिर मुहम्मद ने उसे

मुँहबोला बेटा बना लिया था, इसलिये ज़ैनब ने कहा कि मैं ज़ैद को नहीं चाहती और अबदुल्लः ज़ैनब का भाई भी ज़ैद को अपनी बहन को देना न चाहता था और उस देश में मुँहबोले बेटे को सब बात में असली बेटे की समान जानते थे, इस लिये मुहम्मद का विचार था कि ज़ैद मेरा बेटा हुआ है, उसकी शादी किसी इज़्ज़तदार औरतसे करूंगा इस कारण मुहम्मद ने ज़ैनब से कहा कि इन्कार से कुछ लाभ नहीं, स्वीकार करना चाहिये। उसने कहा कि मैं विचार करलूं। उसी समय मुहम्मद ने कहा कि सूरः अहज़ाब की यह आयत आई है:—

अर्थात् किसी मुसलमान स्त्री पुरुष को अपने काम का इख्तियार नहीं है जब खुदा और रसूल ने एक बात ठहरादी।

उस समय ज़ैनब और अबदुल्लः ने कहा या रसूल अल्लः हम राज़ी हैं तेरी तजवीज़ पर। फिर ज़ैनब ने यह भी कहा कि या रसूल अल्लः क्या तेरा दिल चाहता है कि ज़ैद मेरा खाविंद बने। मुहम्मदाने कहा हाँ निश्चय मेरी इज्जत चाहती है, तब वह लाचार राज़ी हुई और उसका निकाह ज़ैद के साथ किया गया। एक वर्ष से कुछ अधिक उसके घर में रही। फिर एक दिन मुहम्मद ज़ैद के घर में गया। वह स्त्री स्नान कर रही थी, मुहम्मद उसके रूप को देख कर चकित होगया। फिर एक दिन ज़ैद मुहम्मद के पास गया और कहा कि ज़ैनब मेरे साथ क्लेश रखती है या रसूल अल्लः मैं उसे तलाक़ देना चाहता हूं। मुहम्मद चित्त में प्रसन्न हुआ, परन्तु प्रकट में कहा कि खुदासे डर, उसे तलाक़ न दे। रौज़तुलअह-बाब में लिखा है कि मुहम्मद ने खुदासे मालूम किया था कि ज़ैनब इसकी स्त्री होगी, इसलिये उसका चित्त चाहता था

कि ज़ैद उसको तलाक़ देदे, परन्तु मुहम्मद ज़ैद को वास्ते तलाक़ देने ज़ैनव के आज्ञा देने में शर्म करता था और इस से डरता था कि लोग कहेंगे कि अपने बेटे की जोरू को लेना चाहता है, क्योंकि उस समय में लेपालक बेटे की जोरू औरस पुत्र की समान हराम अर्थात् अग्राह्य समझी जाती थी, इस लिये मुहम्मद ने प्रकट में उससे यह कहा कि खुदा से डर, तलाक़ न दे, किन्तु चित्त में उसको तलाक़ दिये जाने से यह अति प्रसन्न था। निदान दूसरी वार ज़ैद आया और कहा कि अब मैं ज़ैनव को तलाक़ दे आया। उस समय मुहम्मदने कहा कि यह आयत आई है सूरह अहज़ाव अर्थात् जब तक कहा तूने ज़ैद को जिसपर अल्लः और रसूल ने अनुग्रह किया है कि न तलाक़ दे अपनी जोरू को और डर अल्लः से ए मुहम्मद तू तो छुपाता था, अपने दिल में ज़ैनव का इश्क़, अल्लह इस वात को प्रकट करने वाला था और तू लोगों से डर कर अपना भेद छुपाता था, खुदा से अधिक भय करना योग्य है।वस जब ज़ैद उसे तलाक़ देचुका तो हमने उससे तेरा निकाह करदिया ताकि मुसलमानों से लेपालक बेटेकी जोरू ग्राह्य होजावे और यह खुदा का काम पहिले ही से किया हुआ था। फिर जव ज़ैनव की (इद्दत) पूरी होगई तब मुहम्मद ने ज़ैद से कहा कि तूही जा और ज़ैनव से कह कि मुहम्मद तुझे अपनी जोरू वनाना चाहता है—और उस को इसलिये भेजा कि लोग यह न कहें कि उसकी जोरू बलात्कार लीगई, वल्कि यह कहें कि उसने अपनी प्रसन्नता से मुहम्मद को दी है। निदान ज़ैद कहने आया, ज़ैनव उस समय आटा गूंद रही थी। ज़ैद कहता है कि मैं ज़ैनव के भय से उलटे पैरों घर में गया ताकि उसके मुंह पर मेरी दृष्टि न पड़े।

निदान ज़ैद ने जाकर कहा—खुशख़बरी हो तुझे ए ज़ैनब कि मुहम्मद तुझे लेना चाहता है। ज़ैनब बोली कि मैं अभी इस बात का उत्तर नहीं देती, जब तक कि खुदासे सम्मति न करलूं। फिर यह दुआ माँगी—

ए खुदा मुझे तेरा रसूल लेना चाहता है, यदि मैं उसके योग्य हूं तो मेरा निकाह उसके साथ तूही करदे। उसी समय दुआ स्वीकार हुई और मुहम्मद पर यह आयत आई—सूरह अहज़ाब।

अर्थात् जब ज़ैद उसे तलाक देचुका तो खुदा ने तेरा निकाह उससे करदिया। कहते हैं कि उस समय मुहम्मद आइशा के घरमें बैठा था, जब यह आयत आई मुहम्मद हँसा और कहा कोई है कि ज़ैनब के घर जावे और उसे खुशख़बरी दे कि खुदा ने उसे मेरी जोरू बनादिया। एक लौंडी दौड़ी और ज़ैनब से जाकर कहा, तब ज़ैनब ने प्रसन्न होकर कुछ भूषण उसे इनाम में दिये और कहा कि अल्लः के नाम पर दो महीने रोज़ः रक्खूँगी, जिसने मुझे पैग़म्बर की जोरू बनाया इसके उपरांत मुहम्मद बिना पूछे उसके घरमें चला गया। उस समय ज़ैनब नंगे सर अपने घर में बैठी थी, बोली या रसूल अल्लः बेनिकाह और बे गवाह आप घरमें चले आये। मुहम्मद ने कहा अल्लः ने आसमान पर निकाह पढ़ा और जब्रील गवाह हुआ। तदनंतर एक बकरी मारी गई, सब लोग खा पीकर उस घरमें बातें करने को बैठ गये और ज़ैनब सब के सामने दीवार की तरफ मुँह करके बैठी थी। मुहम्मद चाहता था कि किसी प्रकार यह लोग शीघ्र चले जायँ, परन्तु लज्जा के कारण मुख से नहीं कहता था। फिर आप खड़ा होगया ताकि लोग उठजावें और औरत अकेली रहे, परन्तु

यह लोग न उठे। मुहम्मद को बड़ा क्रोध आया। कुछ देर के उपरांत वह लोग उठगये, केवल तीन मनुष्य बैठे रहे। मुहम्मद उनसे लज्जा के कारण न कह सका कि जाओ, परन्तु आप बार बार और स्त्रियों के घरों में जाता और शीघ्र २ बाहर आता, बारम्बार उन पुरुषों को सलाम कहता, पर वह न टलते थे। जब मुहम्मद बीबियों के घरोंमें से फ़िर आया तो उन तीन पुरुषों ने पूछा कि या हज़रत आपकी जोरुओं का मिज़ाज अच्छा है। इसी प्रकार कई बार हुआ, फिर एक चला गया दो स्थिर रहे। लाचार होकर मुहम्मद फिर ज़ैनब के घर में आया और उन दो पुरुषों के टलाने के लिये किसी और काम में लगगया, तब वह वहाँसे चले गये। किसीने मुहम्मद को ख़बर दी कि अब ज़ैनब अकेली है और घर ख़ाली है। मुहम्मद शीघ्र घर की तरफ़ लपका। अनस कहता है कि उस समय मैंने चाहा कि मुहम्मद के पीछे २ मैं भी ज़ैनब के घरमें चला जाऊं, परन्तु मुहम्मद ने जल्दी परदा डालदिया तब मैं समझ गया और अपने घर को फिरा और मैंने आकर (अबूतल्लह) से सारा वृत्तान्त प्रकट किया। उसने कहा कि आज मुहम्मद इस प्रकार दुःखित हुआ है तो अवश्य इस विषय में कोई आयत आवेगी सो ऐसा ही हुआ कि यह आयत आई सूरह अहज़ाब।

अर्थात् ए मुसलमानों नबी के घर में न आया करो, जब तक तुम को आज्ञा न हो। खाना पकने की आशा में न बैठे रहा करो। परन्तु जब बुलाये जाया करो तो आया करो और जब खाना खा चुका करो तो इधर उधर चले जाया करो, बातों में दिल लगाकर न बैठा करो। इन बातों से नबी को दुःख होता है और उसे लज्जा आती है, परन्तु ख़ुदा सच बात से

लज्जा नहीं करता-और अब नबी की जोरुओं से कुछ बातें करना हो या कोई वस्तु माँगनी हो तो परदे के बाहर खड़े होकर माँग लिया करो। उन औरतों से कहते हैं कि जब मुहम्मद ने ज़ैनब को लेलिया तो लोगों ने तान करना शुरू किया और कहा कि मुहम्मद ने अपने बेटे की जोरू से निकाह कर लिया उस समय यह आयत आई सूरह अहज़ाब अर्थात् मुहम्मद किसी आदमी का बाप नहीं है, परन्तु खुदा का रसूल और आख़िरी नबी—

(राय) इस वृत्तान्त से दो बातें स्पष्ट जानी जाती हैं-एक तो यह कि मुहम्मद ने समय २ पर अपने कार्यानुसार क़ुरान बनाया है और मूर्खों को अपने वश में करने के लिये खुदा का क़ौल बताया है।

दूसरे यह कि मुहम्मद बड़ा विषयी था कि जिसने अपने बेटे की जोरू को भी न छोड़ा। जिस समय ज़ैनब ज़ैद के साथ निकाह करने को राज़ी न हुई तो मुहम्मद ने अपना प्रयोजन सिद्ध करने को वह आयत बनाई (कि किसी स्त्री पुरुष को अपने काम का इखतियार नहीं है जब खुदा और रसूल ने एक बात ठहरा दी।) यह आयत सुनकर ज़ैद का विवाह ज़ैनब को राज़ी करके उसके साथ करा दिया। फिर जब उस स्त्री को मुहम्मद ने देखा और ज़ैनब का इश्क मुहम्मद के हृदय में उत्पन्न हुआ और ज़ैद ने मुहम्मद से पूछा कि मैं ज़ैनब को तलाक़ देना चाहता हूं, तब मुहम्मद का चित्त तो चाहता था कि ज़ैद अपनी बीबी को तलाक़ देदे, परन्तु दुर्नामता के भय से ज़ैद को तलाक़ देने की आज्ञा न दी। जब दूसरी बार ज़ैद ने आकर कहा कि अब मैं ज़ैनब को तलाक़ दे आया तो शीघ्र अपने कार्य साधन को यह आयत सुनाई कि

जब कहा तूने ज़ैद को जिस पर अल्लः और रसूल ने अनुग्रह किया है कि न तलाक दे अपनी जोरू को और डर अल्लः से। ए मुहम्मद तू तो छिपाता था अपने दिल में ज़ैनब का इश्क़, अल्लः इस बात को प्रकट करने वाला था और तू लोगों से डरकर अपना भेद छुपाता था। खुदा से अधिक भय करना योग्य है, बस ज़ैद उसे तलाक़ देचुका, हमने उससे तेरा निकाह करदिया। इस पर (आइशा) और (अनसइब्न मालिक) कहते हैं कि यदि मुहम्मद कुरान की कोई आयत छुपा सकता तो इस आयत को अवश्य छुपा लेता।

मैं कहता हूँ कि यदि मुहम्मद यह आयत न कहता तो बेटे की जोरू को अपनी जोरू कैसे बनाता। मुहम्मद का दिल ज़ैनब के बदून तड़पा जाता था, इस लिये शीघ्र ही तीसरी वह आयत बनाई (कि जब ज़ैद उसे तलाक़ दे चुका तो खुदा ने तेरा निकाह उससे करदिया ज़ैनब को यह बात सुनाने के लिये प्रथम तो एक लौंडी को भेजा, फिर आप भी उस के घर में चला गया वह नंगे सर अपने घर में बैठी थी बोली कि या रसूलअल्लः बेनिकाह और बे गवाह आप घर में चले आये तो मुहम्मद ने कहा कि अल्ला ने आसमान पर तेरे साथ मेरा निकाह पढ़ा और जब्रील फ़रिश्तह गवाह हुआ। जब्रील का गवाह होना सर्वथा निष्फल है, क्योंकि वह मनुष्यों के सन्मुख गवाही देकर उनका भ्रम नहीं मिटा सकता। फिर मुहम्मद ने अतिकामातुर होकर लोगों के उठाने में जो कुछ प्रपंच रचा वह स्पष्ट विदित है और अनस साक्षी है जैसा कि वह कहता है कि उस समय मैंने चाहा कि मुहम्मद के पीछे २ मैं भी ज़ैनब के घर चला जाऊँ, परन्तु मुहम्मद ने शीघ्रता से परदा डाल दिया तब मैं समझ गया। निदान अनस ने वह

सम्पूर्ण वृत्तान्त अबूतल्लहको सुनाया तो उसने कहा कि आज मुहम्मद इस प्रकार दुःखित हुआ है तो अवश्य कोई आयत आवेगी। इससे जाना गया कि अबूतल्लह निश्चय जानता था कि मुहम्मद अपने प्रयोजनानुसार आयतें बनाया करता है तभी उसने ऐसा कहा कि आज अवश्य कोई आयत आवेगी सो ऐसा ही हुआ। वह आयत आई कि 'ए मुसलमानों नबी के घर में न आया करो, जब तक तुमको आज्ञा न हो' इत्यादि।

इसके उपरांत जब लोगों ने मुहम्मद की निंदा प्रसिद्ध की कि उसने बेटे की जोरू को लेलिया तब मुहम्मद ने यह आयत बनाई कि मुहम्मद किसी का बाप नहीं है।

बुद्धिमान् विचार करें कि इस वृत्तान्त में जितनी आयतें आई हैं सब मुहम्मद के प्रयोजनीय हैं। खुदा की आज्ञा कदापि ऐसी नहीं होसकती। बड़े हास्य की बात है कि जब मुहम्मद को कुरैशों ने अतिदुःख दिया और उहूद को लड़ाई में मुहम्मद के शरीर पर ७० घाव तलवार के आये तब तो खुदा से अपने मित्र की कुछ सहायता न होसकी, परन्तु जब मुहम्मद का चित्त बेटे की स्त्री पर आसक्त हुआ तो खुदा ने कुछ धर्माधर्म का ध्यान न किया और बारबार अपने मित्र की इच्छानुसार आयतें भेजकर मुहम्मद का मनोरथ पूर्ण किया।

इसी साल में हारिस नामी एक पुरुष ने कुछ मनुष्य मुहम्मद की शत्रुता पर इकट्ठे किये। जब मुहम्मद को ख़बर हुई तो वह मुसलमानों को लेकर उस पर चढ़ गया। उनकी हार हुई और मुसलमानों ने उनके स्त्री-पुरुष पकड़ लिये। आइशः कहती है कि मैं और मुहम्मद एक पानी के स्रोत पर बैठे थे, उन कैदियों में से (जवरयः) नाम एक औरत सामने

आई, उसका यौवन रूप देख कर मेरे जी में समाया कि मुहम्मद इसपर अवश्य आसक्त हो जायगा। वह औरत आकर बोली कि या हज़रत मैं मुसलमान होगई हूं और हारिस की बेटी हूं, इस लूट में मुसलमान मुझे पकड़ लाये हैं और मैं साबित इब्नकैसके बाँट में आगई हूं, आप मुझे उससे छुड़ादो और मेरे छुहारों के पेड़ जो मदीने में हैं वह मेरे बदले में उसे दिला दो ताकि मैं अपने घर को जाऊं। मुहम्मद ने कहा हम ऐसे ही करेंगे और इससे श्रेष्ठ एक और काम भी करेंगे। वह बोली इससे श्रेष्ठ काम आप और क्या करेंगे। मुहम्मद ने कहा कि हम तुझे अपनी जोरू बनाने के लिये बुलावेंगे। तब जवैरया ने कहा हाँ हज़रत इससे श्रेष्ठ और क्या है? यह बड़ी दौलत है। फिर मुहम्मद ने इस औरत को साबित इब्नकैस से छुड़ाकर अपनी जोरुओं में दाखिल किया और इस खुशी में वहाँ के सम्पूर्ण कैदी छोड़े गये।

(राय) मुहम्मद की बीबी आइशा भी जानती थी कि मेरा पति बड़ा विषयी है; क्योंकि उसने (जवैरया) स्त्री के देखते ही जान लिया कि अवश्य मुहम्मद इस पर आसक्त होजायगा सो ऐसा ही हुआ।

इस लड़ाई से जब फिरे तो मुहम्मद की स्त्री आइशा लश्कर से पीछे जंगल में अकेली रह गई, दूसरे दिन सफ़वाँ उसे अपने साथ ऊँट पर बिठा लाया। लोगों में प्रसिद्ध हुआ कि आइशा ने सफ़वां के साथ व्यभिचार किया है। हस्साबिन साबित ने कहा कि आइशा जवान और सफ़वां मुहम्मद से खूबसूरत है इस लिये लश्कर से पीछे रह गई थी कि उसके साथ दोस्ती पैदा करके खुशी हासिल करे और (मिसतह) कि जो अबूबक्र का मौसेरा भाई था और जिस ने आइशा को

पाला था, वह बोला कि आइशा सफ़वां के साथ वर्षों से है और जो जैनब मुहम्मद की स्त्री थी उसकी बहन बोली कि मैंने आइशा को सफ़वां के साथ बहुत बार देखा है। जैनब, ने भी कहा कि मेरी बहन ने आइशा को सफ़वां के साथ बहुत बार देखा है। इसी प्रकार बहुत मुसलमानों ने यह चरचा की तब मुहम्मद का स्नेह आइशा से कम होगया और उसी समय दैवयोग से आइशा बीमार हुई और एक बांदी को साथ लेकर अपनी मां के घर चली गई, परन्तु मुहम्मद का प्यार कम होने से आइशा बड़ी क्लेशित रही। जो कोई आइशा की मा के घर से मुहम्मद के पास आता उस से मुहम्मद पूछता कि वह बीमार कैसे है। फिर मुहम्मद ने (अलीबिन अबूतालिब: और आसामः बिन जैद को बुलाया और उन से पूछा कि आइशा के विषय में जो चरचा हो रही है, तुम उस को कैसा जानते हो। आसमः ने कहा कि वह पवित्र है। परन्तु अली बोला कि खुदा ने आइशा के सिवाय तुझ को बहुत स्त्री दी हैं तेरे स्त्रियों की कमी नहीं और पूछ उस बांदी से जो आइशः के पास रहती है कि तुझ से उस का सच हाल कहे। तब मुहम्मद ने बांदी से पूछा तो बांदी ने कहा कि वह छोटी लड़की है कुछ भी नहीं जानती, यहां तक कि वह सो जाती है और मैं जो आटा गूंद कर रखती हूँ उस को बकरी आकर खाजाती है। आइशा यह बात सुन २ कर अपने बाप के घर बहुत रोती थी। तदनन्तर मुहम्मद आइशा के पास गया और बैठ कर पूछा कि क्या हाल है। आइशा की मा ने कहा कि ज्वर जाड़ा है। फिर मुहम्मद ने आइशा से कहा कि यदि तू पवित्र है तो शीघ्र ही खुदा तेरी पवित्रता से खबर देगा और जो तुझ से पाप हुआ है तो खुदा से प्रार्थना कर वह तेरे

अपराध को क्षमा करें। यह सुन कर आइशा के आँसू थमे और प्रसन्न हुई। इसके उपरांत मुहम्मद बोला कि ए आइशा खुदा ने तुझ को पवित्र किया और तेरी पवित्रता में सूरह नूर की आयतें भेजीं—

(राय) इस वृत्तान्त से स्पष्ट प्रकट है कि अवश्य आइशा ने सफ़वां के साथ व्यभिचार किया और हस्सां आदि के कथनानुसार मुहम्मद को भी इसका निर्णय होगया, परन्तु जो कि पूर्व मुहम्मद का चित्त आइशा पर अति आसक्त था, और संपूर्ण स्त्रियों की अपेक्षा उसपर अधिक प्रीति करता था, उसका वियोग न सहसका तब (आसामः) और अली से पूछा कि तुम आयशा को कैसा जानते हो। अली ने स्पष्ट कहा कि खुदा ने आइशा के सिवाय तुझको बहुत स्त्री दी हैं, तेरे स्त्रियों की कमी नहीं। इसका अभिप्राय यही हुआ कि वह ग्रहण करने योग्य नहीं, उसके सिवाय खुदा ने तुझ को बहुत स्त्री दी हैं और आसामा ने जो कहा कि वह पवित्र है इसका यही कारण है, कि अमीर के सन्मुख सब उसी के अनुकूल कहा करते हैं, हर कोई यथार्थ नहीं कहसक्ता और बाँदी जो आइशा को अनजान बताती है यह केवल उसकी बनावट है। यद्यपि आइशः के सोजाने पर बकरी आटा खाजाती हो, परन्तु जब आइशा की अवस्था ६ वर्ष की थी और मुहम्मद की ५३ वर्ष की तब मुहम्मद ने उसके साथ संग किया था। फिर जो मुहम्मद ने आइशा के पवित्र होने में आयतें सुनाईं और खुदा की भेजी बताईं वह केवल मुहम्मद के प्रयोजनानुसार हैं। इससे निःसंदेह मुहम्मद की बनावट है।

इसी साल में गज़वः (अहज़ाब) हुआ। उसका कारण यह था कि मदीने के आसपासके जिन यहूदियोंको मुहम्मद ने निकाल

दिया था वे सब लोग इकट्ठे होकर मक्के में आये और क़ुरैश से मिलकर १०००० मनुष्यों की भीड़ से मदीने की तरफ़ चले जब मुहम्मद को यह ख़बर मिली तो बहुत घबराया और यारों से कहा कि अब क्या करें। एक पुरुष बोला कि हमारे देश की यह रीति है कि जब किसी शहर को कोई बड़ा लश्कर आ घेरता है और शहर वाले लड़ने की शक्ति नहीं रखते तो अपने बचाव के लिये शहर के पास एक खंदक खोदा करते हैं मुहम्मदने उसकी सम्मतिको स्वीकार किया। कुछ मुसलमानों को साथ लेकर मदीने के बाहर खंदक खोदनी प्रारम्भ की। उन दिनों बड़ा अकाल था और बड़ी सरदी थी। छः दिन में बड़ा दुःख भोग कर खंदक तैयार की। औरत और बालकों को शहरपनाह की रक्षा में बिठलाया। बनी करीज़ः के यहूदी उस समय मुहम्मद से फिर गये। कुरैशों की फ़ौज़ खंदक पर आ पहुंची। २६ या २७ दिन मदीने को घेरा। मुहम्मदी लोग बहुत तंग होगये, बल्कि बहुधा मुसलमान मुहम्मद को बुरा कहने लगे। फिर नित्य लड़ाई होती रही। एक दिन प्रातःकाल से सायंकाल तक कठिन लड़ाई रही। मुहम्मदको नमाज़ पढ़ने का अवकाश भी न मिला तब (नईम) नामी मुसलमान ने मुहम्मद से कहा कि अभीतक मेरा मुसलमान होना प्रकट नहीं मैं शत्रुओं के साथ सब प्रकार से छल कर सका हूं, जो आज्ञा हो सो करूं। मुहम्मद ने कहा जिस प्रकार से होसके शत्रुओं में फूट डाल। तब (नईम) प्रथम यहूदियों के पास गया और उनसे कहा कि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारा मित्र हूं। उन्होंने कहा कि निश्चय तू हमारा परम मित्र है जो कुछ तू कहे सो करें। तब (नईम) छल युक्त वचन बोला कि कुरैश और ग़तफ़ां मुहम्मद से इसलिये लड़ते हैं कि यदि जय हुई तो

हमारा नाम होगा और हार हुई तो वह तुमको छोड़ कर अपने २ देश को चले जाँयगे और तुमसे मुहम्मद के साथ लड़ाई न होसकेगी फिर मुहम्मद तुम्हारी शत्रुता पर कमर बांधेगा। बनीक़रीज़ः (नईम के) छल में आकर कहने लगा कि अब क्या करना चाहिये। उसने उत्तर दिया कि अब यह उचित है कि कुरैश और गतफ़ाँ के पास ख़बर भेजो कि जो हमसे मदद चाहते हो तो अपने सरदारों में से कुछ मनुष्य हमारे पास भेज दो, जिससे हमको निश्चय होजावे कि तुम मुहम्मद को जय किये विना नहीं फिरोगे और जो तुम यह बात न मानोगे तो हम भी तुम्हारे साथी नहीं। निदान बनीक़रीज़ः नईम के छल में आकर बोला कि जो कुछ नईम कहता है सच है। जब नईम ने जान लिया कि यहां मेरा छल चल गया तो वहां से उठ कर कुरैश के लश्कर में गया और एकान्त में अबूसफ़यां आदि से कहने लगा कि तुमको प्रकट है कि मैं सदैव तुम्हारा शुभचिंतक हूं और मुहम्मद की शत्रुता में अग्रणी हूं। कुरैश ने कहा कि हमको यह निश्चय है। तब नईम बोला कि मैं इस वास्ते आया हूं कि तुमसे तुम्हारे हित की बात कहूँ, परन्तु जो तुम और किसी से न कहो। उन्होंने कहा कि ऐसा ही होगा। फिर नईम बोला कि (बनीक़रीज़ः) ने मुहम्मद से मेल कर लिया है और उस के पास पैग़ाम भेजा है कि हम कुरैश और गतफ़ाँ के प्रायः रईसों को पकड़ कर तेरे पास लाते हैं ताकि तू उनको मार डाले और हमसे प्रसन्न होवे। मुहम्मद ने इसके उत्तर में कहा कि जिस समय तुम यह काम करोगे मैं तुमसे प्रसन्न हो जाऊँगा और जो बात पहिले ठहरी थी उससे न फिरूँगा। अब बनीक़रीज़ः इस विचार में है कि कुरैश और गतफ़ां के कुछ मनुष्य पकड़ कर मुहम्मद के

हवाले कर दे। अब यदि बनीक़रीज़ः तुममें से किसीको बुलावे तो तुम कदापि न जाना। फिर नईम ग़तफ़ां के लश्कर में गया और जो कुछ कुरैश से कहा था वही उनसे कहा। निदान नईम के छल से बनीक़रीज़ः और कुरैश में फूट पड़गई और वह सब लड़ाई को छोड़कर अपने २ घर को चले गये, मुसलमानों की जान बच गई।

(राय) छल करना और कराना सत्पुरुषों का धर्म नहीं, परन्तु मुहम्मद ने सदा छल कपट किये और अपने शिष्यों को सब प्रकार से छल करने की आज्ञा दी। इसके उपरांत मुहम्मद तीन हज़ार मनुष्य लेकर बनीक़रीज़ः पर चढ़गया और उस के क़िले के सामने जाकर मुहम्मद ने यहूदियों को गाली दी। यहूदी बोले कि ए मुहम्मद तू गाली कभी नहीं दिया करता था, आज क्या हुआ जो तेरे मुँह से गालियाँ निकलती हैं। मुहम्मद बहुत लज्जित हुआ। निदान २० या २५ दिन तक पत्थर और तीरों से लड़ाई होती रही तब यहूदियों ने दीन होकर मुहम्मद से कहा कि हमको छोड़ दे तो अपने बाल बच्चों को लेकर चले जाँय और जो असबाब और हथियार हमारे ऊँटों पर जा सकें ले जाँय। मुहम्मद ने यह न माना तो उन्होंने फिर यह कहा कि हमने अपना माल और असबाब और शस्त्र भी छोड़े, अपने पुत्र कलत्र का हाथ पकड़ कर कहीं को चले जाँय। मुहम्मद ने यह भी न माना। निदान यहूदी तङ्ग होकर क़िले से बाहर निकल आये और अति दीन हुये। मुहम्मद ने उनकी मुश्कें बँधवा कर क़ैद करलिया और अब्दुल्ला बिनसमाल को आज्ञा दी उनके बच्चे और स्त्रियों को क़िले से बाहर निकाल लावे और सब माल और असबाब उनका इकट्ठा करे। १५०० तलवारें, ६००

बख्तर, २००० नेजे और १५०० ढालें और बहुत प्रकार का असबाब और पशु आदि मुसलमानों ने लूट कर इकट्ठा किया और वह संपूर्ण कैदी पुरुष जो कि ४०० और ६०० के बीच में थे मदीने में लाकर क़त्ल कर डाले और मुसलमानों ने उनकी स्त्रियों और बच्चों को आपस में बाँट लिया और बड़ी ख़ुशी मनाई। उनमें से एक स्त्री (रीहाना) नाम उमर की बेटी मुहम्मद को पसन्द आई वह बेनिकाह उसके साथ संग करने लगा।

राय—यहूदियों ने बड़ी दीनता के साथ मुहम्मद से प्रार्थना की कि हम केवल अपने पुत्र कलत्र को लेकर कहीं को चले जाँय इस पर भी उनको न जाने दिया। उनका सम्पूर्ण धन लूटा और उनके स्त्री पुत्रों के रोते हुए उनको जान से मारा। इससे प्रत्यक्ष प्रकट है कि मुहम्मद बड़ा अन्यायी और कठोर चित्त था।

सन् ६ हिजरी का हाल—इस वर्ष में मुहम्मद ने मुसलमानों पर मक्के मदीने की यात्रा आवश्यक ठहराई कि जिसको हज्ज कहते हैं। मक्के शहर में काबा नाम एक मन्दिर मुहम्मद के बड़ों का बनाया हुआ है, उसमें एक काला पत्थर है जिसको (हजरुल असवद) कहते हैं, स्थापित है। मुसलमान वहां जाकर जो कृत्य करते हैं उसका संक्षिप्त हाल यह है। जिस समय काबा मन्दिर दीखता है तो हाथ उठा कर तीन बार अल्लाहोअक़बर इत्यादि कहते हैं और दुआ मांग कर हाथ मुँह पर फेरते हैं, फिर हजरुल असवद की तरफ वह दुआ पढ़ते हुए अर्थात् (प्रार्थना करते हुये) चलते हैं कि ए अल्लाह तू सलामत है और तुझी से है सलामती। ज़िन्दो रख ऐ रब! हमारे साथ सलामती को और दाख़िल कर हमको सलामती घर में इत्यादि। फिर दाहना कन्धा अपना सम्मुख

बायें कोने हजरुल असवद की रखकर और सारा शरीर अपना बाँई तरफ़ छोड़ कर तवाफ़ अर्थात् प्रक्रिमा की इच्छा करके कहते हैं:-ए अल्लाह मैं चाहता हूं (तवाफ़) घर हुरमत वाले तेरे का इत्यादि। फिर सामने हजरुल असवद के आकर कानों तक हाथ उठा कर कहते हैं:—साथ नाम अल्लाह के और अल्लाह बड़ा है और वास्ते अल्लाहके है तारीफ इत्यादि। फिर दोनों हाथ हजरुल असवद पर रख कर बीच में मुँह से बोसा देते हैं और जो भीड़ के कारण बोसा नहीं देसकते तो हाथ को उस पर लगा कर चूमते हैं। यह भी नहीं हो सकता तो लाठी आदि को छुवा कर चूमते हैं। लाठी को छुवाना भी नहीं बनता तो दोनों हाथ उसकी तरफ़ को उठा कर और यह समझ कर कि मानों हाथों से मैंने उसको छूलिया, हाथों को चूमते हैं। फिर चादर को दाहनी बगल के नीचे से निकाल कर बाँये कंधे पर डाल कर कन्धों को हिलाते हुए अकड़ते इतराते शीघ्र २ चलते हैं। जब दरमियान हजरुल असवद और दरवाज़ः काबे के पहुंचते हैं तो कहते हैं-ऐ रब हमारे, दे हमको इस लोक और परलोक में भलाई और बचा हमको नरक से इत्यादि। फिर जब दरवाजे के सामने आते हैं तो कहते हैं—(ए अल्लाह काबा घर तेरा है और यह हरम हुरमत वाला तेरा है इत्यादि) जब रुक्न इराकी के सामने पहुँचते हैं तो यह दुआ पढ़ते हैं (ए अल्लाह मैं पनाह माँगता हूं तुझसे कि मेरे पुत्र कलत्र से विरोध, वैर और दुःखभाव दूर रहें) और जब रुकन शामी के पास पहुंचते हैं तो (ए अल्ला कर तू इसको हज्ज परिपूर्ण इत्यादि)। जब रुकन यमानी पर पहुंचते हैं तो उसको चूमते हैं और जब दरमियान रुकन यमानी और हजरुल असवद के पहुंचते हैं तो यह कहते हैं (ऐ रब! दे हमको

इस लोक और परलोक में भलाई और बचा हमको नरक के दुःख से।) फिर हजरुल असवद को चूमते हैं। यह एक फेर हुआ। इस प्रकार ७ फेर का नाम एक तवाफ़ है।

राय—आश्चर्य है कि मुसलमान लोग हिन्दुओं को बुतपरस्त कहते हैं और अपने कृत्य पर दृष्टि नहीं डालते। बुद्धिमान् विचारें कि हज्ज की यात्रा में हजरुल असवद आदि का चुंबन करना और उसके सामने खड़ा होकर दुआ मांगना, कब्र को ख़ुदा का घर जानना, साक्षात् बुतपरस्ती है। अब मुसलमानों को योग्य है कि अपनी बुतपरस्ती को न छुपावें और हिन्दुओं पर वृथा दूषण न लगावें, क्योंकि हिन्दुओं के यहाँ तो वेद और उपनिषद् आदि प्रामाणिक ग्रन्थों में बुतपरस्ती की विधि कहीं नहीं है और मुसलमानों के क़ुरान और हदीस में हज्ज की विधि स्पष्ट है जो साक्षात् बुतपरस्ती है।

फिर मुक़ाम (इब्राहीम) में जाकर नमाज़ पढ़ते हैं और दुआ माँगते हैं। मुक़ाम इब्राहीम नाम १ पत्थर का है कि उस पर खड़े होकर इब्राहीम ने काबे को बनाया था, उसमें इब्राहीम के चरणों का चिन्ह है और अब वह काबे के घर के आगे एक कोठरी में रक्खा है।

राय—वाह २ जिस पत्थर पर इब्राहीम ने खड़े होकर काबे को बनाया, मुसलमानों ने उसको भी हज्ज की यात्रा में पूजनीय ठहराया।

फिर मुल्तज़म पर छाती, पेट और दाहिना गाल लगाकर दोनों हाथ सर से ऊपर सीधे दीवार पर फैलाकर यह दुआ पढ़ते हैं (ए अल्लाह) न छीने मुझसे वह पदार्थ जो तूने मुझको दिया है। ए अल्लाह मैं खड़ा हूं तेरे दरवाज़े पर, चिपटा हूं तेरी चौखटों पर और उम्मेद रखता हूं तेरी रहमतको इत्यादि।

(मुलतज़म) नाम है एक जगह का कि जो दरवाज़ा काबे और हजरुल असवद के बीच में है।

(राय) मुसलमानों की बुद्धि में खुदा भी असदादिकों की तरह घरद्वार वाला है। फिर कुए ज़मज़म पर आकर काबे की तरफ़ को खड़े होकर तीन बार श्वास लेकर खूब झुककर पानी पीते हैं और वह पानी अपने ऊपर भी डालते हैं और हर श्वास लेने के समय काबे को देखते हैं फिर सफ़ा नाम पर्वत पर चढ़कर काबे के मन्दिर को देखते हैं और उस की तरफ़ मुंह किये हुये हाथ कन्धों तक उठावें, इस प्रकार से कि हथेलियाँ आसमान की तरफ़ हों, बहुत देर तक वहाँ ठहरे रहते हैं और दुआ माँगते हैं।

राय—बार बार काबे को देखना और उसकी तरफ़ को मुंह करके दुआ माँगना प्रत्यक्ष बुतपरस्ती है।

फिर (सफ़ा) नाम पर्वत से उतर कर (मरवह) नाम पर्वतकी तरफ़ चलते हैं। जब वहाँ पहुंचते हैं तो मीनार सब्ज़ तक जो बाईं तरफ़ दीवार काबे की बग़ल में है दौड़ते हैं दूसरी मीनार तक। फिर दूसरी मीनार से साधारण चलकर जब मरवह पर पहुंचते हैं जो कुछ सफ़ा पर किया था वही कृत्य करते हैं यह एक फेर हुआ। फिर सफ़ा की तरफ़ चले आते हैं। इस प्रकार ७ बार फिरते हैं कि सफा से प्रारम्भ और मरवह पर अन्त हो और हरबार दोनों मीनार सब्ज़ के दरमियान दौड़ते हैं और वह दौड़ना घोड़े के दौड़ने से कम और रमल से अधिक होता है। दोनों कन्धोंको हिलाते हुये अकड़ते इतराते और शीघ्र २ चलने को रमल कहते हैं।

(राय) निश्चय है कि जिस समय मुसलमान लोग दोनों कन्धोंको हिलाते हुए अकड़ते, इतराते सफ़ा और मरवह नाम

पर्वत के बीच में दौड़ते होंगे क्या ही अद्भुत रूप प्रकट होता होगा। ऐसी बनावट करना और उसको पुण्यजनक और आवश्यक धर्म जानना बुद्धि की बात नहीं है।

फिर काबे की तरफ़ को मुख करके दाहिनी ओर से सर मुंडवाते हैं और नख मूँछें कतरवाते हैं और स्त्री अपने एक २ अंगुल बाल कतरवाती हैं और बाल दूर करने के समय स्त्री पुरुष यह दुआ पढ़ते हैं-हे अल्ला, ये बाल मेरे तेरे हाथ हैं पस ठहरा मेरे लिये हर बाल के बदले नूर दिन क़यामत के और दूर कर मुझ से हर बाल के बदले एक गुनाह इत्यादि।

राय—बाल मुँडवाकर ख़ुदा पर बड़ा अहसान जतलाते हैं कि एक बाल के बदले एक गुनाह मुआफ़ कराते हैं।

फिर ७ किकरयाँ बाल के चने की बराबर ('मज़दलफ़') से उठाकर 'मिना' में आते हैं और नाली के नशेब में पाँच गज़ या इससे कुछ अधिक अंतर से "जमरतुल अक़बा' के सामने 'मिना' को दाहनी तरफ़ काबे की बाईं तरफ़ छोड़कर दाहने हाथ के अंगूठे और उस के समीप की उंगली से यह किंकरियाँ एक २ खूब ताककर 'जमरतुल अक़बा' पर मारते हैं और किंकरी मारने के समय यह दुआ पढ़ते हैं। किंकरी मारता हूं, मैं साथ में नाम अल्ला के, अल्ला सबसे बड़ा है वास्ते ख़ाक भरने तक शैतान और उसके साथ वालों के इत्यादि—और किंकरी मारने के समय हाथ इस प्रकार ऊंचे करते हैं कि बगल दीखने लगे। 'मज़दलफ़ा' एक जगह है 'अरफ़ात' से तीन कोस मक्के की तरफ़ और (मिना) एक जगह का नाम है। मक्के से तीन कोस, वहाँ मकान और दुकानें बनी हुई हैं। हज्ज के समय में बाज़ार लगता है।

राय—मुसलमानों के पीछे खूब शैतान लगा है। कहीं

किंकरी बिगलवाना है. कहीं उनको घोड़े की संदृश दौड़ाना है जिन बातों को बुद्धिमान् वृथा कर्म जानते हैं, उनको मुसलमान पुण्यजनक मानते हैं।

फिर (मुलतज़िम) पर आकर उससे चिपटते हैं और अपनी छाती और दाहने गाल को कावे की दीवार पर रखकर दाहने हाथको दरवाजे की चौखट की तरफ़ बढ़ाते हैं और परदा कावे का जैसे दास अपने स्वामी का दामन पकड़ कर अपराध क्षमा कराता है, हाथ पकड़ कर रोते हुये अपराध क्षमा कराते हैं। फिर दरवाज़े की चौखट को बोसा देते हैं और दुआ माँगते हैं। फिर हजरुल असवद को चूमते हैं और कावे को देखते हुये अपनी जुदाई पर रोते हुये उलटे पावों फिरते हैं।

राय—यहाँ भी (बुतपरस्ती) तो प्रत्यक्ष ही प्रकट है और कावे का परदा पकड़ कर रोना और अपराध क्षमा कराना मुसलमानों की जड़ता का सूचक है।

फिर (फ़ातमह), (मुहम्मद), (अबूबक्र) और (अली) के जन्म स्थान की ज़ियारत करते हैं, पुनः ग़ारहरा की ज़ियारत करते हैं, वह मक्के से पश्चिम की ओर तीन कोस पर है। उस ग़ार अर्थात् गढ़े में मुहम्मद ने इबादत की थी। फिर ग़ारसौर की ज़ियारत करते हैं, वह मक्के से पश्चिम और दक्षिण की तरफ तीन कोस से अधिक है जिस समय मुहम्मद मक्के से मदीने को भागा था, कुरैश के भय से उस ग़ार में छिपा था इसका संपूर्ण वृत्तान्त पहिले लिखा गया है जहाँ फिर मुहम्मद की स्त्री (ख़दीजा) और मुहम्मद की माँ और मुहम्मद के बहुत भिन्न गढ़े हैं उनकी ज़ियारत करते हैं।

राय-विचार का स्थान है कि फ़ातमह आदि के जन्म को

कुछ कम १३०० वर्ष व्यतीत हुये प्रथम तो उन की जन्म भूमिका पूर्ण निश्चय ही नहीं हो सका और यदि निश्चय भी हुआ तो उनके जन्म स्थान की ज़ियारत करना एक वृथा कर्म है, इससे कोई लाभ नहीं हो सकता। इसी प्रकार (गाहरा) (ग़ारसौर) और (ख़दीज़ा) आदि के गढ़ने के स्थानों की ज़ियारत करना भी वृथा है, बल्कि अनन्यता का विरोधी और प्रत्यक्ष बुतपरस्ती है, बलकि बुतपरस्ती से भी अधम है।

फिर मदीने में पहुंच कर मुहम्मद की क़ब्र की ज़ियारत करते हैं और उसके सिरहाने खड़े होकर ऐसा ध्यान करते हैं कि मुहम्मद क़ब्र में आराम करता है और हमारे आने और ज़ियारत करने को जानता है और सलाम और बातचीत को सुनता है मुहम्मद की ज़ियारत अति आवश्यक है। मुहम्मद ने कहा है (जिसने हज्ज किया घर काबे का और ज़ियारत न की मेरी, निश्चय अन्याय किया उसने मुझ पर। दूसरी हदीस यह है—कहा मुहम्मद ने कि जिसने ज़ियारत की मेरी अवश्य उसके अपराध क्षमा कराऊँगा मैं। मुहम्मद की ज़ियारत के उपरांत अबूबक्र और उमर की क़ब्र की ज़ियारत करते हैं तदनन्तर (बक़ीया) की ज़ियारत करते हैं कि यहाँ मुहम्मद के सहस्रों मित्र गढ़े हैं।

राय—मुहम्मद ने ख़ूब नास्तिकता फैलाई कि मुसलमानों से सहस्रों क़ब्रों को पुजवाया और उन को पूरा (बुतपरस्त) बनाया। ख़ुदा की अनन्यता में विरोध डाला और अपना मतलब निकाला। हज्ज से भी अपनी क़ब्र की यात्रा उत्तम ठहराई कि जो कोई काबे की यात्रा करे और मेरी क़ब्र पर न आवे उस का हज्ज पूर्ण न होगा और जो कोई मेरी क़ब्र की ज़ियारत करेगा मैं उसके अपराध क्षमा कराऊँगा। अब

मुसलमानों को चाहिये कि खुदा से न डरें और जो चाहे सो करे, क्योंकि जिस दिन मुहम्मद की क़ब्र पर जायँगे साफ छूट जायँगे।

इसी वर्ष में मुहम्मद ने ३००० सवार दे कर मुहम्मद इब्न सलमह को भेजा कि मौजा जर्बह में जाकर अचानक क़बीलह क़िलाबकों को मारे। वह दिन को जंगलों में छुप रहता था और रात्रि को चलता था। इसी प्रकार उन पर जा पड़ा और उनके कुछ आदमी मारे। शेष भाग गये। १५० ऊंट और ३००० बकरियाँ लूटकर मदीने में लाया। मुहम्मद ने पाँचवाँ भाग आप लेकर शेष उनको बाँट दिया।

(राय) आज कल भी जो लोग चोरों में थाँगी कहलाते हैं इसी प्रकार घर बैठे अपना भाग लेते हैं।

इसी वर्ष में एक पुरुष ४० सवार लेकर मदीने में आया और मुहम्मद की दूध वाली २० ऊंटनी लूट कर लेगया और कुछ मुसलमान भी मारे, इसलिए मुहम्मद ५०० मनुष्य लेकर उसके पीछे गया, परन्तु वह हाथ न आया।

(राय) इस समय खुदा और जब्रील ने प्रथमसे मुहम्मद को ख़बर क्यों न दी कि अमुक पुरुष तेरी दूध वाली ऊंटनी लूटने और मुसलमानों के मारने को आता है। फिर मुसलमानों का यह विश्वास कि मुहम्मद जो काम करता था खुदा की आज्ञा ही से करता था। इस पर प्रश्न है कि मुहम्मद इस पुरुष के पीछे ५०० मनुष्य लेकर खुदा की आज्ञा से गया था या अपनी इच्छा से यदि खुदा की आज्ञा से गया था तो खुदा की आज्ञा निष्फल हुई और अपनी इच्छा से गया तो मुसलमानों का वह विश्वास कि मुहम्मद जो काम करता था खुदा की आज्ञा ही से करता था, सर्वथा मिथ्या ठहरा।

मुहम्मद ने कुछ फौज़ देकर अली को क़बील: बनीसाद: बिन बक्र के लूटने के लिए भेजा। जब अली उन पर जापड़ा तो वे लोग भाग गये। अली ५०० ऊंट और २००० बकरियां लूट कर मदीने में लाया। इसी साल में मुहम्मद काबे की यात्रा के निमित्त बहुत से मुसलमानों को साथ लेकर मक्के की तरफ़ चला और मक्के के समीप मुक़ाम (हुदैबिया) पर डेरा कराया। कुरैशों ने मुहम्मद को मक्के में आने से रोक दिया तब मुहम्मद ने कुरैश के पास (उसमान) को भेजा कि उन्हें समझादे। जब उसमान के लौट कर आने में देर हुई तो मुसलमानों में प्रसिद्ध होगया कि उसमान मारा गया, इसलिये मुहम्मद क्रोध में आकर कुरैश से लड़ने को तैयार हो गया और सब मुसलमानों को बुला कर पूर्ण प्रतिज्ञा की कि कोई लड़ाई से न हटे। यह बात सुन कर कुरैश मुहम्मद के पास आये और कहा कि तू इस साल काबे की यात्रा न कर अगले वर्ष करले तो हम तुझ से मिलाप करते हैं। मुहम्मद दबा हुआ था इस बात को मान गया और इक़रारनामा लिखने के लिये अली को बुलाकर उससे कहा कि लिख (बिस्मिल्लाहे अररहमानुररहीम) यह वाक्य मुसलमानों में मुहम्मद का नियत किया पुस्तक आदि के प्रारम्भमें लिखा जाता है। सुहैल नामक कुरैशो बोला मैं रहमान को नहीं जानता। यूं लिख (बिस्मक अल्लाहहुम) जैसे तू पहिले लिखा करता था। मुसलमान बोले नहीं, हम बिस्मिल्ला ही लिखेंगे। मुहम्मद नें मुसलमानों से कहा कि जैसे सुहैल कहता है वैसे ही लिखो। निदान सुहैल की इच्छानुसार बिस्मक अल्लाहहुम लिखा गया फिर अली ने मुहम्मद के नाम के साथ (रसूल अल्ल:) शब्द लिखा तो सुहैल ने कहा कि हम उसको खुदा का रसूल नहीं

जानते, यदि हम उसको रसूल अल्ला जानते तो काबे में आने से क्यों रोकते ? पस मुहम्मद इब्न अब्दुल्ला लिखो, रसूल अल्ला शब्द काट दो। मुहम्मद ने कहा मैं तो रसूल अल्ला हूँ परन्तु तुम मुझे नहीं मानते। फिर कहा कि ए अली रसूलअल्ला शब्द काट डाल और मुहम्मद इब्न अबदुल्ला लिख दे। अलीने कहा कि मैं कदापि रसूल अल्ला शब्द न काटूंगा। पस मुहम्मद ने अली के हाथ से कागज़ ले लिया और अपने हाथ से अपने नाम में से रसूल अल्ला शब्द काट डाला और मुहम्मद इब्न अबदुल्ला लिख दिया। इसी प्रकार उस समय सुहेल कुरैशी जो २ कहता था मुहम्मद स्वीकार करता था और अली लिखता था।

(राय) यहाँ से प्रकट है कि मुहम्मद खुदा का रसूल नहीं था यदि रसूल होता तो कुरैशों से भय करके अपने नाम में से रसूलिल्ला शब्द क्यों मिटाता और मुसलमानों का यह कथन कि मुहम्मद लिखा पढ़ा ही न था मिथ्या है, क्योंकि यदि वह लिखा नहीं था तो उसने अपने नाम में से रसूल अल्ला शब्द काट कर उसकी जगह मुहम्मद इब्न अबदुल्ला किस प्रकार लिखदिया।

जो इकरार नामा लिखा गया उसका संक्षेप यह है कि दो वर्ष मुसलमानों और कुरैशों में लड़ाई न होगी और इस वर्ष मुसलमान लोग काबे की यात्रा न करेंगे परन्तु अगले वर्ष में इस नियम पर करें कि तीन दिन मक्के में शस्त्रवस्त्रारोपित करे रहें और चौथे दिन मदीने को चले जावें, मक्के में न रहे जो कोई कुरैश का आदमी मुसलमान हो जावे और मुहम्मद से जामिले उसे मुसलमान फेर दें और जो मुसलमानों का आदमी कुरैश से आमिले तो वह मुसलमानों को न दें। यह

बातें हो रही थी कि अबू जंदल सुहैल का बेटा जो कि पहिले से बाप की कैद में था निकल कर मुसलमानों में जा मिला। सुहैल बोला कि अपने नियमानुसार हमारा आदमी लाओ। मुहम्मद ने कहा कि अभी हम इक़रारनामा लिखने से निश्चिन्त नहीं हुये। हम अबूज़ंदल को न देंगे। फिर उमर खलीफ़ा ने अबूज़ंदल को अलग करके समझाया कि मेरी तलवार अपने हाथ में ले और अपने बाप सुहैल का सर काट डाल। उस ने कहा कि मैं अपने बाप को कदापि न मारूंगा। तदनन्तर सुहैल ने मुहम्मद से कहा कि जो तुम (अबूजंदल) को न फेरोगे तो हम मेल ही न करेंगे। निदान मुहम्मद ने अबूज़ंदल को उस के बाप को देदिया और कुरैश को संधिपत्र देकर मदीने को चले गये।

(राय) इस वृत्तान्त से मुहम्मद और उमर ख़लीफ़ा की शिष्टता हास्यजनक है कि प्रथम तो मुहम्मद ने कुरैश से यह प्रतिज्ञा की कि जो कोई कुरैश का आदमी मुसलमान हो जावे और हम से आमिले तो हम उसको फेर देंगे, फिर इस के विरुद्ध कहा कि हम (अबूजंदल) को न देंगे। उमर ख़लीफ़ा ने अबूजंदल को कैसा अनर्थोपदेश किया कि मेरी तलवार ले और अपने बाप का सिर काट डाल शिष्यों का यह काम नहीं कि अपने वाक्य से फिरें और किसी को खोटा उपदेश करें। कहते हैं कि हुदैबिया में २० दिन तक मुसलमानों का डेरा रहा। बहुधा उन मुसलमानों की स्त्रियों को जो मुहम्मद के साथ मदीने में भाग आये थे-मक्के में रह गई थीं, वे उस समय अपने पुरुषों को समीप देख कर मक्के के बाहर निकल आई ताकि उनके साथ मदीने को चली जावें परन्तु इक़रार नामे के नियमानुसार मुसलमान उन को साथ न लेजा सके।

उन में अली की भी दो स्त्रियें थीं वह भी न रख सका तब लाचार होकर सब ने उन को तलाक़ देकर फेर दिया।

उमर ख़लीफ़ा कहता है कि उस दिन मेरे चित्त में मुहम्मद के नबी होने में संदेह हुआ-और हम सब लोग बड़ा पश्चात्ताप करते हुये मुहम्मद के साथ मदीने को फिरे। मार्ग में मैंने मुहम्मद से कहा कि क्या तू सच्चा पैग़म्बर है। उसने उत्तर दिया कि हाँ। फिर उमर ने कहा कि हमारे मुर्दे स्वर्ग में हैं और हमारे शत्रुओं के नरक में। मुहम्मद ने कहा हां। तब उमर बोला कि फिर क्यों ऐसी अप्रतिष्ठा के साथ संधिपत्र लिखकर फिरे हो। मुहम्मद ने कहा कि खुदा की इच्छा यही थी।

(राय) मुहम्मद साहब तो खुदा की आज्ञा के बिना कोई काम ही नहीं करते थे। अब बतलाइये कि मक्के को जाने के समय खुदा ने यह खबर दी थी कि तू मक्के को जा, हम तेरी इस प्रकार अप्रतिष्ठा करावेंगे। या खुदा की आज्ञा के बिना ही वहां जाकर अपनी अप्रतिष्ठा कराई। जब मुहम्मद मदीने में पहुंचा तब एक पुरुष (अबूनसीर) नामी मक्के से भागकर मुहम्मद के पास आया और मुसलमान होगया। क़ुरैश ने दो आदमी उसके फेर लाने को भेजे। मुहम्मद ने देना न चाहा। क़ुरैशी बोले कि तुम पहिले लिखचुके हो कि क़ुरैश का जो आदमी हमारे पास आवेगा हम उसे फेर देंगे, अब क्यों नहीं फेरते। तब मुहम्मद ने अबूनसीर को उन दोनों के साथ करदिया। मार्ग में उसने एक क़ुरैशी को जान से मार डाला और दूसरे को भगा कर फिर आप मदीने में चला आया। मुहम्मद ने यह वृत्तान्त सुन कर उसे समझा दिया कि तू हमारे पास से चला जा। मक्के से और जो लोग हमारे

पास आना चाहते हैं, वे इकरारनामे के कारण नहीं आसक्ते। उनको भी अपने पास बुलाले, सब मिलकर मार्ग को लूटो। उसने मुहम्मद की सम्मति पाकर ७० मनुष्य अपने साथ कर लिये। वे मक्के के आस पास लूटने लगे। कुरैशों ने इनकी लूट खसोट से अतिदुःखित होकर मुहम्मद से कहला भेजा कि हमने अपने मनुष्य फेरने का नियम छोड़ा, तुम अपने इन लुटेरों को मदीने में बुलालो ताकि हमारे लोग मार्ग में निर्भय रहें। तब मुहम्मद ने उन सबको मदीने में बुला लिया। (राय) यहां मुहम्मद साहब ने अपनी प्रतिज्ञा भंग को और अबूनसार को लूट खसोट करने की आज्ञा दी।

इसी वर्ष में मुहम्मद का यह विचार हुआ कि आस पास के बादशाहों को ख़त लिखकर अपने मत का उपदेश करें। मित्रों ने विनय की कि बादशाह लोग जिस ख़त पर मुहर नहीं होती उसे स्वीकार नहीं करते, इस कारण मुहम्मद ने सोने की अँगूठी मुहर के लिये बनवाकर अपने हाथमें पहरी। यारों ने भी जिस किसी को सामर्थ्य थी अपने २ लिये सोने की अँगूठी बनवाई। फिर जबरील ने आकर मुहम्मद से कहा कि पुरुषों को सोना पहरना हराम है। तब मुहम्मद ने यारों सहित वह अँगूठी हाथ से निकाली और चांदी की अँगूठी बनवाई।

(राय) ए मुसलमानो, तुम जो कहते हो कि मुहम्मद साहब कोई काम खुदा की आज्ञा के बिना करते ही न थे, अब कहो कि सोने की अँगूठी भी खुदा ही की आज्ञानुसार पहरी थी या अपने विचार से। यदि वह भी खुदा ही की आज्ञा थी तो अपने खुदा की बुद्धि को समझलो कि अभी सोने की अँगूठी पहनने को आज्ञा दी, फिर थोड़ी ही देर में उसका

निषेध किया। जो खुदा को अज्ञान से बचाओ तो स्पष्ट कह दो कि मुहम्मद जो काम करता था अपने ही विचार से किया करता था। इस कथन से खुदा तो अज्ञानी न रहेगा, परन्तु मुहम्मद निश्चय विचारशून्य समझा जायगा। वास्तव में तो इस का कारण यह जाना जाता है कि जिन यारों को सोने की अँगूठी बनाने की सामर्थ्य न थी, उन्होंने मुहम्मद से कुछ कहा सुना होगा। यह तो मुहम्मद साहब से भी होसकता था कि सबको सोने की अँगूठियाँ अपने ही पास से बनवादें, परन्तु उन की प्रसन्नता के लिये जबरील का बहाना लेकर चाँदी की अँगूठियें बनवाईं।

पहला ख़त (नजाशी) नाम हबश के बादशाह को जो मुहम्मद की तरफ़ से लिखा गया। अभिप्राय उसका यह था। कि मैं चाहता हूं कि तू इसलाम को स्वीकार कर। पहले इस से मैंने तेरे पास अपने चचा के बेटे और मुसलमानों को भेजा था। अब तुझको योग्य है कि अभिमान छोड़ कर मेरी बातको प्रमाण कर। इस ख़त को देखकर वह बादशाह मुसलमान हो गया और ६० मनुष्य अपने बेटे के साथ करके उसे मुहम्मद के पास को चलता किया, परन्तु मार्ग में वह संपूर्ण कहीं पानी में डूब कर मरगये। एक आदमी भी मुहम्मद के पास न पहुंचा। इससे पहिले एक और ख़त मुहम्मद ने (नजाशी) को लिखा था कि (उम्महबीबः) अबूसफ़याँ की बेटी जो महाजर, (हबशा) की औरत है जिसका पति इसलाम को छोड़ कर ईसाई होगया है, मैं उससे शादी करना चाहता हूँ तू उसे मेरे पास भेज दे। नजाशी ने उस औरत को प्रसन्न करके मुहम्मद के पास भेजदिया था।

(राय.)-मुहम्मद साहब को स्त्रियों से अति अनुराग था।

जहाँ कहीं सुन्दर स्त्री की खबर पाते थे उसको बड़े प्रयत्न से अपने पास बुलाते थे।

दूसरा ख़त (हरकुल) नामी बसरे के हाकिम को भेजा। उसका अभिप्राय यह है कि मैं तुझे इसलाम की तरफ़ बुलाता हूँ तू मुसलमान होजा। यदि तू मुसलमान न होगा तो मैं तेरे देश में जितने खून करूँगा उनका पाप तुझको होगा। कहते हैं कि जब हरकुल ने वह ख़त पढ़ा तो कहा कि कोई आदमी जो कुरैश हो वरन मुसलमान न हो मेरे पास लाओ कि मैं उससे मुहम्मद का हाल पूछूं। अबूसफयाँ जिसने मुहम्मद को उहद की लड़ाई में परास्त किया था उसे बुलाया और पूछा कि मुहम्मद कैसे कुल और वंश का है ? उत्तर—उत्तम वंश का है।

(राय)-मुहम्मद को उत्तम वंश का कहना सर्वथा मिथ्या है, क्योंकि यह (इब्राहीम) के दासी पुत्र (इस्माईल) के वंश में उत्पन्न हुआ है।

२ प्रश्न—किसी अरब के पुरुष ने उससे पहिले नबी होने का दावा किया है या नहीं ? (उत्तर) नहीं किया।

(राय)-यह प्रश्न ही वृथा है, क्यों कि इससे मुहम्मद के सच्चे झूठे नबी होने का निर्णय नहीं होसक्ता, क्यों कि यह आवश्यक नहीं है कि जिस देश में एक प्रकार का झूठ पहले किसी ने नहीं बोला तो उस देश में उस प्रकार का झूठ कोई कभी नहीं बोलेगा। यद्यपि अरब में पहिले किसी ने नबी होनें का दावा नहीं किया था, परन्तु शाम देश के नबियों के दावे की ख़बर तो अरब में सम्यक्प्रकार रहती थी-और मुहम्मद भी सौदागरी के लिये शामदेश में बहुत बार गया था। वहाँ पहिले नबियोंकी प्रतिष्ठाको सुनकर इसने भी यह छल कियाहो।

३ प्रश्न—उसके बाप दादे में से कभी कोई बादशाह हुआ है या नहीं? उत्तर- नहीं हुआ।

(राय)-यह उत्तर मिथ्या है, क्योंकि इब्राहीम के दासी पुत्र इस्माईल के वंश में मुहम्मद से पहिले १२ सरदार जो बादशाहों के समान थे, होचुके हैं। उसी वंशमें मुहम्मद साहब उत्पन्न हुए हैं और यह भी आवश्यक नहीं कि जिसके बड़ों में पहले कोई प्रतिष्ठित न हुआ हो वह अपनी प्रतिष्ठा होने के लिये प्रयत्न ही न करे। सब कोई मरणपर्यन्त अपनी प्रतिष्ठा और धन बढ़ाने में प्रयत्न करता रहता है।

४ प्रश्न—उसकी आज्ञा धनाढ्य लोग मानते हैं या निर्धन? उत्तर-निर्धन लोग उसकी आज्ञा स्वीकार करते हैं। (राय) यह उत्तर भी सत्य नहीं है, क्योंकि अबूबक्र, उसमान, उमर, अमीरहमजः आदि बड़े २ धनाढ्य लोग इसके अनुयायी थे, परन्तु इस से झूठे सच्चे पैगंबर होने का कुछ भी निर्णय नहीं हो सकता। हाँ विद्वान् लोग जिस पुरुष के अनुयायी हों वह विश्वासके योग्य है, सो कोई विद्वान् पुरुष मुहम्मदका अनुयायी नहीं हुआ। मुसलमानोंके कथनानुसार मुहम्मदसे पहिले अरब देश में विद्या ही नहीं थी, बल्कि तीसरी सदी में यूनान देश से विद्या की पुस्तकें अरबी भाषा में उलटी सीधी उल्था की गई और तब कुछ कुछ विद्या का प्रचार हुआ।

५ प्रश्न-उसके अनुयायी प्रतिदिन बढ़ते हैं या घटते हैं? उत्तर-बढ़ते हैं।

(राय)-यह नियम नहीं है कि जिसके अनुयायी बढ़ें वह मत सत्य ही हो। देखो बुद्ध का मत कितने वर्ष पर्यन्त इस प्रकार बढ़ा कि उसकी बराबर पृथ्वी पर और किसी मत के अनुयायी ही न रहे और वह नास्तिक अर्थात ईश्वर और पर-

लोक का न मानने वाला था। फिर अब ईसाई मत भी प्रति-दिन वृद्धि को ही प्राप्त हो रहा है। मुहम्मद मत के बढ़ने का कारण तो वास्तव में यह था कि उसके अनुयायियों को लूट के माल में भाग मिलता था और लूट की स्त्रियाँ हाथ आती थीं।

६ प्रश्न—कोई उसका अनुयायी उसके मत का त्यागता भी है या नहीं? उत्तर नहीं।

(राय) नजाशी के नाम मुहम्मद साहिब का मुहर्रीखत तो यह लिखा गया कि (उम्महबीवः) जिसका ख़ाविन्द इस-लाम को छोड़ कर ईसाई होगया है मैं उससे शादी करना चाहता हूं। अब जो कोई यह कहे कि मुहम्मद का अनुयायी कोई उसके मत को त्यागन नहीं करता, सर्वथा मिथ्या है। बहुत लोग इसलाम को छोड़ कर कुरैशों में जामिले और कोई ईसाई होगय। उनका वर्णन किसी उचित स्थान पर आगे किया जायगा।

७ प्रश्न—मुहम्मद पैगम्बरी दावा करने से पहिले सच्चा मनुष्य प्रसिद्ध था या झूठा?

उत्तर—सच्चा मनुष्य प्रसिद्ध था।

(राय) यह क्या नियम है कि जिस पुरुष ने एक समय पर्यन्त झूठ न बोला हो वह कभी न बोले।

८ प्रश्न—वह कभी प्रतिज्ञा भंग करता है या नहीं?

उत्तर—कभी नहीं।

(राय) हुदेबियः में मुहम्मद ने कुरैशों से प्रथम यह नियम किया कि तुम्हारा जो आदमी हमारे पास आवेगा हम उसे फेर देंगे, फिर अबूजंदल और अबूनसीर के फेरनेसे इन्कार किया।

९ प्रश्न—कभी तुम्हारी और उसकी लड़ाई हुई है या नहीं?

उत्तर—कई बार हुई।

१० प्रश्न—किसकी जय हुई? उत्तर—कभी उसकी और कभी हमारी।

(राय) लड़ाई की हार जीत से पैग़म्बरी का निर्णय नहीं होसक्ता।

११ प्रश्न—क्या उपदेश करता है?

उत्तर—यह कहता है कि एक ख़ुदा को पूजो और किसी को उसका शरीक़ न करो-और बाप दादे की चालको छोड़ो रोज़ा रक्खो, नमाज़ पढ़ो इत्यादि।

(राय) एक ख़ुदा को पूजो, यह केवल कथनमात्र ही है। काबे की यात्रा में प्रत्यक्ष बुतपरस्ती है—और किसीको उसका शरीक़ न करो, यह वचन औरों के लिये है। मुहम्मद ने तो अपने ताईं ख़ुदा का शरीक़ बनाया, बल्कि आपको ख़ुदा से बढ़कर ठहराया, क्योंकि जो कोई ख़ुदा और मुहम्मद पर विश्वास लावेगा वही सच्चा मुसलमान समझा जावेगा और जो कोई केवल ख़ुदा पर विश्वास लावे और मुहम्मदको उस का शरीक़ न करे कदापि मुक्ति न पावेगा। फिरक़लमेमें ख़ुदा के नाम के साथ मुहम्मद ने अपना नाम शरीक़ किया है। जब तक मुहम्मद का नाम न लिया जायगा कलमा पूर्ण ही न होगा।

तदनन्तर (हरक़ल) ने ख़त लाने वाले से कहा कि मैं मुहम्मद पर विश्वास करता, परन्तु रूमियों से भय करता हूं कि वे मुझे मार डालेंगे। हरक़ल के मुसलमान होने या न होने में मुसलमानों के शिष्टों का विरोध है। कोई कहते हैं कि यह मुसलमान नहीं हुआ। सही बुख़ारी से प्रकट है कि इस वृत्तान्त से दो वर्ष के उपरान्त (हरक़ल) ने ग़ज़वः मूतः में

मुसलमानों से लड़ाई की और बहुत मुसलमान मारे। फिर (तबूक) पर लड़ाई की और मुसलमानों का विध्वंस किया। बहुत लोग ऐसा कहते हैं कि वह गुप्त मुसलमान था, रूमियोंके भय से प्रकट न होता था और उसने (तबूक से मुहम्मद को लिखा) कि मैं मुसलमान हूं। मुहम्मद ने कहा कि झूंठ कहता है और वह अपने ईसाईपन पर आरूढ़ है।

(राय) प्रथम तो ग्यारह प्रश्न जो हरकल के नामसे लिखे गये हैं वृथा हैं, क्योंकि इनसे मुहम्मद के नबी होने का कुछ निर्णय नहीं होसक्ता। दूसरे इनके उत्तर (अबूसफ़यां) के कहे हुये प्रतीत नहीं होते, क्योंकि ठीक २ नहीं है जैसा कि हम हर एक उत्तर पर अपनी राय में प्रकट कर चुके हैं। यदि (अबूसफ़यां) मुहम्मद को सब प्रकार अच्छा ही जानता था तो वह मुसलमान क्यों नहीं हुआ। इस से जाना जाता है कि यह सब यारों की बनावट है। मुसलमानों के शिष्टों में से जो कोई यह कहते हैं कि (हरक़ल) गुप्त मुसलमान था, वे अन्यथा वादी हैं। क्योंकि यदि हरक़ल गुप्त मुसलमान होता तो गज़वः मूतः और तबूक़ में मुसलमानों का नाश क्यों करता। जब कि (हरक़ल ने तबूक़) से मुहम्मदको लिखा मैं मुसलमान हूँ तो मुहम्मद ने कहा कि वह झूंठ कहता है और वह अपने ईसाईपन पर आरूढ़ है। अब यदि मुहम्मद का यह अनुमान ठीक है तो जो मुसलमान कहते हैं वे झूंठे हैं और यदि उन मुसलमानों का अनुमान ठीक है तो मुहम्मद साहब का अज्ञान प्रकट है।

ख़त ३ किसरा पर परवेज़ बादशाह फ़ारिसको लिखा कि मैं ख़ुदा का रसूल हूं, तुझे ईमान लाने को ख़त लिखता हूं, मुसलमान होजा तो अच्छा है। नहीं तो मैं जिस प्रकार

(मजूसिकों) का विध्वंस करूंगा उसका पाप तुझ को होगा और तेरी भलाई न होगी। किसरा ने यह ख़त पढ़कर फाड़ डाला—और कहा कि वह मेरे देश में रहता है और मेरा सेवक है, मुझे ऐसा ख़त लिखता है। तदनन्तर (किसरा) ने यवन देश के अधिकारी को जो कि उसकी ओर से था ख़त लिखा कि अरब में मुहम्मद नामी पुरुष जो पैग़म्बरी का दावा करता है उसे पकड़ कर मेरे पास भेजदे, परन्तु उन्हीं दिनों क़िसरा परवेज़ को उसके बेटे ने जान से मार डाला। मुसलमान कहते हैं कि वह मुहम्मद ही के श्राप से मारा गया।

निवेदन—क़िसरा परवेज़ ने जो केवल मुहम्मद साहब का ख़त फ़ाड़ डाला और कुछ उनको बुरा भला कहा वह तो मुहम्मद साहब के श्राप से मरगया, परन्तु हरक़ल ने जो ग़ुज़वः मूतः और तबूक में मुसलमानों का अति विध्वंस किया और क़ुरैशों ने जो मक्के में मुहम्मद साहब को सर्वदा दुःख दिया, जिन के भय से रातों रात जान लेकर मदीने को ओर भागे और जिन लोगों ने (उहूद) की लड़ाई में मुहम्मद का दांत तोड़ा और परास्त किया उनको श्राप से कुछ न होसका। अब मुसलमानों को इसका निर्णय करना चाहिए कि (नजाशी) जो मुहम्मद का ख़त देखते ही मुसलमान होगया उसका बेटा ६० मनुष्यों सहित डूब कर मरगया वह किसका श्राप था।

ख़त ४ (मुक़ब्क़िश) हाक़िम मिसर और कंदरयः को भेजा। जो कुछ हरक़ल को लिखा था वही इसको लिखा। (मुक़ब्क़िश) मुहम्मद के ख़त को पढ़ कर अप्रसन्न नहीं हुआ परन्तु उस पर ईमान भी नहीं लाया और उस ने लड़ाई के भय से ४ सुन्दर स्त्रियाँ, १ ख़च्चर, १ गधा, १ ख़्वाजा, २० जोड़ी

कपड़े और हज़ार मिसकाल सोना मुहम्मद के पास भेंट के लिये भेजा-और यह लिखा कि मैं जानता हूं कि एक पैग़म्बर जगत् में प्रगट होगा, परन्तु वह शाम देश से आवेगा, अरबसे नहीं। मुहम्मद ने उस का तोफ़ह स्वीकार किया।

निवेदन—इस तोफ़े को मुहम्मद साहब स्वीकार क्यों न करते, क्यों कि उन्हें स्त्रियों की समान और कोई वस्तु प्रिय नहीं थी सो मुक़वक़िशने ४ भेज दीं और सवारी को खिच्चर और गधा मिल गया। सोना और कपड़े भी बहुत रुपयों का माल हाथ आया। हे बुद्धिमानों, ध्यान करो कि यदि मुहम्मद ख़ुदा का पैग़म्बर होता तो (मुक़वक़िश) के भेजें हुये सुवर्णादिक को स्वीकार न करता, क्यों कि इस ने उसे ख़ुदा के काम को ख़त लिखा था और उस ने इस के लेख पर कुछ भी ध्यान न किया, बल्कि स्पष्ट लिखदिया कि मैं जानता हूं कि एक पैग़म्बर जगत् में होगा, परन्तु वह शामदेश से आवेगा, अरब से नहीं। इस लेखका अभिप्राय यही है कि तू ख़ुदाका पैग़म्बर नहीं है। मुहम्मद साहब को योग्य था कि जब तक उसे अपने पैग़म्बर होने को निर्णय न करा देते उसका माल न लेते।

ख़त ५—हारिस इब्न अबीसमर गस्सानी को लिखा उसने ख़त को पढ़कर फेंकदिया और कहा कि वह कौन है जो मेरा राज्य छीन लेगा। तदनन्तर आज्ञा दी कि फ़ौज तैयार करो ताकि उस पर चढ़ाई करूं और एक ख़त हरकल को लिखा कि हम तुम मिलकर मुहम्मद को दंड दें। उस का ऐसा उत्तर आया कि लड़ाई तो बंद रही, परन्तु वह मुसलमान न हुआ।

निवेदन—जिस प्रकार (किसरा) परवेज़ ने मुहम्मद साहब को बुरा भला कहा था-वैसा ही इस ने किया, परन्तु यहां मुहम्मद साहब का शाप न आया।

ख़त ८—यमामः के बादशाह को भेजा। उस ने ख़त पढ़ कर कहा कि यदि मुहम्मद अपने देश में से मुझे कुछ बांट दे तो मैं मुसलमान होजाऊँ। यह सुन कर मुहम्मद ने कहा कि मैं उसे अपनी पृथ्वी में से एक वृक्ष भी न दूँगा।

निवेदन—मुहम्मद साहब की हुदैबियः में अति अप्रतिष्ठा हुई थी, इस लिये बादशाहों को ख़त लिखे थे कि यदि यह साथी हो जावें तो क़ुरैश से बदला लें, परन्तु एक (नजाशी) के सिवाय किसी ने ध्यान भी न किया।

ज़हार।

इसी वर्ष में मुसलमानों के लिये मुहम्मदसाहब ने (ज़हार) का प्रायश्चित्त नियत किया। इस से पहिले क़ुरैशों में यह प्रचार था कि जो कोई अपनी स्त्री को किसी कारण से मा बहन कह बैठे फिर वह स्त्री उस के योग्य न रहे। एक दिन (खोला) नाम की एक स्त्री (नमाज़) पढ़ रही थी, (सिजदः) करने के समय उस के खाविंद की दृष्टि उस के शरीर पर पड़ी और वह कामासक्त होगया। जब कि स्त्री नमाज़ पढ़चुकी तो पुरुष ने संग करना चाहा। उस स्त्री ने न माना। उस ने क्रोधित होकर (ज़हार) किया, अर्थात् कहा कि तू मेरी मा है। औरत ने मुहम्मद साहब से निवेदन किया कि मेरे पति ने (ज़हार) किया है, इस विषय में क्या आज्ञा है। मुहम्मदसाहब ने कहा—तू उस के लिये निषिद्ध हुई। औरत ने इसी प्रकार मुहम्मद से तीन बार विनय की और मुहम्मद ने वही उत्तर दिया कि तू उस के लिये निषिद्ध हुई। तब (खोला) अत्यन्त रुदन करके और उदास होकर मुहम्मद से बोली कि मेरे विषय में आप पर (वही) आवेगी। यह सुनते ही मुहम्मद साहब ने उस के ख़ाविंद को बुलाया और कहा कि जबरील आया है और यह आयतें लाया है।

सूरःमजादनः—अर्थात् अल्ला ने उस औरत की बात सुनी जो अपने पति के विषय में तुझ से झगड़ती थी और गिला करती थी अल्लाहके सामने और अल्लाह सुनता था प्रश्न-उत्तर तुम्हारा। निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है। तुम में से जो लोग अपनी औरतों से (ज़हार) करते हैं अर्थात् उनको (मा) कह बैठते हैं वह उन की मा नहीं है। (मा) वही है जिन्होंने उनको जना। निश्चय वह कहते हैं एक बात बुरी और झूंठ अवश्य अल्लः क्षमा करने वाला है। निदान जो लोग अपनी जोरुओं को (मा) कह बैठते हैं और फिर उन से संग किया चाहें तो पहिले एक गुलाम छोड़ें। जब एक दूसरे को हाथ लगावें। यह तुम को उपदेश किया जाता है और जो कुछ तुम करते हो अल्लः जानता है।

जबकि मुहम्मद ने (खौला) के पति से कहा कि प्रथम एक गुलाम छोड़ तब अपनी स्त्री से संग कर। उसने उत्तर दिया कि मुझको गुलाम छोड़ने की शक्ति नहीं है। तब मुहम्मद ने कहा कि दो महीने बराबर (रोज़ः) रख, उसने कहा कि यदि किसी दिन कई बार न खाऊँ तो मेरी आँखों के आगे अँधेरी आजाती है। फिर मुहम्मद ने कहा कि ६० भूखों को खाना खिला कि (ज़हार) का प्रायश्चित्त होजाय। वह बोला कि मुझको यह भी सामर्थ्य नहीं है। तभी कोई पुरुष मुहम्मद की सभा में कई सेर छुहारे लेकर आया। मुहम्मद ने खौला के पति से कहा कि यह छुहारे (ज़हार) के प्रायश्चित्त को लेजा और भूखों को बाँट दे। वह बोला कि मुझ से अधिक भूखा कौन है, आज्ञा हो तो कुछ आप खालूं और कुछ अपने पुत्र कलत्र को खिलाऊं। मुहम्मद ने कहा कि ऐसा ही कर। तब (खौला) के पति ने वह संपूर्ण छुहारे अपने खर्च में किये और उसके (ज़हार) का प्रायश्चित्त होगया।

निवेदन—यह वृत्तान्त भी मुसलमानों के उस कथन को झूंठा करता है कि मुहम्मद साहब जो काम करते थे, खुदाकी आज्ञा ही से करते थे। देखो जबकि ख़ौला ने मुहम्मद साहब से कहा कि मेरे पति ने (ज़हार) किया है इस विषय में क्या आज्ञा है तो मुहम्मद ने कहा कि तू उसके लिये निषिद्ध हुई। (ख़ौला) ने तीन बार यही प्रश्न किया और मुहम्मद ने वही उत्तर दिया कि तू उसके लिये निषिद्ध हुई। यहाँ खुदा की आज्ञा नहीं है। हां मुहम्मद साहिब के पुरुषाओं अर्थात् कुरैशों में यह नियम अवश्य था कि जो कोई अपनी जोरू को किसी प्रकार क्रोध से (मा) बहन कह बैठता था वह उसके लिये निषिद्ध होजाती थी। उस समय मुहम्मद साहब ने (खौला) के प्रश्न पर कुछ विचार न किया और अपने वृद्धों के नियमानुसार आज्ञा दी। जबकि ख़ौला ने बहुत रुदन किया और मुहम्मद साहब ने समझ लिया कि यह अपने पति से जुदा होना नहीं चाहती और यह भी जाना कि कुरैशों का यह नियम है कि जो कोई क्रोध से अपनी जोरूको (मा) बहन कह बैठे वह फिर किसी प्रकार उसके योग्य न रहे अच्छा नहीं है। तुरंत उसके पतिको बुलाकर कहा कि यह आयतें आई हैं तू १ गुलाम छोड़ तब अपनी स्त्री से संग कर या बराबर दो महीने रोजे रख अथवा ६० भूखों को खाना खिला कि (ज़हार) का प्रायश्चित्त होजाय। प्रकट है कि कुरान में (ज़हार) के प्रायश्चित्त निमित्त यही आज्ञा है कि १ गुलाम छोड़े, जिसकी शक्ति न हो तो दो मास बराबर रोज़ा रक्खे और यह भी न होसके तो ६० भूखों को खाना खिला दे। जब कि (खौला) के पति ने इन तीनों बातोंमें से कोई भी स्वीकार न की तब मुहम्मद साहब ने अपने पास से छुहारे देकर आज्ञा

दी कि यह भूखों को बाँट दे (ज़हार) का प्रायश्चित्त होजायगा उसने कहा कि मुझसे अधिक भूखा कौन है ? कहो तो कुछ आप खाऊँ और कुछ अपने स्त्री पुत्रों को दूं। मुहम्मद ने कहा कि यही कर।

अब बुद्धिमान् विचारें छुहारों का भूखों को बाँट देना या आप खालेना खुदा की आज्ञा नहीं है। यदि कुरान ही खुदाकी आज्ञा है तो स्पष्ट है कि मुहम्मद ने खुदा की आज्ञा को उल्लङ्घन करके (खौला) के पति को अपने विचारानुसार आज्ञा दी और वहीं ज़हार के प्रायश्चित्त में प्रचारित की, बल्कि यहाँ मुहम्मद का विचार भी वृथा ही रहा। जो कुछ (ख़ौला) के पति ने कहा वही मुहम्मद को स्वीकार हुआ। वास्तव में बात यह है कि मुहम्मदने स्वेच्छानुकूल स्वदेश भाषा में वाक्यरचना करके उसे खुदा की आज्ञा ठहरा कर अपना मत प्रचारित किया है। उक्त वृत्तांत से प्रकट है कि प्रथम (ख़ौला) से कहा कि तू अपने पति के लिये निषिद्ध हुई। यदि कुरान खुदा की आज्ञा होता और मुहम्मद उसीके आधीन रहता तो स्पष्ट कहता कि अभी इस विषय में कोई आज्ञा नहीं है। फ़िर (खौला) के रुदन करने पर उसके पति से वह वचन कहे जो कुरान में लिखे हैं। जब उसने उन्हें न माना तो अपनी इच्छानुसार उसे छुहारे खुलाकर (ज़हार) का प्रायश्चित्त करा दिया। यहाँ भी यही कहना योग्य था कि खुदाकी आज्ञा यही है और मैं इससे अधिक कुछ नहीं कह सकता।

सन् ७ हिजरी का वर्णन–इस वर्ष में मुहम्मद साहब ने यहूदियों के (खैबर) नाम नगर को लूटने का साहस किया और १४००-मनुष्यों को लूट का लोभी बनाकर (खैबर) के समीप जापड़े। वहाँ के लोग अचेत थे, प्रातःकाल नगरसे

बाहर निकले तो मुसलमानों की सेना देखकर घबराये और किलों में जाछुपे। फिर मुसल्मानों और यहूदियों में लड़ाई हुई, यहूदी निर्बल होगये और मुसलमानों ने उनके ३ क़िले जीते। धन, शस्त्र और वहाँ की स्त्रियाँ इनके हाथ आईं। प्रथम मुहम्मद ने संपूर्ण धनादिक और स्त्रियों में से अपना पाँचवां भाग निकाल कर शेष चार भाग मुसलमानों को बाँट कर आज्ञा दी कि सब अपने २ भाग की वस्तुओं को बेच कर धन संचय करलो। तब उनकी आज्ञानुसार मुसलमानों ने अपने २ भाग की वस्तुओं को खैबर के बाज़ार में बेच कर पूंजी इकट्ठी करली।

इन्हीं दिनों किसी यहूदी स्त्री ने मांस में विष मिला कर मुहम्मद साहब के पास भेजा। जब कि उन्होंने एक दो ग्रास खाया तो प्रकट होगया कि इसमें विष है तो तुरन्त त्याग दिया और जिस २ ने मुहम्मद के साथ वह माँस खाया उस में से कितने ही बीमार हुये और कितने ही मरगये और मुहम्मद ने पछने लगवाकर अपना रुधिर निकलवाया तब आराम हुआ। कोई कहते हैं कि मुहम्मद ने उस स्त्री को मार डाला। कोई कहते हैं कि छोड़दिया, परन्तु मार डालना ही सत्य प्रतीत होता है।

निवेदन—बड़ा आश्चर्य है कि बात २ के लिये मुहम्मद साहब के पास जबरील आता था, परन्तु विष मिले मांस के खाने से पहिले आकर उन्हें क्यों न सुझाया। शायद खुदा को यही स्वीकार था कि उन्हें विष खुलावे और कई मुसलमानों को विष से मारें।

कहते हैं कि मुहम्मद ने (दहियाकलवी) नामी एक मुसलमान से प्रतिज्ञा की थी कि (खैबर) की लूट में अपने

भाग में से मैं तुझे १ स्त्री दूंगा। उस ने उक्त नियमानुसार स्त्री माँगी। मुहम्मद ने कहा कि जो स्त्रियाँ कैद में हैं उन में से जो तुझे पसन्द हो देखकर लेले। वह (सफ़्या नाम) १ सुंदर स्त्री को मुहम्मद के सम्मुख लाया और कहा कि मैंने इसे पसन्द किया है। जब कि मुहम्मद ने उसका अति सुंदर रूप देखा तो कहा कि इसे न ले, इसके बदले और दस स्त्रियाँ लेले। निदान उसे और दस स्त्रियाँ दी गई और सफ़्या पर मुहम्मद साहब आसक्त होगये। जब ख़ैबर से मदीने को फिरे तब मुहम्मद साहब ने उस स्त्री को अपनी सवारी पर कमर के पीछे बिठा कर चादर से छुपा लिया कि कोई मनुष्य न देखे। पहिले दिन जहां विश्राम किया वहां उससे संग करना चाहा, परन्तु उसने स्वीकार न किया तब तो मुहम्मद साहब अतिक्रोधित हुये। फिर दूसरे दिन जहां विश्राम हुआ वहां उससे सङ्ग किया। जब मदीने आये तो उस स्त्री से अति प्रसन्न थे।

(राय) इस वृत्तान्त से मुहम्मद साहब की विषयासक्ति और प्रतिज्ञाभंगता स्पष्ट प्रकट है। हज्जाज नामी एक व्यापारी मक्के का रहने वाला (ख़ैबर) में मुहम्मद साहब के पास आया और मुसलमान होगया। यह बड़ा धनी पुरुष था। उसने मुहम्मद से कहा कि मेरा बहुत धनादि पदार्थ मक्के में मेरी स्त्री के पास है, यदि मक्के के लोग सुनेंगे कि वह मुसलमान होगया तो मुझे कुछ न मिलेगा। यदि आज्ञा हो तो मैं वहां जाकर अपना मुसलमान होना छुपाऊं और छल कपट करके अपना धन ले आऊं। मुहम्मद ने कहा कि अच्छा जो चाहे सो कर। निदान उसने मक्के में जाकर प्रकट किया कि मुहम्मद और उसके साथी ख़ैबर में कैद

होगये और मुसलमानों का माल ख़ैबरियों ने लूटलिया, यह माल बहुत सस्ता बिकेगा। मैं धन लेकर उसके माल लेने को जाता हूँ। इस छल से उसने अपना सम्पूर्ण धन स्त्री तथा और जो कुछ जिस किसी के पास था लेलिया और यहां से चल दिया। स्त्री को क़ुरैशों में छोड़ गया।

निवेदन—मुहम्मद साहब ने हज्जाज को छल कपट करने की आज्ञा दी और उसने क़ुरैशों में जाकर छल कपट किया। कोई शिष्ट पुरुष कदापि ऐसी आज्ञा न देगा।

फ़दक नाम १ स्थान जो ख़ैबर के आस पास है, वहाँ मुहम्मद साहब ने एक मुसलमान को भेजा कि वहां के रहने वालों को डरावे और मुसलमान होने को कहे। इसके जानेपर उन लोगों ने डरकर कहा कि हमारी आधी भूमि मुहम्मद साहब लेलें और आधी हमको छोड़दें, परन्तु हम मुसलमान न होंगे। निदान यही प्रतिज्ञापत्र लिखा गया, परन्तु ख़लीफ़ा (उमर) ने अपने समय में कुछ धन देकर उनकी शेषभूमि भी लेली और बलात्कार उनको वहाँ से निकाल दिया।

निवेदन—मुहम्मद साहबने बलात्कार उन दोनों की आधी भूमि ली और (उमर) ने उन का निवासस्थान भी छुड़ाया। शिष्ट पुरुष किसी को किसी प्रकार दुःख देने की इच्छा कदापि नहीं करते। धर्म का ग्रहण वा त्याग सम्यक् सत्यासत्य के निर्णय कराने से होता है सो मुहम्मद में लेशमात्र भी न था।

इसी सफर में एक रात मुहम्मद साहब सैर करने लगे, जब रात थोड़ी रही तो (बिलाल) से कहा कि हम सब सोते हैं तू पहरा दे, हमें प्रातः काल की नमाज़ के समय जगा देना, ऐसा न हो कि नमाज का समय व्यतीत होजाय। बिलाल पहरा देने को बैठा, परन्तु जब सब सोगये तो वह भी सोगया।

यहाँ तक कि नमाज़ का समय व्यतीत होगया और धूप निकल आई। उस समय मुहम्मद की आँख खुली। पहिले बिलाल को धमकाया और कहा कि जंगल (शैतान) के रहने का स्थान है यहाँ से शीघ्र चलो। फिर वहां से तुरंत चल दिये और आगे जाकर नमाज़ पढ़ी।

निवेदन—शैतान मुहम्मद साहब पर प्रबल रहा तो रहा; परन्तु खुदाने जबरीलके द्वारा पहिलेसे क्यों न कहला भेजा कि यह शैतान के रहने का स्थान है, अथवा उनको नींद ले ही क्यों न जगा दिया। फिर मुहम्मद साहब तो कोई काम खुदा की आज्ञा के बिना करते ही न थे। यहाँ खुदा की आज्ञा से ठहरे थे या अपने अज्ञान से। इसी साल में मुहम्मद साहब ने (अबूबक्र को बनी किलाब) के विध्वंस करने को भेजा। वह वहां गया और उन्हें लूट लाया। एक सुन्दर स्त्री वहाँ से पकड़ी आई, उसको मुहम्मद ने मक्के में भेजकर उस के बदले कितने एक मुसलमानों को जो मक्के में क़ैद थे छुड़ाया। फिर मुहम्मद ने ३० आदमी देकर (बशीर) को फ़दक के आस पास किसी गांव में भेजा कि वहाँ के लोगों को मारे। जब वह वहां गया तो प्रकट हुआ कि वह लोग जंगल को भाग गये। (बशीर) उन के चौपायों को पकड़ कर फिरा। वे लोग यह सुनकर पीछे आये और कितने एक मुसलमानों को मार डाला। (बशीर) भी घायल हुआ और (फ़दक) में रह कर आराम होने पर मदीने में आया।

इन्हीं दिनों मुहम्मद साहब ने (ग़ालिब) नाम बेटे अबूदुल्लहक को १२० मनुष्यों के साथ (बुकअ) ग्राम निवासियों के मारने को भेजा। उस ने वहाँ जाकर कितने एक लोगों को मार डाला और उनकी बहुतसी ऊंट, बकरियाँ लूट कर मदीने में ले आया।

निवेदन—इसी प्रकार मुहम्मद साहब ने बहुत से लोगों को जुदी २ सेना देकर लूट मार के लिये मक्के के आस पास जगह २ को भेजा। सबकी व्याख्या करने से ग्रन्थ बहुत बढ़जायगा इस से वृथा जानकर नहीं लिखते। इन सब वृत्तान्तों से प्रकट है कि मुहम्मद साहब एक लुटेरे थे। लूट के लोभ से बहुत आदमी इन के साथी होगये। जगह २ लूट खसोट करने को जाया करते थे। कहीं प्रबल होते थे, कहीं निर्बल। शिष्टाचार इन में कोई नहीं पाया जाता।

विदित हो कि प्रथम वर्ष में मुहम्मद साहब को (मक्के) की यात्रा करने से कुरैशों ने रोककर निम्नोल्लिखित नियमों के साथ (हुदेबियाह) में इसप्रकार सन्धि थी कि इसवर्ष मुसलमान लोग (काबे) की यात्रा न करने पावेंगे, परन्तु अगले वर्ष में इस नियम से तीन दिन (मक्के) में शस्त्र वस्त्रावेष्टित करके रहें, चौथे दिन मदीने को चले जावें। इस कारण अब मुहम्मद साहब दो सहस्र आदमी साथ लेकर फिर मक्के को चले। जब मक्के के पास पहुंचे तो नियम के विरुद्ध शस्त्र धारण किये और मक्के में घूमकर हज्ज करने लगे। मुहम्मद ने आज्ञा दी कि खूब अकड़ कर, घमंड की चाल, छाती उभार कर, खूब मटकाते हुये मक्के में चलो तो कुरैश लोग हमारा ऐश्वर्य देखें। मुसलमानों ने ऐसा ही किया और घमंड के वचन पुकार २ कर कहने लगे।

मुहम्मद साहब ने यात्राकाल ही में एक मुसलमान को आज्ञा दी कि तू मक्के में जाकर (मैमूनः) नाम स्त्री को मेरी पत्नी बनाने के लिये बुलाला। निदान वह गया और उस स्त्री को बुला लाया। कोई कहते हैं कि मुहम्मद साहब से उसका निकाह नहीं हुआ वरन उस स्त्री ने अपने आप को बिना धन लिये मुहम्मद के अर्पण करदिया।

जब मुहम्मद आदि मुसलमानों को मक्के में ३ दिन व्यतीत होगये तो कुरैशों ने प्रतिज्ञा पत्रके अनुसार कहा कि अब मक्के से वाहर चले जाओ। मुहम्मद ने कहा कि कुछ दिन हमें और भी रहने दो तो हम (मैमूनः) स्त्री के साथ (अरूसी) अर्थात् सुहागरात करें और तुमको भोजन करावें। कुरैश बोले कि हम को तेरा भोजन स्वीकार नहीं। (सादइब्नइबाद) बोला कि मक्के की भूमि तुम्हारे बाप की नहीं है, जब हमारी इच्छा होगा तब जायंगे। निदान कुछ कहा सुनी के उपरान्त मुहम्मद साहब मुसलमानों सहित मक्के से निकल कर मदीनेको चल पड़े और (अम्मारः) नाम की एक स्त्री भी मक्के से निकल आई, जिसको अलीने प्रतिज्ञा के विरुद्ध (फ़ातमः) के साथ सवार करलिया और मदीने में आपहुंचे।

सन् ८ हिजरी का वर्णन—इस वर्ष में मुहम्मद साहब ने ग़ालिब बेटे अबदुल्लः को कदीद ग्रामनिवासियों के मारडालने को भेजा। वह वहाँ पहुंचकर दिनभर जंगलों में छुपा रहा, रात्रि को उन सोते हुओं पर अपने साथियों सहित आ पड़ा और उनके ऊंट चुराकर मदीने को भाग आया। फिर मुहम्मद ने इसी ग़ालिब को फ़दक़ ग्राम की तरफ़ भेजा, वह वहाँ जाकर मार पीट के उपरान्त उन्हें लूट लाया।

निवेदन—जहाँ राज्य का सम्यक् प्रबंध नहीं होता, वहां चोर लुटेरे इसी प्रकार प्रजाको दुःख दिया करते हैं। धन्यवाद है, उस परब्रह्म पुरुषोत्तम जगदीश्वर दयालु का कि जिसने महातेजस्वी न्यायशील गवर्नमेंट को अस्मदादिकों का अधिपति बनाया; जिसके सुराज्य में हमलोग निर्भय होकर आनन्द से सोते हैं और अन्यायकारी लोग यथार्थ दंडको भोगते हैं।

इसी वर्ष में मक्के के रहने वाले मुसलमानों और कुरैशों में

कुछ तकरार हुई। मुसलमानों ने लड़ने के लिये कुरैशों पर प्रतिज्ञा भंग का दोष रक्खा। विदित रहे कि मुहम्मद साहब ही अपने लिखे हुये प्रतिज्ञापत्र के विरुद्ध प्रथम प्रतिज्ञा भंग करचुके थे; परन्तु इधर उधर लूट खसोट और जयलाभ करके अपना बल अधिक देखकर मक्के पर चढ़ने की इच्छा हुई तब कुरैशों को प्रतिज्ञाहानि का दोष लगाकर उनके मार्ग बंद करदिये और अपने सहायकों को इकट्ठा किया और (अबू-कुतादः) को ८०० मनुष्य देकर (कबीलः असनम) की तरफ़ भेज दिया, जिससे मक्के वालों को यह ध्यान रहे कि मुहम्मद साहब की चढ़ाई हम पर नहीं है, वरन् वह (क़बीलः असनम) से लड़ने को जाते हैं। (किसी को धोखा देना कदापि धर्म नहीं है)। फिर मुहम्मद साहब ने १० रमज़ान को अनुमान दश हज़ार मुसलमानों की भीड़ भाड़ से मक्के पर चढ़ाई की। (कदीद) ग्रामपर पहुंच कर मुहम्मद और सब मुसलमानों ने रोज़ा रखना छोड़ दिया; इसलिये कि पेट भरकर खूब लड़े। (अबूकुतादः) भी कबीलः असनम से फिरकर मार्ग में मुहम्मद साहब से आमिला और मक्के वाले उसके निर्णय को नगर से बाहर निकले तो प्रकट हुआ कि मुहम्मद साहब दश हज़ार सेना लेकर चढ़ आये हैं। [अबूसफ़यां] कुरैशी रक्षा चाहने के लिये मुहम्मद साहब के पास आया। मुसलमानों ने उसे घेर लिया और तलवारें निकाल कर शिर पर खड़े होगये और ऊँचे स्वर से कहने लगे कि शीघ्र मुसलमान हो; नहीं तो तुझे मारे डालते हैं। वह परवश होकर मुसलमान होगया। तब मुहम्मद साहब ने [अबूसफ़यां] को अपनी सेना का ऐश्वर्य दिखाकर कहा कि तू मक्के में जाकर कहदे कि जो कोई मुसलमान हो जायगा वह बचेगा, नहीं तो सब मारे जावेंगे।

जब उस ने मक्के में आकर यह बात सुनाई तो कुरैश अपनी निर्बलता के कारण घबराये। फिर मुहम्मद आदि मुसलमान मक्के में घुसगये। कुछ लोगों को जान से मारडाला और फिर यह विज्ञापन दिया कि जो कोई हमारे सन्मुख लड़ने को आवेगा मारा जायगा और जो कोई अपने घर का दरवाज़ा बंद करके बैठ रहेगा वह बचजायगा। निदान उन्होंने अपने दरवाज़े बंद करलिये। फिर मुहम्मद साहब [काबे] में घुस गये और वहां की मूर्त्तियों को तोड़ २ कर फेंकने लगे। उस समय [काबे में] हजरुल असवद के सिवाय ३६० मूर्त्तियाँ थीं। अली और मुहम्मद ने संपूर्ण को तोड़डाला, परन्तु [हजरुल असवद] को न तोड़ा।

निवेदन—मुसलमान लोग आर्यों को [बुतपरस्ती] का दोष देते हैं, परन्तु आर्यों के सत्शास्त्र में बुतपरस्ती की आज्ञा कहीं नहीं; बल्कि वेदादिक से इसका निषेध पाया जाता है। सच बूझिये तो मुसलमान ही पक्के बुतपरस्त हैं; क्योंकि अद्य पर्यन्त यह मंदिर उन मूर्त्तियों सहित मुहम्मद साहब के बाप दादों और उनका पूजनीय रहा। यद्यपि अब कुरैशों के द्वेष से मुहम्मद साहब ने ३६० मूर्त्तियाँ तोड़ डालीं, परन्तु [हजरुल असवद] को छोड़कर बुतपरस्ती यथावस्थित बनी रक्खी। अब तक मुसलमान काबे में जाकर हजरुल असवद की परिक्रमा करते हैं, उस को चूमते हैं और उसके सन्मुख खड़े होकर प्रार्थना मंत्र पढ़ते हैं इत्यादि बातों को महापुराण जानते हैं।

इसके उपरान्त मुहम्मद साहब ने मक्के वालों से कहा कि तुम मुझे क्या जानते हो। उन्होंने भयसे कहा कि भला आदमी जानते हैं। मुहम्मद प्रसन्न होगया और क्षमा किया।

निवेदन—यद्यपि वे लोग इनके बल से भयभीत थे परंतु तब भी नची नहीं कहा।

कहते हैं कि मक्के में जाने से पहिले मुहम्मद ने प्रबल आज्ञा दी थी कि ११ पुरुष और ६ स्त्रियाँ मक्के में हैं, जहाँ कहीं मिलें काबे के भीतर या बाहर तुरन्त मार डाली जावें। एक (अबदुल उज़्ज़ाइब हंज़ल) यह पुरुष पहले मुसलमान होगया था। जब मुहम्मद ने इसे किसी जगह ज़कात लेने को भेजा तो मार्ग में किसी मुसलमान को हनन करके और सब माल (ज़कात) का लेकर भाग आया और मुसलमान मत से फिर कर अपने बाप दादों में मिलगया था। अब मुहम्मद की जय देख कर काबे के परदे से लिपटा हुआ अपनी रक्षा चाहताथा मुहम्मद की आज्ञा से वहीं मारडाला गया।

निवेदन—(सूरः आलेइम्राँ) में खुदा ने कहा है कि जो कोई दाख़िल हुआ काबे में होता है, अपने में-मिथ्या हुआ और मुहम्मद साहब ने ११ पुरुष और ६ स्त्रियों के मार डालने को खुदा की प्रतिज्ञा के विरुद्ध आज्ञा दी।

दूसरा अबदुल्लहसाद—यह पुरुष मुसलमान होकर पहले मुहम्मद साहिब के कुरान का लेखक हुआ था। इसने कहा था कि मुहम्मद को ख़बर भी नहीं है कि मैं कुछ से कुछ कुरान में लिख देता हूं। वह (वही) मेरी है और जो मुहम्मद साहब बतलाते हैं वह उन की (वही) है। इस कारण मुहम्मद साहब इसको मार डालना चाहते थे, परंतु यह (उसमां) की शरणागत होकर बचगया। तीसरा (अक्रमः इब्न अबूज़हल) जिसने पहिले मुहम्मद को अति दुःख दिया था अब इनकी जय देखकर भागगया। उसकी स्त्री चालाकी करके शीघ्र मुसल-

मान होगई और मुहम्मद से अपने पति की रक्षा माँग कर उसे मार्ग से फेर लाई, इस भाँति वह भी बचगया।

चौथा—एक कवि जिस ने मुहम्मद साहब की निन्दा में बहुत कविता की थी, उस समय अपने घर में छुप रहा था। अली ने उसको मार डाला।

पाँचवाँ—एक पुरुष जो पहिले मुसलमान था, फिर उस मत को त्याग कर मक्के में भाग आया था, उस को एक मुसलमान ने मार डाला।

छटा—हारिस तलातल यह मुहम्मद का शत्रु था, इसे भी अली ने मार डाला।

सातवाँ—(काब) बेटा जुबैर का यह प्रसिद्ध कवि था, मुहम्मद की निन्दा लिखा करता था, जान बचाने के लिये मुसलमान होगया तब क्षमा किया गया।

आठवाँ—अबदुल्ला नामी कवि जिस ने मुसलमानों की निन्दा में बहुत कविता की थी वह भी आतुर होकर मुसलमान होगया। इसी प्रकार (वहशी) जिसने अमीर हमजा को को कत्ल किया था और सफवाँ बेटा उमीया का जो मुहम्मद का शत्रु था और जिस पुरुष ने मुहम्मद की बेटी (जैनब) के भाला मारा था इस से उसका गर्भ गिरपड़ा था और वह मरगई थी। ये तीन पुरुष भी दीन होकर मुसलमान हो गये और वे छः औरतें जिन के मार डालने की आज्ञा थी उन में से तीन तो मारी गईं दो मुसलमान होकर बचगईं और एक का पता न लगा।

फिर मुहम्मद ने वलीद के पुत्र ख़ालिद को उज्ज़ा नामी मन्दिर के तोड़ने को भेजा। उस ने जाकर वह मन्दिर तोड़ डाला। कहते हैं कि उस मन्दिर में से एक स्त्री जिसका काला

रङ्ग और बाल बिखरे थे निकली। खालिद ने उसे मार डाला। मुहम्मद ने कहा कि वही उज्जा थी जो शरीर धारण करके निकला। इस से प्रकट है कि मुहम्मद साहब मूर्त्ति को सजीव और शक्तिवाला जानते थे, सर्वथा मिथ्या है। फिर हज़ील का मन्दिर तुड़वाया और जैद के बेटे सआद को भेज कर मनात नामी मन्दिर तुड़वाया। उस में से भी एक स्त्री काले रङ्ग की और बाल बिखेरे हुए रोती निकली। सआद ने उसे मार डाला।

फिर वलीद के बेटे खालिद को ३५०० सवार देकर एक नगर की तरफ़ भेजा। वहाँ के रहने वाले शस्त्र लेकर निकले। जब मुक़ावला हुआ तो उन्होंने कहा कि हम मुसलमान हैं हमें क्यों मारते हो। ख़ालिद ने कहा कि जो तुम मुसलमान हो तो हमारे सन्मुख शस्त्र लेकर क्यों निकले। वे बोले कि हम ने यह जाना कि कोई अरब का रहने वाला शत्रु है, जो मुसलमान नहीं। वास्तव में वे लोग पहले से मुसलमान थे, उन के नगर में मसजिदें मौजूद थीं। परन्तु खालिद ने जो मुहम्मद का एक प्रधान पुरुष था छलयुक्त उन मुसलमानों से कहा कि मैं तुम्हारे मुसलमान होने का जब विश्वास करूँ जो तुम हमारे सामने शस्त्र रख दो। उन्होंने ऐसा ही किया। परन्तु खालिद ने उन की मुश्कें बँधवालीं और सम्पूर्ण को क़त्ल करके उनका माल लूट कर मक्के में चला आया। यहाँ खालिद ने मुसलमानों ही के साथ विश्वासघात और अति अन्याय किया।

मदारिजुन्नुवत के पहिले बाब में है कि मुहम्मद साहब के बिस्तर के पास एक प्याला रक्खा रहता था, उसमें रात को पेशाब किया करते थे। एक रात उसमें पेशाब किया, सुबह को (उम्मेएमन) बाँदी से कहा कि इस पेशाब को

बाहर फेंकदे। वह बोली इस में पेशाब नहीं है, रातको मुझे प्यास लगी थी मैंने उसे पीलिया। मुहम्मद साहब प्रसन्न होकर हँसे और कहा अब तेरे पेट में कभी दर्द न होगा।

दूसरी वार (विरकः) नामक स्त्री ने उनका पेशाब पीलिया उससे भी प्रसन्न हुये और कहा कि तू कभी बीमार न होगी।

एक मुसलमान नाई ने मुहम्मद का रुधिर बीमारी का निकला हुआ पिया, मुहम्मद ने उससे कहा कि अब तू कभी बीमार न होगा।

उहुद की लड़ाई में जब मुहम्मद के घावों से रुधिर बहता था तब एक मुसलमान ने उनके घाव पर मुँह लगाकर रुधिर चूसलिया और वह रुधिर बड़ी प्रीति से पिया। मुहम्मद साहब ने कहा कि यह आदमी बहिश्ती है।

इसी प्रकार मुहम्मद साहब ने किसी रोग के कारण अपना रुधिर निकलवाया था, उसको अबदुल्ला ज़बैर का बेटा पीगया। मुहम्मद ने उससे कहा कि अब तू दोज़ख़ में न जायगा, परन्तु खुदा ने जो कहा है कि मुहम्मद सहित जगत् के सब लोगों को एक बार दोज़ख़ में जाना है, इसकारण थोड़ी देर को तू दोज़ख़ में जायगा।

सन् ९ हिजरी का हाल—मक्के से मदीने में आजाने के अनन्तर इस वर्षमें मुहम्मद साहब अपनी स्त्रियोंसे अप्रसन्न होगये और कसम खाई की एक मास पर्यन्त किसी से संग न करूंगा। मुसलमानों के शिष्टों ने क़सम खाने के चार कारण वर्णन किये हैं-प्रथम यह कि एक दिन अबूबक्र और उमर मुहम्मद साहब के घर आये, उस समय मुहम्मद अति शोकित बैठा था। उमर खलीफ़ा ने कहा कि ऐ हज़रत, मेरी

स्त्री ने मुझ से खाने पीने का खर्च अधिक मांगा था मैंने आज उसे बहुत मारा है। मुहम्मद साहब ने कहा कि देखो यह मेरी स्त्रियां भी इस समय चारों तरफ़ बैठी हैं और माँगती हैं जो मेरे पास नहीं है मैं इन्हें कहाँ से दूं। यह बात सुनकर अबूबक्र उठा और अपनी बेटी आइसः मुहम्मद साहब की स्त्री की गर्दन पर धौल मारी और कहा कि मुहम्मद साहब से यह चीज़ें क्यों माँगती है। फिर (उमर) ने अपनी बेटी (हिफ़जः) की गर्दन पर थप्पड़ लगाया और धमकाया और मुहम्मद साहब स्त्रियों से अप्रसन्न होकर एक मास के लिये घर से निकल गये। दूसरा कारण यह है कि (हजश) की बेटी जैनब के घर में मुहम्मद साहब ने शहद पिया था। आइशः और हिफ़जः ने कहा कि मुहम्मद साहब ने फीकड़ की छाल का रस पिया है, उनके मुँह से दुर्गंध आती है। मुहम्मद ने कहा कि मैंने तो शहद पिया है। अब क़सम खाता हूं कि आगे को कभी शहद भी न पिऊंगा। परन्तु तुम किसी से न कहना कि इस कारण शहद पीने से क़सम खाई है उन स्त्रियों ने इस बात को प्रकट करदिया।

इस कारण मुहम्मद साहब एक मास के लिये स्त्रियों से अप्रसन्न होकर जुदा होगये।

तीसरा कारण यह है कि एक रात मुहम्मद साहब (हिफ़जः) स्त्री के घर में थे और उस रात उम्मी स्त्री की बारी थी। वह किसी कार्य के लिये बाहर गई। मुहम्मद ने (मारयः) लौंडी को बुलाकर उसके साथ संग किया। जब (हिफ़जः) आई तो दरवाजा बंद पाया। वह दरवाजे पर खड़ी रही। जब मुहम्मद ने दरवाजा खोला तो हिफ़ज़ा क्रोधित होकर रोने लगी कि मेरे घर में और मेरे बिस्तर पर तूने बाँदी के

साथ संग क्यों किया। मुहम्मद ने कहा कि आज से क़सम खाता हूं कि इस बाँदी के साथ फिर कभी संग न करूंगा, परंतु तू किसी से यह वृत्तान्त न कहना। (हिफ़ज़ः) ने भेद को न छिपाया और आइसा से कहदिया और चरचा फैलगई इस कारण मुहम्मद साहब स्त्रियों से एक मास के लिये अप्रसन्न होकर पृथक् होगये।

चौथा कारण यह है कि मुहम्मद के पास कहीं से कुछ पदार्थ आया था। उसमें से सब स्त्रियों के पास भाग भेजा। (हजशी) की बेटी जैनब ने अपना भाग न लिया, फेर दिया। मुहम्मद ने जिस को कुछ अधिक करके भेजा तब भी उसने न लिया अतएव सब स्त्रियों से अप्रसन्न होगये।

इसी वर्ष में गज़वः तबूक हुआ। उनका वृत्तान्त यह है कि यहूदियों ने कहा कि यदि मुहम्मद साहब नबी हैं तो उनको रूप में जाना चाहिये।

यह सुनकर मुहम्मद ३०, ४० या ७० हज़ार सेना लेकर चलदिया। जब तबूक ग्राम पर पहुंचे तो यारों से सम्मति चाही कि आगे चलें या न चलें। उमर ख़लीफा बोला कि यदि तुम्हें जाने के लिये खुदा की आज्ञा है तो अवश्य चलो हम सब साथ हैं। मुहम्मद ने कहा कि यदि इस विषय में खुदा की तरफ़ से कोई आज्ञा होती तो मैं तुमसे क्यों पूछता। तब उमर ने कहा कि रूम का लश्कर बहुत है और बड़े वीर हैं और वहां कोई मुसलमान नहीं है जो हमारा सहायक हो लौट चलना चाहिये। तब मुहम्मद अपनी सेना सहित मदीने को लौट आया।

सन् १० हिजरी का हाल—इस वर्ष में मुहम्मद ने ३०० सवार देकर अली को यमन देश की तरफ़ भेजा। वहाँ वलीद

के बेटे ख़ालिद ने पहिले जाकर जो लूट का माल इकट्ठा किया था उसका पांचवाँ भाग लेनेके लिये। जब पाँचवाँ-भाग पृथक् किया गया तो उसमें कई स्त्रियाँ भी जो लूट में मिली थीं हाथ आईं। उन स्त्रियों में से एक खूबसूरत स्त्री पर अली ने हाथ डाला और रात को उससे संग किया। (बरीदः) कहता है कि उस समय मैंने ख़ालिद से कहा कि देख अली ने कैसा बुरा काम किया है। फिर मैंने अली से कहा कि आप ने यह क्या किया जो मुहम्मद साहब के भाग में हाथ डाला। फिर मैंने मदीने में आकर मुहम्मद साहब से कहा। वह सुन कर मुझसे अप्रसन्न हुये और कहा कि अली और मैं एक ही हैं, उससे शत्रुता न रख।

फिर मुहम्मद ने आख़िरी हज्ज किया। चारों तरफ़ ख़बर भेज दी कि आओ हज्ज को चलें और अली को भी यमन से बुला भेजा। निदान २०००० आदमी लेकर हज्ज करने को गये। बड़ी धूमधाम से हज्ज किया।

इसी वर्ष में मुहम्मद का बेटा इब्राहीम १३ वर्ष का होकर मरगया।

सन् ११ हिजरी का वर्णन—जब मुहम्मद साहब इस हज्ज से आये तो बीमार होगये। बीमारी की हालत में यह सम्मति हुई कि रूस को लूटें। जैद के बेटे आसामः को फौज देकर कहा कि रूस देश में जा और उनको लूट और उनके शहरों को जला दे। जब वह तयार हुआ और मदीने से बाहर निकला तो उसकी मा ने कहला भेजा कि मुहम्मद साहब का अन्त समय है तुझे अभी कहीं जाना उचित नहीं इस कारण वह फिर आया।

मुहम्मद साहब का चित्त मरण समय भी लूट खसोट ही में रहा।

इसी वर्ष में मुहम्मद साहब का शरीरपात हुआ। कहते हैं कि, प्रथम उनको बड़ा ज्वर आया, जिस के कारण शरीर ऐसा जलता था कि कोई स्पर्श न करसक्ता था और अति पीड़ा थी। वह वारम्वार करवटें लेतेथे और रोते थे। मुहम्मद ने उस समय कहा कि वह जो मैंने विष खाया था अब उसने मेरी छाती की रगों को तोड़ डाला है।

यह विष उनको एक यहूदी स्त्री ने माँस में मिलाकर खिला दिया था, जिस का वर्णन सन् ७ हिजरी में होचुका है।

निदान इसी रोग में उनका देहान्त हुआ और वह मदीने में गाड़े गये। वहाँ अब तक उन की कब्र है। चालीस वर्ष की अवस्था में मुहम्मद ने पैगम्बर होने का दावा किया, फिर दश वर्ष मक्के में रहे और दश वर्ष मदीने में ६० या ६१ वर्ष की अवस्था में मरगये।

मुहम्मद के मरने पर मक्के, मदीने और ताइफ़ के सिवाय सब मुसलमान अपने मत से फिरगये। अबूबक्र ने उन को तलवार के ज़ोर से मुसलमान किया। तदनन्तर अली और अबूबक्र में राज्य के लिये बड़ा झगड़ा रहा। निदान मुहम्मद के मरणानन्तर अबूबक्र ने दो वर्ष चार महीने फिर उमर ने दश वर्ष छः महीने फिर उसमान ने बारह वर्ष राज्य किया। इन तीनों के उपरांत अली ने चार वर्ष नौ महीने राज्य किया। इस के पश्चात् पाँच महीने अली का पुत्र (हसन) राजा रहा। इस पर सामदेश से (मआविय:) ने चढ़ाई की तब इस ने (मआविय:) से अपने लिये कुछ वार्षिक धन नियत करके

राज्य छोड़ दिया। उसने हुसन को उसकी स्त्री से विष दिला कर मरवा दिया। (मआविया) के मरने पर उसका बेटा (यज़ीद) राजा हुआ, जिसने अली के बेटे (हुसैन) को क़त्ल कराया।

प्रकट हो कि जिस प्रकार मुहम्मद और उस के यारों ने बलात्कार का नियम किया; उसी भाँति जितने मुसलमान बादशाह हुये अपने मत की वृद्धि के लिये प्रजा पर नानाप्रकार के अन्याय करते रहे और यही उनके मत बढ़ने का कारण हुआ।

❀ इतिश्रीमुहम्मदजीवन—चरित्र समाप्त ❀

—०—